अबारा नहितन

(मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबए गीत' कोना बनल
तकर रोचक कथा–संस्मरणात्मक उपन्यास)

केदार नाथ चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

KEDAR NATH CHOUDHARY
Hidden Cottage, Bengali Tola
LaheriaSarai, Darbhanga–846 001
Mob. : 93349 30715

ISBN : 978-81-89450-20-5

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डी-1सी/26बी, जनकपुरी, नई दिल्ली–58
फोनः 93509 51555, 93507 50555

प्रथम संस्करण, 2012

मूल्य
100 टका

आवरण
इंडिका इन्फोमीडिया

मुद्रक
छाबड़ा फाइनआर्ट प्रेस
बवाना, नई दिल्ली

ABAARA NAHITAN
A Maithili Fiction
by Kedar Nath Choudhary



फिल्मक हिरोइन अजरा



प्रस्तुति : केदार नाथ चौधरी द्वारा
ममता गीत
निर्देशक : सी॰ परमानन्द
निर्माता : महंथ मोहन दास
सह निर्माता : उदय भानु सिंह
केदार नाथ चौधरी
संगीत : श्याम शर्मा
गीत : विद्यापति
रवीन्द्र नाथ ठाकुर
कलाकार : अजरा त्रिदीप कुमार उदय भानु सिंह
कमलनाथ सिंह ठाकुर
MAMATA GAVAL GEET
प्रथम सर्बांगीण मिथिला भाषा फिलिम

फिल्मक पोस्टर



केदार नाथ चौधरी



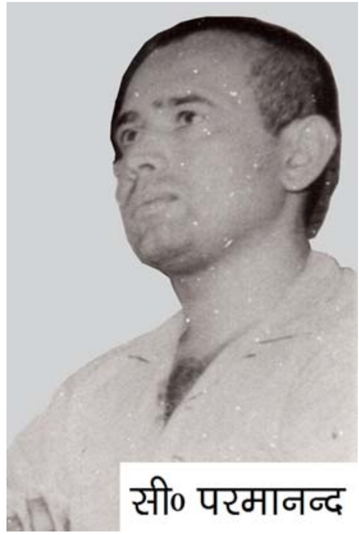
महंथ मदन मोहन दास

फिल्मक निर्माताद्वय



उदय भानु सिंह

फिल्मक सह निर्माता



सी० परमानन्द

फिल्मक निर्देशक



श्याम शर्मा

फिल्मक संगीत निर्देशक



रवीन्द्र नाथ ठाकुर

फिल्मक गीतकार

दुलरुआ रे!

पोथीक शीर्षक पर नजरि पड़िते राजकपूर गबैत स्मृति मे आबि गेला–'आबारा हूँ, गर्दिश में हूँ, आसमान का तारा हूँ।'

पोथी खतम करिते जेना राजकपूरक जगह पर भेल जे एकर लेखक गाब' लागल होथि–'आसमान का तारा हूँ... (धन्य मैथिल बन्धुगण जे) गर्दिश में हूँ (हम तँ ने) आबारा हूँ।'

सिनेमा? मैथिली मे?–नहि छै...छै...नहि छै...हमरा सँ पूछब त' हम निश्चयपूर्वक नहि कहि सकब जे छै की नहि छै। दूचारि टाक नाम मानलहूँ जे अहाँ गना देब, मुदा सिनेमा वस्तु जे थिकै से पुरातात्त्विक वा ऐतिहासिक महत्त्वक नहि थिकै, अपितु निरन्तरते मे एकर उपयोगिता छै। निरन्तरता छै तखने ऐतिहासिकतोक महत्ता छै, ओना किछु नहि। आइ 'सत्य हरिश्चन्द्र' आ कि दादा साहेब फाल्के कैँ कहू के पुछैत जँ हिंदी सिनेमा एते आगाँ नहि आबि गेल रहैत?

सिनेमा कैँ पोथीक पन्ना मे जीवित नहि राखल जा सकैछ। ओकर प्राणवायु पर्दा (Screen) सैह थिकै। आइ पर्दा पर नहि अछि तँ मैथिली सिनेमा नहि अछि। छल कहियो, तँ छलछल करैत आयल छल, पल-पल गलैत मरि गेल। बलपूर्वक आयल छल, छलपूर्वक मारि देल गेलै। आब पर्दापर सँ उतरिक' पोथी मे समटा गेल अछि।

वैह ई पोथी थिक। एहि पोथी मे मैथिलीक पहिल सिनेमाक जन्मकथा सँ ल'क' पोस्टमार्टम रिपोर्ट धरि अछि। आ ई लिखल गेल अछि, ओकर एक निर्माताक कलम सँ। तँ, एहिमे उत्साह अछि, उल्लास अछि, उत्सर्ग अछि, संघर्ष अछि, पुनि निराशा अछि, हताशा अछि, शोक अछि, पलायन अछि। जेना ककरो आखिरी देवे-सेवे पहिल सन्तान होइ आ ओ ठेहुनियेँ दैत चल गेल होई।

घटना पाँच दशक पहिलुक थिक। ओ तारिख छल 23 सितम्बर 1963, जहिया केदार नाथ चौधरी तथा महंथ मदन मोहन दास मैथिली मे सिनेमा बनयबाक उद्देश्य ल'क' मुंबैक ट्रेन पकड़लनि। ओ तिथि एहि देवताक 'इहागच्छ इहतिष्ठ' छल। एकटा तिथि आर अछि–16 मइ 1966, जहिया केदार नाथ बाबू ई मोटा पटकि कलकत्ता एयरपोर्ट सँ बैंकॉक-हांगकांग-टोकियो-होनोलूलू लेल उड़ि गेला। ओ तिथि एहि देवताक 'स्वस्थानं गच्छ'

सिद्ध भेल। ओही अन्तरालक कथा—मुख्यकथा—एहि मे च'-तू-क' कहल भेल अछि; कहल नहि गेल अछि, मानू देखा देल गेल अछि। सिनेमा मे जेना देखै छी, बस तहिना एहू मे अपने देखब। ओ सिनेमा, मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबए गीत' क्यो-क्यो देखने होएब, बेसी गोटे नहिए देखने होयब, मुदा ई पोथी—ओहि फिल्म निर्माण पर आधारित ई पटकथा—जे-जे पढ़ब से अवश्य सिनेमा देखबाक अनुभव प्राप्त करब। केहन सिनेमाक तँ अपन मैथिल भाइ-बन्धुक किरदानी-सिनेमाक। 'वचनवीर क्रिया जीर' समाजक एक-एक घटना कैँ, एक-एक रील कैँ आँखिक सोझाँ झलका देल गेल अछि।

केदार बाबूक उन्यास जे लोकनि पढ़ने छी, से सबहु हिनक चुम्बकीय लेखन मे चिपकल होयबे करब। एहि संस्मरण कैँ जे छूअब, की मजाल जे मन कैँ आन दिस मोड़ि लेब? लेखक कहैत छथि जे एहि मे लिखल एक-एक बात सत्य अछि, अर्थात् ई हुनक अपन जीवनक यथार्थ थिकनि। यथार्थ कठोर अछि। स्थिति रहौ बरु केहनो कठोर, वर्णन शैलीक मधुरता मुदा एकरा अतिशय मनलग्गू उपन्यास बना देने अछि।

अछि तँ एहि मे फिल्मनिर्माणक गाथा-कथा, मुदा ततबे नहि अछि। ई एक अलबम थिक, जाहि मे लेखक अपन आ अपन गाम-घर तथा बाहर मे बसल समाजक भाँति-भाँतिक श्वेत-श्याम एवं रंगीन चित्र खीचि, सैंतिक' सजा देने छथि। एहि मे लेखकक अपन अवसाद, स्वाधीनताक सद्यः बादक सामाजिक उथल-पुथल, मिथिला राज्य आन्दोलनक पहिल सुनगुनी, राजनीतिक प्रति लोकक रुझान, भ्रष्टाचारक हुलकी, चीनी आक्रमणक त्रासदी, नेहरूक प्रति देश मे उपजल आक्रोश, पाकिस्तानी आक्रमण, भारतक स्वाभिमानक पुनर्वापसी आदि कतिपय ऐतिहासिक घटना-दुर्घटनाक भोगल-जोगल साक्ष्यो अछि तँ गाम-घरक आपसी वैमनस्य, कुटचालि, नौजवान मे नशापानक बढ़ैत लति आ बिगड़ैत स्वभावक प्रभावँ टुटैत गामक फुटैत लोकक कर्कश निनादो अछि। ततबे नहि, मुंबै-कोलकाताक प्रवासी मैथिल समाजक मिथिला-मैथिलीक प्रति दृष्टिकोण, मित्रक खीरा-चरित्र, पीड़ादायक स्वार्थ-परार्थक यथार्थ दर्पणो अछि तँ किछु नवयुवक मे मातृभाषा-प्रेम आ लुप्तप्राय अपन लिपिक उत्कर्ष लेल मानस मे घुरिआइत विभिन्न योजना आ तकरा साकार करबाक हेतु कछमछियो अछि। ठाम-ठाम अनेक ख्यात-अल्पज्ञात (जनकवि यात्री, फणीश्वरनाथ रेणु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ए.सी. दीपक, बाबू साहेब चौधरी, परमानन्द चौधरी, उदयभानु सिंह, कमलनाथ सिंह ठाकुर प्रभृति) कवि-साहित्यकार, सेनानी-आन्दोलनी, साहित्य-राजनीतिरसी सँ सेहो भेटघाँट कराओल गेल अछि। जँ अनेको मैथिल पूत-कृत प्रभूत अन्धकार भेटत तँ जन्मना अमैथिल मुदा मनसा-वाचा-कर्मणा सुच्चा मैथिल सपूत महंथ मदन मोहन दासक निःस्वार्थ प्रथम प्रभातक प्रियगर प्रकाश-सन लागत।

एकर मूल कथावस्तु (फिल्मनिर्माण-गाथा) कैँ खोलिक' राखब अपनेक उत्सुकता कैँ नष्ट करब होयत से हमर अभीष्ट नहि। हम तँ एहि मे आयल किछु पात्रक नाम टा ल' रहल छी, जेना—कौआली बाबू, टने झा, फुद्दी झा, टमाटर जी, घटोत्कच, भोगल बाबू,

बिच्छूजी, टंचजी आब अपने हिनका सभक चरित्रक कल्पना करू आ पोथीमे हिनकालोकनि सँ भेट करू, परिचय कँ प्रगाढ़ करू। कोलकाताक प्रसंग अयला पर ओहि ठामक मैथिल समाजक रत्न-बन्धु-विभूति-सखा-बिड़लाक दर्शन कराओल गेल अछि। के थिका ई लोकनि? हमरा सन अल्पसम्पर्की सेहो जखन अनुमान क' सकैत छथि तँ ओहि ठाम जे रसल-बसल छथि, तनिका सँ की नुकायल छनि?

'ममता गाबए गीत'क गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर रहथि, जे पछाति वैह, बहुत बाद मे, जेना-तेना फिल्म रिलीज करौलनि। रवीन्द्रजीक प्रति हमर हृदय मे अथाह आदर। हुनक अलौकिक प्रतिभाक बखान करबा लेल हमरा लग उपयुक्त शब्द नहि छल। केदार बाबूक उद्‌गार पढ़ि भेल–भेटि गेल। जे हम कह' चाहैत छलहुँ से यैह थिक। हम चाहितो जे बात नहि लिखि सकलहुँ, से ई एक छोट-सन पारा मे राखि देलनि अछि। देखल जाए– "उपनयनक समयमे ढोल-पिपहीक धमगज्जर ध्वनिमे लपेटल गीत, चतुर्थी रातिक कनियाँ-वरक प्रथम मिलन मे लजायल-सकुचायल सिहरैत गीत, दुरागमनक समयमे बेटीक नोरमे भीजल गीत, गामक छौंड़ीक काँख तर दाबल छिट्टा-खुरपीक खनखन गीत। सभ गीत मे मिथिलाक माटिक अनुपम सुगन्धि! उजड़ल कोठली गमकि उठल।"

केदार बाबूक साहित्यिकता कते उच्च कोटिक छनि, से एतबो सँ बुझल जा सकैछ। एहन प्रसंग आरो अछि, अनेक अछि।

भनहि तहिया हिनका सुन' पड़ल छलनि 'अबारा नहितन!' आइ मानल जे दुनू निर्माता अप्पन हाथ सँ ई पहिल मैथिली फिल्म पर्दा पर नहि चढ़ा सकलाह, मुदा एकर पाछाँ जे अपन जीवन आ धन सम्पदा कँ दाव पर लगा देने रहथि, ताहि केदार बाबू आ हुनक मदन भाइक प्रति एक्के टा भाव प्रत्येक प्रबुद्ध जनक हृदय मे उमड़ि उठत–'दुलरुआ रे!'

मैथिलीक एहि दुलरुआक हार्दिक अभिनन्दन!

अपना कँ चिन्हबा लेल, पोथी कँ पढ़बा लेल, अपने सँ निवेदन!

(भीमनाथ झा)

दरभंगा
मातृनवमी
9.10.2012

1

हम आ हमर मित्र शिवकांत दरभंगाक नौर्थब्रुक जिला स्कूल मे संगे पढ़ैत रही। एकहि होस्टल मे अठमा सँ मैट्रिक तक रहलहुँ। आन-आन छात्र सदृश शिवकांतक संग हमर मित्रता साधारणे पयदान पर छल। मुदा हमर मित्रता प्रगाढ़ तखन भेल छल जखन हम दुनू संगहि मैट्रिकक परीक्षा मे फेल भेल रही। अल्प वयसक भावुकताक संग परीक्षा मे असफलताक असाध्य पीड़ा सँ मर्माहत दुनू मित्र आत्महत्या करबाक निश्चय केलहुँ। एकमी पुल लग बागमती नदीक वेग प्रचंड रहैत छैक। पुल सँ नदी मे कूदि जयबा मे सुगमता होयत। सही स्थानक चयन केलाक बाद अपन-अपन दारुण दुख सँ मुक्ति पयबाक निमित्ते दुनू मित्र गंतव्य स्थान लेल प्रस्थान कयने रही।

लहेरियासराय टॉवरक लगीचे ढनजी महाराजक भोजनालय सँ शुद्ध देशी घी मे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धि चारूकात पसरल रहैक। ओहि अपूर्व गमकक कारणे दुनू मित्रक एकलव्य तंद्रा मे व्यवधान पड़ि गेल। आँखिक भाषाक माध्यमे दुनू मित्र वार्तालाप केलहुँ—मरबाक त' अछिए। की हर्ज, आत्महत्या सँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा ली!

भोजनालय मे पहिने सँ बैसल रहथि हमर छोटका कका, बाबू शारदा कांत चौधरी उर्फ कौआली बाबू। ओ आलू-कदीमाक डालना मे कचौड़ी कँ बोरि मुँह मे पहुँचा रहल छलाह। तखने हुनकर अर्धमुदित आँखिक पलसँ छिटकल नजरि हमरा दुनू मित्र पर पड़लनि। ओ अपन मुँहक कौर कँ यत्नपूर्वक घोंटैत बजला—केदार भैया! आबह, आबह। दुनू मित्र हमरे लग मे आबिक' बैसह।

कका होथि आ कि भतीजा, अपना गाम मे सभहक लेल हमर नाम छल केदार भैया। दुनू मित्र अलग-अलग कुर्सी पर कके लग मे बैसलहुँ। कका एकटा इमरती साइजक जिलेबी कँ मुँह मे चोभैत चटपटाइत कहलनि—सुनलहुँ जे तोँ दुनू मित्र मैट्रिकक परीक्षा मे अलगे-चित भ' चुकलएँ। मुदा अहि छोट बात लेल अधिक दुख आ कि चिंता करबाक प्रयोजन नहि। हउ, हमरा दिश ताक' ने! हम मैट्रिकक परीक्षा

मे तीन-तीन बेर फेल कयने छी। पहिल बेर एक विषय मे, दोसर बेर दू विषय मे आ तेसर बेर एक विषय छोड़ि सभ विषय मे जखन फेल केने रही तखन हमर माथ ठनकल छल। कारण हमरा अपन योग्यता पर कहियो मिसिओ भरि संशय नहि रहल। लार्ड कर्नवालिस सँ ल'क' लेडी माउन्टबेटन तकक हिज्जे संग नाम रटनिहार भुसकौलक अलंकार सँ कोना अलंकृत भ' सकैत छल? तखन फेल करबा मे निश्चिते की त' प्रेतबाधा छल अथवा कापी जाँच केनिहारक खचरपाना।

कका एक घोंट जल पीबि फेर कहब शुरू केलनि—ई कहब सर्वथा अनुचिते होयत जे विद्यार्थीक फेल करब हुनक मौलिक अधिकार थिक। मुदा जतय परिश्रमक फल भेटब संदिग्ध होअय ओतय सचेत भ' जेबाक चाही। बहुतो किस्मक काज छैक जाहि मे पढ़ब एकटा काजे भेल। मुदा जाहि काज मे सफलता भेटब कठिन होअय ताहि काज कँ अविलम्ब त्यागि दोसर काज पकड़ि ली सैह भेल विदुर नीति। जे बुद्धि पढ़ब मे खर्च होइत छैक तकर अदहो जँ आन काज मे खर्च करी त' सफलताक संग चैनक जिनगी अबस्से भेटि जाइत छैक। बुझि लए जे ई हमर अपन निचोड़ल अनुभव अछि।

जिलेबी-कचौड़ीक पारस हमरो दुनू मित्रक आगाँ मे आबि चुकल छल। मुदा जे स्वाद ककाक निचोड़ल अनुभव सँ भेटि रहल छल से जिलेबी-कचौड़ी मे कत' सँ भेटितए? ककाक वाणी संजीवनीक काज क' रहल छल। पीड़ा सँ संतप्त माथक कष्ट कँ हरि रहल छल। आत्महत्या नहि कर' पड़त तकर बादो जीवनक गाड़ी आगाँ बढ़िते रहत, से ककाक उपदेश सँ यथार्थ बनि रहल छल। परीक्षा मे असफल रहलाक बादो जीवन मे मधु छैक, वैभव छैक, आकांक्षा छैक तकर ज्ञान कके सँ भेटि रहल छल। ताहि घड़ी मे तीव्र इच्छा भेल छल जे हाथ धो क' ककाक चरणधूलि माथ मे हँसोथि ली। मुदा अपना कँ कन्ट्रोल मे राखि ककाक सारगर्भित उपदेश कँ श्रवण करैत, जिलेबी-कचौड़ी खाइत रहलहुँ।

मात्र पाँच बर्ख पूर्व भारत स्वतंत्र भेल रहै। संविधान तैयार भ' गेल रहै आ 26 जनवरी 1950 ई. कँ लागुओ भ' गेल छलै। 1952 ई. मे देशक पहिल चुनाव होम' जा रहल छलै। स्वतंत्रता संग्राम मे अपन सर्वस्व न्योछाबर कर'बला कँ बिसरि जाउ। बुद्धि आ विवेक सँ अपाहिज जे स्वतंत्रता संग्राम मे एकटा कटकियो ने घुसकौने छल, मुदा धूर्त छल आ गिद्धदृष्टि रखैत छल ताहि तरहक मनुक्खक एक नव फसिल प्रगट भ' चुनावक दंगल मे कूद-फान क' रहल छल। ओही तरहक मनुक्खक जमात मे कौआली बाबू अर्थात् हमर छोटका कका सेहो रहथि। टिकट बँटबाराक हूलि-मालि मे कका एखन दरंभगा आयल छलाह। ओ विधान-सभाक चुनाव लड़ता तकर भीष्म

प्रतिज्ञा क’ चुकल रहथि। चुनाव मे अन्दाजन तीन-चारि हजार रुपैया खर्च हेतै तकर अनुमान क’ कका अपन तीन बीघा मरौसी खेत बेचि एखन जिलेबी-कचौड़ीक भक्षण क’ रहल छलाह।

कका खायब समाप्त केलनि, हाथ धोलनि आ ढेकार करैत फेर सँ हमरे सभहक लगीच मे बैसैत कहब शुरू केलनि—पढ़ब छोड़ि हम राजनीति मे सक्रिय भ’ गेलहुँ अछि। बियालिसक मूभमेन्टक ‘करो या मरो’ नामक आन्दोलन मे हमहीं जिलाक नेता रही। रेलक पटरी उखाड़’ मे, टेलीफोनक तार तोड़ै मे आ थाना जरबै लेल हसेरी जुटबै मे, सभ काज मे हमहीं आगाँ रहलहुँए। क्षेत्रीय काँग्रेसी मे एखन हमर नाम सभ सँ ऊपर अछि। मुदा हमर रस्ताक ढेंग बनि गेलए फकिरनाक छोटका नेना कंटिरबा। बियालिसक मूभमेन्ट मे थानाक दरोगा आ सिपाही राइफल फायर करैत जखन हमरा सभ कैँ खिहारलक तखन पूरा हसेरी संगे हमसभ तूफान मेलक गतिसँ पड़ायल रही। ओही पड़ेबा काल कंटिरबाक कमीज पनबाड़ीक टाट मे फँसि गेल रहै आ ओ पकड़ल गेल रहए। ओ भरि इच्छा मारि खेलक आ तीन महिना जहल मे पानि भरलक। वैह मारि खायब आ जहल जायब एखन ओकरा लेल वरदान बनि गेलैए। कंटिरबा स्वतंत्रता सेनानी बनि गेलए। टिकट प्रत्याशीक पाँत मे ओ हमरा सँ एक डेग आगाँ भ’ गेलए। कंटिरबा लोअर फेल आ हम मैट्रिक फेल, आब तोहीं दुनू मित्र पंचैती कर’ जे हमरा दुनू मे योग्य कंडिडेट के भेल?

ओहि घड़ी मे छोटका कका हमरा दुनू मित्रक लेल साधारण मनुक्ख नहि रहथि। ओ संसारक सभ सँ पैघ विद्वान एवं बुधियार मनुक्ख रहथि। मैट्रिकक परीक्षा मे कइएक बेर गुड़कुनियाँ कटलाक बादो एहन विशाल कल्पनाक पाँखि पर आरूढ़ भेल गगन मे स्वछंद भ’ हमर कका उड़ि रहल छलाह से की छोट बात भेलै? कथमपि नहि। हुनकर दप-दप उज्जर खाधीक धोती-कुर्ता आ माथ पर बाम कात झुकल गाँधी टोपी हुनकर छवि कैँ अत्यन्त दिव्यमान बना देने छल। ककाक एखुनका प्रश्न मे नुकायल जिज्ञासाक पूर्ति करब व्यर्थ छल। कारण, हम आ हमर मित्र शिवकांत हुनक विचार सँ प्रेरणा ग्रहण क’ आँखिए सँ अपन-अपन कृतज्ञता अर्पण क’ रहल छलहुँ।

कका जोश मे रहथि, कहलनि—कंटिरबा भाषण कर’ काल तोतराइत अछि। ओकर चरित्रो कमजोर छैक। जिला काँग्रेसक फंड मे नहि, जिला मंत्रीक जेब मे एक हजार टाकाक घूस द’ क’ ओ अपन नाम राजनीतिक कैदी मे दर्ज करा लेलकए, जकर खबरि आइए हमरा भेटलए। हम ओकरा छोड़बै नहि, पटना आ दिल्ली तक खेहारबै। तकर बादो जँ जहल जयबाक पुआइन्ट पर हमरा कहूँ पछाड़ि देलक त’ हम विरोधी पार्टीक कंडिडेट बनि ओकरा गरदा फाँक’ लेल विवश क’ देबै।

ककका काउन्टर पर जा क’ तीन व्यक्तिक बिल चुकता केलनि। फेर भोजनालय सँ बाहर आबि फुसफुसाइत कहलनि—तौँ दुनू हमरा लेल कनिकबो चिंता नहि करिह’। सुस्लीस्ट बला आयल छल। ओकरा सभ कैँ हमरा सँ अधिक उमदा कन्डिडेट कत’ भेटतै? ओ सभ नेहोरा केलकए जे जोड़ा बड़दक आश त्यागू आ झोपड़ी छापसँ चुनाव लड़ू। हम एखन इतह-तितह मे छी। हम राजनीति मे समर्पित भ’ चुकल छी। हमर त्याग ककरो सँ कम नहि अछि। तखन देखहक जे ऊँट कोन करोट बैसैत छैक! कतबो खिचा-तानी हेतै, एम.एल.ए. हमहीं बनब, तकर भविष्यवाणी राघोपुरक पुरोहित क’ चुकलए। अच्छे, तौँ दुनू मित्र अपन-अपन गाम जाह। हमरा एखन काँग्रेस ऑफिसक जरूरी मीटिंग मे जेबाक अछि।

हम आ शिवकांत छोटका ककाक आचरण एवं अनुपम व्यक्तित्व सँ बहुत प्रभावित भ’ गेल रही। हुनकर चरणधूलि कैँ ललाट पर हँसोथैत दुनू मित्र स्टेशन दिश बिदा भेलहुँ।

हमर आ शिवकांतक गाम अगले-बगल आ नजदीकक टीशन भेल सकरी। सकरी पहुँचैत-पहुँचैत दुनू मित्रक चिंताक महाजाल फेर सँ पसरि गेल रहए। घनघोर चिंता मे उब-डुब करैत दुनू मित्र टीशनक एक खाली ब्रेंच पर मूड़ी गोंति गुमसुम बैसि रहलहुँ। चिंता कथीक छल से सुनिए लिअ।

मैट्रिकक परीक्षा समाप्त भेला पर होस्टलक सहपाठी मे एक तरहक जोश भरि गेल रहै। स्कूलक अनुशासन सँ छुट्टी। चोरा क’ सिनेमा देखैक दंड भेल मास्टरक कनैठी आ थापड़, से आब नहि पड़त। अपन गार्जियन अपने बनब। कालेज मे प्रवेश करब। अनंत आकाश मे उड़ब। किछु नव बात हेबाक चाही। नव बात ताकल गेल। सभहक सहमति सेहो कायम भेल। ओहि समयक सभ सँ पैघ क्रांतिकारी विचार सँ एकमत होइत तमाम सहपाठी सैलून मे जा क’ टीक कटौने छल। सहपाठिएक झुंड मे हम आ शिवकांत सेहो छलहुँ। उचक्काक पाँत मे मिझर भेल दुनू मित्र अपन-अपन टीक कटा लेने रही।

सैलुन मे शिवकांत जखन पछुआरक ऐना मे उगल अपन टिककट्टा आकृति कैँ सामनेबला ऐना मे देखलनि तखने हुनकर होश उधिया गेल रहनि, हुनक कांति श्रीविहिन भ’ गेल रहनि आ पूज्य पिताक छवि नयनक सोझाँ मे नाच’ लागल रहनि। मुदा हजामक बोल-भरोस आ टिटकारी सँ हुनक भय झँपा गेल रहनि। ओ संतोख केने रहथि। मुदा एखन हुनक नुकायल भय समक्ष आबि तांडवे शुरू क’ देने छलनि। परीक्षा मे फेल आ ऊपर सँ काटल टीक। शिवकांतक आँखि मे नोर डबडबा गेलनि। हिचुकैत ओ कहलनि—मित्र, अहाँ गाम जाउ। अहाँक गामक लोक पढ़ल-लिखल आ

एडभान्स छथि। अहाँक काटल टीक पचि जायत। मुदा हमर नसीब दोसर किश्मक अछि। हमर फेलक समाचार हमर पिता लग अबस्से पहुँचि गेल हैत। ओ अपन वैद्यनत्था बेंत कैँ पिजौने तैयारे हेताह। हमर कटलाहा टीकबला मुखाकृति देखि हुनकर रंजक पारावार नहि रहतनि। हमरा पीठ पर हुनक बेंतक प्रहार पड़बेटा करत आ से ककरा सोझाँ मे... अरौ बाप रौ बाप!

बजैत-बजैत शिवकांत हबोढकार कान' लगलाह। हुनकर बाजब 'से ककरा सोझाँ मे' तकर विशेष अर्थ छलै। सही मे शिवकांतक विपत्ति हमरा सँ जबर्दस्त छलनि। होस्टलक एक्का-दुक्का छात्रक विआह भेल रहै। ओहने भाग्यशाली छात्र मे शिवकांत सेहो रहथि। परीक्षा सँ आठ महिना पहिने हुनकर विआह भेल रहनि आ लगले दुरागमन सेहो भ' गेल छलनि। वीर अभिमन्यु वयसक शिवकांत आ तेरहम बर्खक हुनकर उत्तरा। पुस्तकक प्रत्येक पन्ना मे मनमोहनीक छवि। शिवकांत की करितथि? हुनकर सभ अभिलाषा प्रियतमाक कल्पना मे डुबल रहलनि। एकर प्रबल सम्भावना त' रहबे करनि जे हुनका फेल होयब' मे हुनकर कनियाँक सिनेह आ सिनेह सँ चुबैत माधुर्य सानल रहनि। गाम पहुँचला पर शिवकांतक पिता हुनकर अर्द्धांगिनीक सोझँ मे हुनका डेंगेथिन। की पिताक देल दंड सँ उपजल अपमान कैँ ओ घोंटि पौताह? हे राम! अइ सँ बेशी नीक होइतैक जे शिवकांत वागमती नदी मे डुबि क' मरि गेल रहितथि।

शिवकांतक पीड़ा हुनक आँखिक नीर बनि धाराप्रवाह बहि रहल छलनि। हमहूँ अपन मित्रक दुखक कारणे असहनीय कष्ट मे छलहुँ। ओहि दुखक निवारण लेल कतौ सँ कोनो मदतिक उम्मीद नहि। हम मनहिमन अपन गामक संकटमोचन पर ध्यान केन्द्रित केलहुँ—'संकट तैँ हनुमान छुड़ाबे, मन क्रम वचन ध्यान जो लाबे। दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।' पवनसुत अपन चमत्कार देखौलनि। ओ शिवकांतक मामाक स्वरूप मे प्रगट भेलाह।

मामक नाम छलनि चतुरभुज लाल दास आ हुनकर स्वभाव छलनि मस्त कलन्दर बला। कलकत्ताक समीपहि छल मंगलाहाट। मंगलाहाट भेल रेडिमेड वस्त्रक जनक। हाटक लगपासक सैकड़ो गाम मे रेडिमेड कपड़ा तैयार करैक विशाल कुटीर उद्योग पसरल रहए। मंगलाहाटक बुझि लिअ सर्वेसर्वा भेला चतुरभुज लाल दास। सम्पूर्ण उत्तरी भारतक व्यापारी मंगलाहाट पर वस्त्र क्रय हेतु अबैत छल। दासजी रेडिमेड वस्त्रक बारीकीक माहिर रहथि। कतहु सँ कोनो व्यापारी आओत ओ दासजीक गद्दी मे ठहरत, दासजीक चरण मे शीश झुकाओत, दासजी कैँ फूल-अक्षत निवेदित करत, दासजी सँ आवश्यक परामर्श ग्रहण करत, दासजी सँ हुकुमनामा लेत आ तकर बादे

क्रय संबन्धी क्रियाक निस्पादन करत। दासजी कैँ क्रेता एवं विक्रेता, दुनू कात सँ उठौना भेटैत छलनि। दासजी गाम मे लगभग पच्चीस बीघा चिक्कन खेत कीनि चुकल छलाह। डीह पर पिताक सुख-सुविधाक लेल पक्का मकान सेहो बनबा चुकल रहथि। आब ओ वंशक नाम उजागर करक लेल पितामहक नामे हाइ स्कूल खोलैक सूरसार मे छला। एखन दासजी गामहि सँ कलकत्ता जयबा लेल सकरी टीशन पर पहुँचल रहथि। हुनका संगे मोटरी उठौने हुनक खबास सेहो छलनि।

मामा कैँ देखिते शिवकांत चिहुकि उठला। ओ मामक चरणकमल पर माथा टेकि अपन असीम दुःखक दारुण वर्णिका कर' लगलाह। शिवकांत नोरे-झोरे कानियो रहल छला आ कातर वाणी मे मामा सँ दयाक भीखो मांगि रहल छला।

भागिनक हृदयबिदारक विलाप सँ दासजी द्रवित भ' गेलाह। ओ शिवकांतक माथ पर हाथ रखैत आशीर्वाद देलथिन आ कहलथिन—मामाक सोझाँ मे भागिन नोँर बहाबए से अनर्थकारक बात भेलै। तोँ सबुर कर'। एखने हमरा संग कलकत्ता चल'। दुखक दवाइ भेल टाका। कलकत्ता मे तोरा हम एहन ने रोजगार मे लगा देबौ जे तोँ प्रचुर मात्रा मे ढौआ कमेबैँ। तखन मोटरी मे बान्हि क' बाप कैँ टाका पठा दिहनु। मासे-मास टाकाक पोटरी पाबि तोहर पिता एतेक ने झुकि जेथुन जे जखन तोँ गाम जेबहिन तखन ओ तोहर पयर गंगाजल सँ धोथुन। एहि जहानक लोक माया मे फँसल अपनहि गरदनि मे फँसरी लगा क' बाप-बाप क' रहलए।

तहिया सकरी सँ हाबड़ाक मासुल भेल सात टाका। चतुरभुज दास दू गोट दस टकही आ एक गोट एक टकहीक करकरौआ नोट निकालि अपन भागिनक हाथ मे दैत कहलनि—फुर्ती सँ तीन गोट हाबड़ाक टिकट कटौने आबह।

हमर इतिहास शिवकांतक इतिहास सँ भिन्न तरहें शुरू भेल छल। इम्तिहान मे फेल भेलाक कारणे हमरा ततेक जबर्दस्त मानसिक आघात लागल छल जे हमर मोनक संतुलन गड़बड़ा गेल रहए। एखन तक हम शिवकांतक विपति मे ओझरायल रही आ तँ स्थिर रही। मुदा शिवकांतक प्रस्थानक बाद हमर अपन समस्या मुँह बाबि देलक। कोन मुँहे गाम जायब? मुदा तखने छोटका ककाक विदुर नीतिबला उपदेश मोन पड़ल। कका मैट्रिक मे तीन-तीन बेर फेल केलाक बादो राजनीतिक चासनी मे डुबाओल भविष्यक इमरती कैँ चूसि रहल छलाह आ प्रसन्न छलाह। हमहूँ ककाक कहल मार्गक अनुसरण करी त' चिंतामुक्त रहब। पढ़ब-लिखब झंझटिया काज भेल। एकरा बिसरि जायब तखने चैन सँ रहब। अही तरहक विचार कैँ अड़ेजैत हम एक्का पर बैसलहुँ आ गाम पहुँचि गेलहुँ।

हमर गाम मे भोर होइते चहल-पहल शुरू भ' जाइत रहए। आर्थिक दृष्टिएँ

सम्पन्न आ लगभग दस बर्ख पहिने मिडिल स्कूलक स्थापनाक दुआरे थोड़-बहुत शिक्षाक प्रसार। गामक माहौल मे आनन्द अधिक आ' क्लेश कम। पढ़ाइ-लिखाइक महत्त्व एखनो बेशी नहि। बहुत पढ़ि लेल', आब आओर कतेक पढ़ब'। अपन गृहस्थीक काज मे मोन लगाब'। दूध-दही खा आ कुश्ती लड़'। मजबूत काया सभसँ पैघ सम्पत्ति।

गामक जनसंख्या बहुत कमे'। लोकक बीच आपकता। भेट भेला पर दुटप्पी गप्प-सप्प करब अनिवार्य। बिआह, दुरागमन, उपनयन, मुंडन आ तकरा संग पावनिक पथार। भोज-भात, मौज-मस्तीक कमी नहि। बरियाती जयबा कालक ड्रेस पहिरने लोक गाम मे घुमि-फिरि क' समय बितबैत रहए। तकर अतिरिक्त ताश खेलक अष्टजाम, भांग पिसै कालक लोढ़ी-सिलौटक रगड़-घसबला सुगन्धित संगीत। एके गिलास पीने की हैत? एक गिलास आरो पीबिऔ ने! तखन रमकी आओत। आलस्यक नामो-निशान नहि। सभ तरहक काज मे सभ लोक बाझल। ओहने निर्भीक आ बेपरबाह जिनगीक आनन्द लैत हमहूँ समय कैँ खेहारब शुरू क' देने रही।

मुदा सभ दिन की एकहि तरहक भेलैए? बेरुका उखराहा मे हम रस्ता पकड़ने गुनगुनाइत जा रहल छलहुँ। पाछुए सँ टने झा हमर माथ परक गमछा कैँ तीरि लेलनि आ कहलनि—आब बुझलियौ जे तोँ सदिखन माथ किएक झँपने रहैत छएँ। टीक कटा लेलएँ तँ ने!

हम घुमि क' टने झाक सोझाँ-सोझी भ' गेलहुँ। गामक भगिनमान टने झा चरफरिया लोक। घुसकैत ट्रेन मे छड़पि क' चढ़ैत होथि, तेहन हरबड़िया स्वभावक। ओ कहलनि—टीक कटोलएँ तकर संकोच किएक? हरौ, हमरा निहारि क' देख ने। गाम मे सभसँ पहिने हमहीं कानी छटेलहुँ, हमही टीक कटेलहुँ, हमही पान मे अहमद हुसैन दिलदार हुसैन जर्दा खेलहुँ, हमही चन्द्रकांता आ चन्द्रकांता संतति उपन्यास आनि क' पढ़लहुँ आ आउर त' आउर हमहीं पहिले-पहिल कमीज सिया क' पहिरलहुँ। मिरजइक जगह पर कमीजक प्रचलन शुरुए भेल रहै। जखन हम कमीज पहिरि गाम आयल रही तखन हमर बाप हमर डेन पकड़ने गाम मे दरबज्जे-दरबज्जे सभ कैँ कहने रहथिन—देखियौ हमर अबारा बेटाक डरेस। एकर जोड़क लोफर परगना भरि मे दोसर नहि भेटत।

टने झा बड़ी काल तक अपन बड़ाइक पाठ पढ़ैत रहलाह। अन्त मे अपन गप्पक उपसंहार करैत कहलनि—टीक कटेनाइक अर्थ भेल विचार मे प्रगति आनब। देश आजाद भ' चुकलैए। आब ड्रेस मे, विचार मे प्रगति आनि क' ने देशक विकास क'

सकैत छएँ। मुदा आब अहि गप्प केँ अन्त क' दही। हम तोरा बड़ी काल सँ ताकि रहल छलियौ। पूछै किएक?

—किएक?

टने झा गमछा वापस करैत कहलनि—बौआ तोरा ताकि रहल छथुन। तोरा सँ हुनका केहन काज छनि से त' वैह कहथुन ने!

बौआ अर्थात् बाबू नारायणजी चौधरी, गामक सभ सँ आदरणीय एवं सम्मानित व्यक्ति। ओना त' गामक आरो किछु लोक स्वतंत्रताक लड़ाइ मे हुलकी देने रहथि मुदा नारायणजी चौधरीक समस्त जीवन आजादीक युद्ध मे बीतल छलनि। हुनकर विश्वास क्रान्ति दल मे छल। बिन लठिऔने अँग्रेजबा नहि भागत। अहिंसाक मार्ग कायरताक मार्ग। जाहि युद्ध मे शोणित नहि बहतै तकर फलाफल कहियो नीक नहि हेतै। भ' सकैए जे अहिंसाक रस्ते देश केँ आजादी भेटिओ जाइ मुदा तेहन आजादी लोक मे जागरूकता नहि अनतै, चरित्रक निर्माण नहि करतै। देशक जनताक बीच जागरण चाही, अनुशासन चाही, कर्त्तव्यक प्रति निष्ठा चाही तखने देशक भविष्य सुरक्षित रहतै। नारायणजी चौधरी अनेक क्रांतिकारी संगठन मे सक्रिय रहलाह। बिछल-बिछल क्रांतिकारीक सम्पर्क मे रहि अँग्रेज केँ नाके सूते पानि पिऔलनि। अन्त मे ओ कैद भेलाह। हुनका आजीवन कारावासक सजाए भेटलनि। 15 अगस्त 1947 ई.क दिन भारत स्वतंत्र भेल आ ओही दिन अनेक राजनीतिक कैदीक संग नारायणजी चौधरी जेल सँ मुक्त भेलाह। जहल सँ छुटलाक बाद ओ अपन सभ तरहक क्रिया-कलाप सँ संन्यास ल' लेलनि। देश आजाद भेल आ नारायणजी चौधरीक काज समाप्त भ' गेलनि। बाँकी जीवन ओ गामहि मे रहि क' शेष करताह। महत्वाकांक्षा सँ कोसो दूर नारायणजी चौधरी केँ समस्त गामक लोक आदर सँ बौआ कहि सम्बोधित करैत छल। बौआ निर्विरोध गामक प्रथम मुखिया चुनल गेल रहथि। ओ निष्ठा सँ मुखियाक काज करैत छलाह।

बौआ हमरा किएक ताकि रहलाए? माथा ठनकल छल। कोनो उचित कारण बुद्धि मे प्रवेश नहि कयने छल। बिना एको मिनटक बिलम्ब कयने हम बौआ सँ भेट कर' लेल बिदा भेलहुँ।

बौआमायक पोखरिक घाट। विशाल धातरी गाछक तर सँ अबैत शीतल पवन। घाटक दछिनबरिया सीमेन्टक ब्रेंच पर बौआ बैसल रहथि। हुनके वयसक फुद्दी कका हुनकर बगल मे सेहो बैसल छलाह। दुनूक पयर छूबि हम घाटक दोसर कात बनल ब्रेंच पर बैसि गेलहुँ। पाछू-पाछू अबैत टने झा हमरे ब्रेंच पर बैसि गेलाह।

बौआक बाजब मे घुरछी नहि, सोझ प्रश्न। ओ पुछलनि—हम त' गाम मे कमे

रहलहुँ तथापि तोरा द' जानकारी अछि। गामक तमाम छात्र मे तोहर नाम मेधावी विद्यार्थी मे गनल जाइत रहलौए। तखन इन्ट्रेन्सक इम्तिहान मे तोँ असफल किएक भ' गेलें?

हम विनम्र भाव सँ बौआ कें जवाब देलियनि—परीक्षाक दोसर दिन हिसाबक पेपर रहै। हम नौर्थब्रुक जिला स्कूलक छात्र आ हमर परीक्षाक स्थान सरस्वती स्कूल मे। हिसाबक परीक्षा दिन हम एडमिट कार्ड संग मे लेब बिसरि गेल रही। एकर ज्ञान हमरा परीक्षा भवनक गेट पर भेल छल। बिना एडमिट कार्डक परीक्षा मे दाखिल नहि होम' दैत तँ फर्दबाल दौड़ैत हम अपन होस्टल पहुँचल रही। एडमिट कार्ड बिछौन पर पड़ल छल। एडमिट कार्ड ल' क' वापस परीक्षा भवन पहुँचलहुँ। ताबे तक परीक्षाक दू घंटाक समय मे पौन घंटाक समय बीति चुकल रहै। परीक्षा भवन मे अपन नियमित सीट पर पहुँचलहुँ। परीक्षक सज्जन लोक रहथि। प्रश्नपत्र एवं उत्तर पुस्तिका द' देलनि। हिसाबक पेपर मे तीस नम्मरक अंकगणित, तीस नम्मरक अलजेबरा आ चालिस नम्मरक ज्यूमेट्रीक प्रश्न रहैत छैक। हमरा सभटा प्रश्नक उत्तर रटले छल। मुदा दुरमतिया घेरि लेलक। शिक्षक बारम्बार चेतौने रहथि जे 'सरल करो' सवालक अन्त मे 'एटेम्प्ट' करै लेल। हड़बड़ी मे हम 'सरल करो' सवाल कें सरलीकरण शुरू क' देलियै। सवालक उत्तर एक अंक हेतै से बुझल रहए। मुदा हमरा अन्ट-सन्ट उत्तर प्राप्त होइत रहल। हम कान' लागल रही।

एतबा बाजि हम चुप भ' गेलहुँ। ओतए उपस्थित गामक तीन गण्यमान्य व्यक्ति सेहो चुपे रहला। हम मोन कें स्थिर केलहुँ, आँखिक नोर पोछलहुँ आ नज़रि कें सोझ करैत बाजब शुरू केलहुँ—परीक्षक कें हमरा पर दया भेलनि। ओ लग आबि हमरा सांत्वना देलनि। हमर सभटा बात बुझि परीक्षक आस्ते सँ कहलनि—'खंड क, ख, ग मे जो भी सवाल का हल करो, नीचे से करो।' परीक्षकक टिप्स काज क' गेल। सवाल फटाफट हल होम' लागल। मुदा ताबे तक बहुत समय बीति गेल छलै। मुश्किल सँ हमरा आध घंटाक समय भेटल रहए। ओतबा समय मे जतबा सवालक उत्तर बना सकैत छलहुँ से बनोलियै। परीक्षाफल मे आन-आन सभ विषय मे बहुत नीक नम्मर भेटल मुदा हिसाब मे मात्र तइस अंक। सैह कारण भेलै जे हम परीक्षा मे उत्तीर्ण नहि भ' सकलहुँ।

हम धाराप्रवाह बजैत-बजैत थाकि गेल रही। एक तरहक ग्लानिक अनुभव सेहो भ' रहल छल। हारल खेलाड़ीक मनोदशा सदृश नजरि नीचाँ झुकि गेल रहए।

कनेकाल तक बौआ हमर कथन कें पचबैत रहला तखन कहलनि—एहन दुर्योग जीवन मे होइते रहैत छैक। मुदा तकर माने ई कथमपि नहि भेलै जे जूआ पटकि

दी। तोँ आगाँ नहि पढ़बैँ तकर एलान क' देलहिनए, से किएक?

हम पोखरिक पानि दिस तकैत बौआ कैँ जवाब देलियनि—परीक्षा मे असफलता सँ हमरा अत्यधिक वेदना भेल छल। हम त' आत्महत्या कर' लेल तैयार भ' गेल रही। ओही समय मे छोटका कका सँ भेट भेल रहए। कका कहने रहथि जे जाहि काज मे सफलता भेटब संदिग्ध होअय तकरा तखने त्यागि देबाक चाही, सैह भेल विदुर नीति। हमरा ककाक विचार उपयुक्त लागल। हम आगाँ नहि पढ़ब आ ने कोनो परीक्षा मे दाखिल होयब तकर प्रण क' लेलहुँ।

—विदुर नीति? ई केहन तर्क भेलै हौ?

हमर प्रणक कारण सुनि बौआक संगे आन सभ कियो चकित भ' एक-दोसरा दिस ताकय लगलाह। बौआ पुछलनि—सुनलहुँए जे कौआली देशक प्रथम चुनाव मे प्रत्याशी बनलए?

जवाब टने झा देलनि—सही सुनलियै बौआ। कौआली कैँ काँग्रेसक टिकट नहि भेटलैए। ओ सुस्लीस्ट पार्टीक झोपड़ी छाप दिस सँ चुनाव लड़त।

—तखन काँग्रेसक टिकट ककरा भेटलैए? फूद्दी कका जिज्ञासा केलनि।

—कंटीर खेतान कैँ।

—खेतान? ई त' कियो मारबाड़िए हैत ने!

टने झा चटपटाइत सूचना प्रेषित केलनि—लखन साहु मखन साहुक लटगेना दोकानक नोन-तेल तौलनिहार कंटिरबा खतबे। वैह खतबैया हाफीडिफीट करा अपन नामक टाइटिल बदलि कंटीर खेतान बनि गेलए।

—तखन कंटिरबा विधायक बनि गेल सैह बुझि लिअ। एखुनका काँग्रेसक लहरि मे जँ कुकुरोक गरदनि मे जोड़ा बड़दक टिकट बान्हि देल जाए त' ओ चुनाव जीतिए जायत।

फुद्दी ककाक विचार सँ सहमत होइत मुदा अफसोच करैत बौआ कहलनि—संविधान निर्माणकर्ता पर आंगुर उठायब हमर नियत नहि अछि। लगभग चारि-पाँच सय बर्खक गुलामी आ तकरा संगे भारतक प्राचीन परम्पराक विविधता। सभ बातक मूल्यांकन करब आ तखन संविधान कैँ स्वरूप देब अत्यन्त कठिन काज अबस्से भेलै। तथापि सांसद एवं विधायक जे देशक कानून बनाओत, देश पर शासन करत आ एक तरहें देशक भाग्य निर्माता बनत तकर योग्यता लेल कोनो विधि-विधान नहि? हमरा ई बात पचि नहि रहल अछि। त्याग वलिदान एवं सेवा-भावक प्रतिमूर्तिक हाथ मे देशक बागडोर रहबाक चाही ने! की स्वतंत्रताक सौभाग्य भेटलाक बादो हमर देश अभागले बनल रहत?

घाट पर थोड़े समयक लेल महासागरक महाशांति पसरि गेल रहए। उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अपन-अपन बुद्धिक अनुसारे देशक भविष्यकेँ तजबीज कर' लगलाह। खिन्न भेल बौआ हमरा दिश तकैत कहलनि–केदार भैया, हमसभ विषयान्तर भ' गेल रही। आन-आन तरहक गप्प केँ बिसरि क' तोहर एखुनका समस्या पर विचार करब जरूरी छैक। तोहर एक बर्ख दूरि भेलह त' भेलह मुदा तोँ पढ़ब नहि छोड़'। विद्या सभसँ पैघ धन थिकै। एकर तिरस्कार नहि हेबाक चाही। आर्थिक दृष्टिएँ तोँ सम्पन्न छहे। तोरा मे प्रतिभा सेहो छह। तेँ हम तोरा उपदेश नहि, आदेश दैत छिअ जे मोन लगा क' पढ़ब शुरू कर'। अगिला बर्ख तोँ नीक रिजल्टक संग मैट्रिक परीक्षा मे सफल हेबे टा करब'।

बौआ एवं फुद्दी कका उठिक' बिदा भ' गेलाह। पोखरिक घाट पर हम आ टने झा रहि गेलहुँ। टने झा बड़ी काल धरि मिरगीक रोगी जकाँ अर्र-दर्र बड़बड़ाइत रहलाह। फेर अफसोचे छटपटाइत बजला– केदार भैया, कंटिरबा खतबे सँ खेताने टा नहि बनलए, ओ अपन काबिलियतक डंका सेहो पीटि देलकए। विधायक बनि ओ दरिद्रछिम्मड़ि नहि रहत, धन्ना सेठ बनि जायत।

टने झा उठि क' ठाढ़ भ' गेलाह आ मरखाह बड़द जकाँ पक्का घाट पर पयर पटक' लगलाह। रंजे तमतमाइत ओ हिन्दी बाज' लगलाह–''साला! विधायक बनने की बात मेरे मगज मे क्यों नहीं आया? सब समय मैं अपने को तीसमार खाँ समझता रहा, बस यही मेरी भूल थी। ठीक मौके पर मेरी बुद्धि कंठी पहन लिया, ठरका चानन कर लिया और कातिक स्नान करने सिमरिया चला गया। कंटिरबा ने बाजी मार लिया और मैं मुँह ताकता रह गया।''

2

बिहाड़ि आओर अन्हड़ उठितै रहलै, अगिलग्गी आ बाढ़ि अबिते रहलै। मुदा तँ की, दिन-राति होइते रहलै, समय अपन धूरी पर चलिते रहलै। हम इन्ट्रेन्सक कोन कथा, आइ.ए., बी.ए. आ अर्थशास्त्र विषय ल' क' एम.ए. पास केलहुँ। साधारण सँ कनेक नीक रिजल्ट सभ वर्गमे भेल छल। प्रांत मे तहिया नव-नव कॉलेज खुजि रहल छलै। सहपाठी सुरेन्द्र मिश्र जे मोतिहारी कॉलेज मे प्रध्यापक नियुक्त भेल रहथि, विचार देलनि—कत' बौआइत छी। छपरा कॉलेज मे अर्थशास्त्र विषयक प्रध्यापकक पद रिक्त छैक। सोझे जाउ आ ज्वाइन क' लिअ। एखन पचहत्तरि टाका भेटत, मुदा भविष्य मे तनखाह मे वृद्धि हेबेटा करतै तकर हम विश्वास दिअबैत छी।

हमरा सरकारी नोकरी आ कि पठन-पाठनक पद रुचिगर नहि लागल। नसिब जोरगर छल। थ्री एसप्लानेड ईस्ट मे 'केलीज डाइरेक्टरी' मे हमर नियुक्ति भेल। अहि डाइरेक्टरीक हेड ऑफिस लंदन मे तथा ब्रांच आफिस अनेक देश मे पसरल रहै। विश्व-स्तरक डाइरेक्टरी मे केलीज डाइरेक्टरीक स्थान प्रमुख छलै। तनखाह छल एक सय पच्चीस टाका। दू टाका कोनो मदमे कटि जाइत छल आ हम एक सय तैस टाका ल'क' अपन बासा मे पहुँचैत रही। एसप्लानेड सँ हाथीबगान तकक ट्रामक फस्ट किलासक भाड़ा पाँच पाइ। दिनुका भोजन मे दू-तीन गोट सोहारी, दू-तीन करछु भात, दालि, चरचरी, भुजिया, पापड़ आ नेबो। राति मे केराक पात पर उसना चाउरक भफायल भात आ झोराओल रुइ माछ। समय महग भ' गेल रहै तँ महिना भरिक भोजनक बिल छब्बीस टाका अगुआरे दिअ पड़ैत छल। साठि नम्बर ग्रे स्ट्रीट मे एक कोठलीक भाड़ा भेल कूरी टाका। कूरी टाका नइ ने बुझलियै! ई भेल बीस टाका। महगी धुधुआ रहल छलै। मुदा हमरा जे पारिश्रमिक भेटैत छल से पर्याप्त छल। कलकत्ता सनक शहर मे नोकरी करैत रही। फइल हवादार कोठली मे रहैत रही। खगता कोनो वस्तुक नहि छल।

आब हम अपन दुखनामाक चर्चा करब। मैट्रिक सँ एम.ए. तकक अध्ययनक

बीच मे हमरा एकटा रोग पकड़ि लेलक। शुरू मे ई रोग हलुके छल। मुदा समयक संग एकर तेजी बढ़िते गेलै। रोगक नाम भेल मैथिली प्रेम रोग। अपन व्यथाक विवरण दिअ पड़त। अहाँकेँ हमर व्यथा-राग केहन लागत तकर चिंता हमरा कनिकबो नहि अछि। हमर मोनक संताप अबस्से कम भ' जायत तेँ हमरा बड़बड़ाय दिअ। एकटा आरो बात, हम जे कहब तकरा सत्य मानबैक। किएक त' मैथिली प्रेम-रोगक संबन्ध कोनो लेन-देन अथवा नफा-नोकशान सँ नहि मात्र हृदयक ओहि तंतु सँ छैक जतय केवल दर्द छैक, पीड़ा छैक। दर्द मे, पीड़ा मे रोगी फुइस नहि बजैत अछि।

विद्या उपार्जनक सफर मे गर्मी, दुर्गापूजा एवं बड़ा दिनक तातिल मे सोझे गाम आबी। गामक मोह, गाम-घरक लोकक मोह, गामक इनार-पोखरिक मोह एतेक ने तीव्र छल जे जखन छुट्टी मे गाम आबी त' बड़ नीक लागए। एक दिनुका गप्प थिक। गर्मीए तातिल मे गाम आयल रही। मटरगस्ती करैत रस्ता धेने जा रहल छलहुँ। बौआमाय पोखरिक पुबरिया भिण्डा पर छोटका कका वंशी पथने छलाह। बेरु पहरक सूर्यक ठोकल आ सोझ ताप हुनक माथ पर पड़ि रहल छलनि। कका हमरा देखलनि आ सोर पाड़लनि। छोटका कका अर्थात् कौआली बाबू। हम करितौं की? हमरा हुनका लग जाए पड़ल। कका अपन जीवनक पछिला घटल वृत्तान्त कह' लगलाह। विदुर नीतिक अनुसारे ओ पढ़ब छोड़ि राजनीति मे कूदल रहथि। जोड़ा बड़द छापबला काँग्रेसिया जखन नकारि देलकनि तखन ओ झोपड़ी छाप दिश सँ चुनाव लड़ल रहथि। जनता हुनकर त्यागक कोनो टा पुरस्कार नहि देलकनि। हुनकर जमानतो जप्त भ' गेलनि। विदुर नीतिक आचार्य कका कैँ राजनीति छोड़' पड़लनि। तखन ओ ठीकेदारी व्यवसाय दिश अग्रसर भेल छलाह। गाम सँ सकरी कुल पाँच मील। आजाद भारत मे सड़क पक्की बनतै। टेंडर निकलल रहै। ककेक टेंडर पास भेलनि। कका पक्की सड़कक निर्माण मे लागि गेलाह। सड़क बनि गेलै। ई की भेलै रौ बाउ? कका बापक अर्जल जथा-जमीन मे सँ सात बीघा खेत बेचि क' पूजी जमा कयने रहथि। ईंटा, बालु, सीमेन्ट, अलकतरा, मजदूरी-सभहक पेमेन्ट चुकता करैत-करैत ककाक पूजी बिला गेलनि। ओभरसियर, एस.डी.ओ. आ एक्सक्यूटिभक कमीशन त' बाँकिए रहि गेल छलै। अँग्रेजक जमाना सँ अबैत कमीशनक परिपाटी कैँ कका तोड़ि नहि सकैत छलाह। कका एक बीघा खेत आरो बेचि कमीशन चुकौलनि।

कका लोहछि क' कहलनि—बेकारे हम ठीकेदार बनलहुँ। मुदा अहि मे दोख ककेक छलनि। हित-अपेक्षित हमरा उकसा-उकसा क' हमर नोकशान करा देलनि। जाए दहक, जे भेलै से भेलै। कहियो काल गलत निर्णय भइए जाइत छै। ठीकेदारीक

ज्ञान नहि रहए तकर बादो ठीकेदार बनब भेल हमर बुड़िपाना। 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा'। कर्म करैत रही। असफलता लेल कुपित होयब उचित नहि।

कका वंशीबला लग्गा कँ उठा क' बोर कँ ठेकनौलनि। बिढ़नीक पोआक बोर रहै। बोर अपना जगह पर ठीके-ठाक छलै। कका पुनः लग्गा कँ झटका दैत डोरी संग काँटा कँ पानि मे फेकलनि आ तरैला पर ध्यान केन्द्रित केलनि। तरैला सोझ भ' क' ठाढ़ भ' गेल। कका चैनक साँस छोड़लनि। तखन बेफिक्र होइत कहलनि—तोरा एकटा खास समाद कह' लेल एखन सोर केलिऔए। एकटा महाज्ञानी मैथिल इंगलैंड सँ भरिगर डिग्री ल'क' मिथिलांचल मे पदार्पण केलनिहँए। ओ लहेरियासराय मे अपन खुट्टा गाड़लनिहँए। ओ जीवनक सभ सुभिता त्यागि मिथिला नामक पृथक राज्य बनेबाक प्रण केलनिहए।

हमर माथा ठनकल। हमहुँ सुनने रही ई गप्प। चारूकात हल्ला भेल रहैक। एकटा बेजोड़ आ प्रबुद्ध मैथिल शिरोमणि ईगलैंड सँ पी-एच.डी. डिग्री प्राप्त क' मिथिलांचल मे अयलाए। हुनकर एकमात्र ध्येय छनि मिथिला एवं मैथिलीक सेवा करब। ओ मिथिलाक दुखकँ, कष्टकँ निवारणक हेतु पोथी लिखि क' प्रकाशित केलनिहँए। हुनकर पोथी अइ बात कँ उजागर करैए जे मिथिला कँ अलग राज्य बन' लेल इतिहास, भूगोल, कला, संस्कृति, परम्परा संग कृषि एवं उद्योग छैक। सरकार चलबै लेल पर्याप्त आमदनीक सेहो गुंजाइश छैक। एतेक उपलब्धि रहलाक बादो मिथिला अलग राज्य किएक ने बनत, अबस्से बनत? ककर बापक दिन छै जे मिथिला कँ अलग राज्य बन' सँ रोकि सकत! जय हो, जय-जय हो! आब मिथिला राज्य बनि गेल सैह बुझि लिअ।

ओहि महामानवक चर्चा मे आकर्षण रहै। आकर्षण प्रकंपित करएबला रहैक। ककाक संवाद सँ हमर ध्यान आकृष्ट भेल छल। ताहू पर सँ कका जखन ई सूचना निर्गत केलनि जे ओ प्रकांड विद्वान अगिला अर्थात् भारतक दोसर खेपक संसदक चुनाव मे प्रत्याशी बनताह, ई सुनिते तखन त' हम अपना कँ रोकि नहि सकलहुँ। ओहि महापंडित कँ देख' लेल अधीर भ' उठलहुँ।

कका कहलनि—चुनाव लड़' लेल अनुभवी एवं समर्पित लोकक आवश्यकता होइत छैक। हम अपन देशक पहिल चुनाव लड़ि चुकल छी। पराजित भ' गेलहुँ ई अलग बात भेल। मुदा हम चुनावक दाव-पेंच, तरी-घटी सभ तरहक करिश्मा सँ परिचित भ' चुकलौंए। तखन बचल समर्पण। हम राजनीति एवं ठीकेदारी सँ अपना कँ अलग क' चुकलहुँए। बचल जमींदारी। एखुनका प्रजातंत्री सरकार जमींदारी गिड़ै लेल कटिबद्ध भ' गेलए। सुनलए जे आब प्रखण्डक सभटा तौजीक मालिक

अंचलाधिकारी हैत। परिवर्तन होयब संसारक नियम थिकै। जे होइ छै तकरा होम' दिऔ। तँ हम अपन समस्त जीवन अहि नव नेता मे समर्पित क' देलए। हम हुनक चरणधूलि मस्तक मे लगा हुनक शिष्य बन' लेल अपना कँ तैयार क' लेलहुँ अछि।

हम पुछलियनि—कका, अहाँक नेताजीक नाम की छनि?

—राम-राम! जिह्वाक अग्रभाग मे अग्निदेवताक बास। अपन गुरु, प्रेमी एवं नेताक नाम जिह्वा पर आनब अनुचित। ओ छथि मिथिलांचलक नेता, तँ ओ हमरो नेता। हम तोरा विचार देबौ जे तोहूँ हुनका नेताजी कहि सम्बोधन करहुन।

बजिते-बजिते कका बंशी छिपलनि। बंशीक काँट मे बाझल एकटा गरचुन्नी बाहर आयल। कका मुँह बिचकबैत बजला—बोर देलियै रहु माँछक आ ऊपर भेल गरचुन्नी। देखहिन ने, हमर सुतार कखनहुँ लहिते ने अछि।

हम चुपे रहलहुँ। कका बोर कँ ठीक केलनि। फेर सँ बंशी पथलनि। तखन कहलनि—हम काल्हिए नेताजी सँ भेट करए लहेरियासराय जायब। हम तोरा विचार देबौ जे तोहूँ हमरा संगे चल आ नेताजीक दर्शनक पुण्य लाभ कर।

नवका नेताजी सँ भेट करैक हमरो तीव्र इच्छा जाग्रत भ' गेल। ककाजीक नेताजी प्रतिए भक्तिभाव हमरो मोन कँ लुसफुसा देने रहए। मातृभूमि मिथिला आ मातृभाषा मैथिली लेल हमरो उत्कट आकर्षण पनपि गेल रहए, जकर पर्याप्त कारण रहै।

गाम मे हमर एकटा पितिऔत भ्राता रहथि 'दीपकजी'। दीपकजीक पूरा नाम भेल अमर नाथ चौधरी 'दीपक'। जहिना जलक स्वभाव होइए शीतलता तहिना दीपक जीक स्वभाव छल मृदुलता। छोट-पैघ सभहक लेल आदर एवं विनम्रता। कोमल वाणी आ ठोर पर मुस्की। ने संसारक मोह आ ने परिवारक सुधि। मात्र मैथिली भाषा लेल चिंता। दीपकजी कहथि—हयौ केदार भैया, मिथिला कँ बिहार प्रांत मे सम्मिलित क' अन्याय कएल गेलैए। मिथिला कँ अलग राज्यक दर्जा भेटक चाहियैक।

गाम मे बहुतो चटिसार रहैक। मुदा दीपकजीक दरबज्जा परहक बैसारक एक अलग तरहक मर्यादा रहै। ओ स्वयं मैथिली भाषाक नीक विद्वान रहथि। जीवनक आरम्भ मे दीपकजी मैथिली भाषाक मासिक पत्रिका 'पल्लव'क सम्पादन कयने रहथि। बादक जीवन मे हुनक मासिक पत्रिका 'मातृवाणी' बहुत दिन तक प्रकाशित होइत रहल। आर्थिक दृष्टिएँ गाम मे सभ सँ सम्पन्न, भाइ-बहिन मे असगरुआ, दीपकजीक दलान लगभग दू बीघा मे पसरल सभहक आकर्षणक केन्द्र रहैक। प्रत्येक गर्मी तातिल मे गामक नवयुवक हुनके दलान पर हुनके डाइरेक्शन मे नाटक खेलाइत छल। माधव स्मारक पुस्तकालय, कबड्डी खेलक प्रतियोगिता संगे सभहक खोज-पुछारि करब हुनक नित्यक कार्यक्रम छल। समय-समय पर मैथिली भाषाक कवि एवं

कथाकारक जमघट दीपकजीक दलानक त' शोभा छले। यात्रीजी जहिया कहियो अपन गाम तरौनी आबथि त' एको दिनक लेल दीपकजीक ओहिठाम अबस्से आबथि। गाम भरिक लोक यात्रीजीक सम्मान मे जमा भ' जाय। यात्रीजीक अनुपम कविता पाठ हमरा एखनो मोन अछि—''पुरखा लोकनि पिबइ छलाह भांग, खाइ छला माजूम। चिबाबथि ललमुँहा रोहुक तरल-झोरायल मूड़ा। मोदनीक पेटी, करिया छागरक करेजी। हमरा लोकनि आजुक प्रबुद्ध मैथिल चढ़बइ छी नापि क' देशी-विदेशी दारू मात्रानुसार। करइ छइ गुन अतत्तह जड़काला मे।'' यात्रीजीक कविता पाठ एवं गप्प-सप्प तेहन ने रसगर आ रमनगर होइत छलनि जे हम मंत्रमुग्ध भ' जाइत छलहुँ।

गाम मे रही त' हम नित्य दीपकजीक ओहिठाम गेल करी। कखनहुँ काल दीपकजी अत्यन्त संवेदनशील भ' जाथि। कहथि—हयौ केदार भैया, तपस्वी, आर्य-धर्मक प्रवर्तक, अहिंसा मे विश्वास केनिहार, प्रत्येक दर्शनक दिशा देनिहार, सनातन धर्मक महत्त्वकेँ व्याख्या केनिहार, सीताक अर्चना करैत नारी जातिक आदर केँ उच्चतम शिखर पर पहुँचेनिहार मिथिला एवं मैथिल एखन घोर संकट मे छथि। अँग्रेज शासक षट्यंत्र क' मिथिला केँ दू खण्ड मे बाँटि देलक। एक हिस्सा भारत मे आ दोसर हिस्सा नेपाल मे। मिथिलाक इतिहास तकर बादो कायमे छैक मुदा एकर भूगोल निपत्ता भ' गेलै। अहू सँ बेशी दुखक, अपमानक कोनो आर बात हेतै? प्राचीन काल सँ मिथिला एकटा स्वतंत्र राष्ट्र रहलए जकर प्रमाण अपन धर्मग्रंथ मे सुरक्षित अछि। खंडित भेल मिथिला अपन आचरण सँ, अपन परम्परा सँ एखनो एकटा राष्ट्र अछिए। मात्र एखुनका प्रजातंत्री सरकार मे एकर स्वरूप केँ उजागर कर' पड़तैक। उजागर करक मार्ग हेतै मैथिली भाषा सँ, मिथिला केँ पृथक राज्य बनला सँ। मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार लेल अनेको मैथिल सचेष्ट छथि। मिथिलाक गौरव केँ पुनः कायम कर' लेल सभटा मैथिल विद्वान एवं मैथिल संस्था केँ एकजुट करए पड़तैक, सभहक सोच केँ एक खास दिशा मे आनए पड़तैक।

दीपकजी बजैत-बजैत आँखि मुनि लेथि, चुप भ' जाथि। फेर थोड़ेक ऊर्जा केँ एकत्र क' बाजए लागथि—संसार मे अनेक प्रसिद्ध कवि भेलाह अछि। मुदा महाकवि विद्यापतिक टक्करक, समकक्षक कियो ने भेला। पछिला सात सए बर्ख सँ विद्यापति एतुक्का लोकक कंठ मे बसल छथि आ अपन कवित्व बलेँ असगरे मिथिलाक संस्कृति, परम्परा केँ जिऔने छथि, सुरक्षित रखने छथि। हयौ केदार भैया, मैथिल सनक कुशाग्र बुद्धिबला लोक संसार मे बिरले भेटत। एतुक्का संस्कार आ विलक्षणता झाँपल छैक जकरा उघार कर' पड़तैक। तँ कहैत छी ने जे मिथिला लेल किछु करियौ, माटिक ऋण सँ उऋण होइयौ।

सरल चित्त एवं मैथिली भाषा लेल पूर्णतः समर्पित दीपकजीक सम्पर्क मे रहैत-रहैत हमरा मैथिली प्रेम-रोग नीक जकाँ ग्रस्त क' लेलक। वयसक संग रोग मे विस्तार होइते गेल।

स्नातकक डिग्री लेल हम जखन कलकत्ता विश्वविद्यालयक छात्र रही तखन हम राजेन्द्र छात्रनिवास मे रहैत छलहुँ। मुंगेर, भागलपुर, बेगुसराय, पूर्णियाँ, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी इत्यादि अनेक जिलाक आ अलग-अलग विषयक छात्र ओही होस्टल मे रहैत छलाह। बोली मे थोड़ेक भिन्नता मुदा सभ मे मित्रता। कारण, अपन-अपन गाम-घर सँ दूर सभटा छात्र मिथिलेक रहथि। कलकत्ता मैथिल सभा, मैथिल गोष्ठी, मैथिल सम्मेलन होइते रहैक आ हमसभ झुंड मे ओहि सभा, गोष्ठी एवं सम्मेलन मे भाग लैत छलहुँ। ओतय मिथिला, मैथिली सँ अनुराग कर'बला, प्रेम कर'बला मैथिल भेटथि, जनिकर मैथिली प्रेम-रोग हमरो सँ अधिक उग्र अवस्था मे रहैत छलनि। ओतबे नहि, अहि प्रेम-रोग कैँ कोना बढ़ाओल जाए, कोना पराकाष्ठा पर पहुँचाओल जाए तकरो लेल विचार होइत छलै, मंथन होइत छल।

जखन कॉलेज मे तातिल होइत छलै आ हम ट्रेन पकड़' लेल हाबड़ा टीसन अबैत छलहुँ ताहि समयक हृदय-स्पर्शी दृश्य देखि हमर मोन द्रवित भ' जाइत छल। जाएबला एक जन आ अरिआतैबला बीस जन। सभहक समाद, सभहक आह्लाद। अपने पोखरि मे नहैह', अपने इनारक जल पीबिह'। कका कैँ कहि दिहुन जे बुढ़िया गाय कैँ कसाइक हाथे नहि बेचथि। गाय खूटे पर मरतीह तखने धर्म बाँचत। सझुआरबाली भाउज कैँ हमर समाद पहुँचा दिहुन जे अगिला माघ तक हम गाम आबि सकब। ताबे तक हमर कमौनी एतेक अबस्से भ' जायत जे भरना लागल ब्रम्होत्तर बला खेत कैँ महाजन सँ छोड़ा सकब। अइ पोटरी मे हमर कंटिरबी लेल फ्रॉक छै। ओ कतेक टा भ' गेल होयत तकर अन्दाजे क' के' हम फ्रॉक किनलहुँए। हमर पत्नी कैँ बुझाय दिहौन जे भगवती पर आसरा राखथि। सभटा भविष्य माँ दुर्गाक आशीर्वादक भूखल अछि।

सभहक आँखि मे, भाषा मे, भाव मे अपन मिथिला लेल, मिथिलाक माटिक लेल जे बेकलता देखियैक तकरा की बिसरल जा सकैत छल? मोन मे तरह-तरहक विचार पनपए। गरीब, असहाय, निर्बल भेल मैथिल कैँ अपन जन्मभूमि छोड़ला सँ कतेक पीड़ा भ' रहलैए। एकर निदान लेल किछु हेबाक चाही ने! जागू हे मिथिला! सभ किछु सँ परिपूर्ण रहितहुँ अहाँ दरिद्र किएक छी, निरुपाय किएक छी? आब त' देश स्वतंत्र छैक। तइयो की मिथिलाक समस्या मुँह बौने रहतैक? की हमर सभहक अभग-दशा बनले रहतैक?

बंशी खेलाइकाल जाहि महान आत्माक चर्चा ककाजी केलनि तनिकासँ ककेक संग भेट करए गेलहुँ। लहेरियासराय मे कबिलपुर, कबिलपुर मे बाबू साहेब कॉलनी। जीर्ण-शीर्ण दशा मे नड़िया खपड़ा सँ छारल घर। घरक आगाँ चंडुल भेल घासक परती। परतिए मे नेताजी आ हुनकर चारि गोट खाँटी चेला मूड़ी झुकौने अइ तरहें संचमंच बैसल रहथि जेना परिवार मे टटके किनको मृत्यु भ' गेल होनि। हम नेताजीक छवि कैँ ध्यान सँ निहारलहुँ। 'रहा न कुल मे रोबनहारा' सनक चेहरा पर हतासाक भाव। जेना पछिला दू दिन सँ एकोटा अन्नक दाना पेट मे नइँ गेल होनि तेना ठोरक पपड़ी, शरीरक काया। हे ईश्वर! इएह भेलाह नेताजी? हिनका त' मिथिलाक समस्या सँ पहिने अपन समस्याक निदान करक चाही!

करीब आधा घंटाक दमघोंटू चुप्पीक बाद नेताजी अपन मुँहक फाँक कैँ अलगौलनि—के छिअह, शारदाकांत?

आज्ञाकारी छात्र जकाँ कका नेताजीक समक्ष पहुँचि ठाढ़ भ' गेलाह। अत्यधिक अनुशासनक वशीभूत ककाजीक नजरि नेताजीक आँखि मे नहि, हुनक चरण-नख मे घोंपा गेल छलनि। नेताजी कहलथिन—पत्रिका छपि क' आबि चुकल छह। अपन कोटाक पत्रिका ल'क' जाह आ घूमि-घूमि क' बेचह। एतय बैसल-बैसल समयक क्षति नहि करह'। एकटा बात आरो। चुनावक दिन लगीच आबि चुकलए। ताहू बात पर ध्यान राखक छह।

ककाजी झुकल चौखटि सँ माथ बचबैत एकटा कोठली मे प्रवेश केलनि आ एकटा बंडल उठौने बाहर अयलाह। आँखिए सँ हमरा इशारा केलनि। हम दुनू कका-भतीजा लहेरियासराय टीशनक प्लेटफार्म पर पहुँचि एकगोट खाली ब्रेंच पर पोन रोपलहुँ।

कका बंडल खोललनि। पत्रिका बाहर निकाललनि। पत्रिकाक नाम रहए 'मिथिला'। मिथिले जकाँ काहि कटैत पत्रिकाक कागत आ ओकर आखर। पत्रिकाक मूल्य एक आना। चुनाव सँ पहिने पत्रिकाक विशेषांक छपल छल तैँ मूल्य दू आना। हम पत्रिका कैँ उनटा-पुनटा क' देखल। आठ पृष्ठक पत्रिका मे मात्र नेताजीक उपदेश एवं आदेश। मिथिलाक जनता की-की करथु एवं हुनके अगामी चुनाव मे भोट देथु, तकर आज्ञा।

कका कहलनि—कैंचा खर्च क' पत्रिका किननिहार धरतीक अहि भाग मे कियौ नहि भेटतौ तैँ हम पत्रिका बेचै नहि छी, बिलहै छी। एक दू दिनक बाद पत्रिकाक मूल्य नेताजी कैँ पहुँचा दैत छियनि। इहो कहि अबैत छियनि जे पत्रिका हाथे-हाथ बिका गेल। एतूका लोक चिकरि-चिकरि क' प्रशंसा केलकए। नेताजी कैँ संतुष्ट

करब चेलाक पुनीत कर्त्तव्य भेल ने!

ई सभटा बताहक क्रिया-कलाप। हम पेशोपेश मे पड़ि गेलहुँ। मिथिलाक समस्याक सामाधान लेल आ कि मिथिला राज्यक निर्माण लेल एकटा योग्य नेताक होयब जरूरी छलै। ओ नेता एहन गुणसम्पन्न होथि जनिक निर्देश मे लोक अपन कर्त्तव्य लेल जागए आ संगहि सम्पूर्ण मिथिलांचल जनाक्रोश सँ भरि जाए। मुदा से सभ की अहि नेता सँ संभव हैत?

हमर चेहरा पर उदय भेल विरक्ति भाव कँ अवलोकन करैत कका संतोख देलनि आ कहलनि–विद्वान एकभगाह होइते छैक। नेताजीक व्यवहार पर नहि जाह, हिनक उद्देश्य पर दृष्टि राखह। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे एक दिन अपन नेताजी मिथिला मे एहन बिहाड़ि अनताह जे सभ किछु बदलि जेतै। प्रांतीय एवं केन्द्रीय सरकार पात जकाँ काँपय लागत।

पहिले-पहिल कोनो नेता कँ देखने रही, बहुत अनुभव नहि छल। हम अपन मोन कँ थीर कयल। जखन कका कँ नेताजी मे एतेक विश्वास छलनि त' भ' सकैए जे झँपले सही, नेताजीक क्षमता भविष्य मे अपन करतब देखाबए। हम अही तरहक बात कँ मोन मे अनैत अपना कँ संयत केलहुँ।

हम जखन पटना विश्वविद्यालय मे एम.ए.क छात्र रही त' हमर सभसँ घनिष्ट मित्र रहथि सुरेन्द्र मिश्र, प्रतिभाशाली एवं स्फूर्ति सँ भरल। हुनके प्रयासे पोस्ट-ग्रेजुएट विभाग मे एकटा संस्था कायम भेल रहए–चाणक्य सोसाइटी। अनेक छात्रक संग हमहुँ ओहि संस्थाक सदस्य बनल रही। आरम्भ मे संस्था समस्त बिहार प्रांतक मूल समस्या कँ आधार बना क' विचार-विमर्श करैत रहए। चुनल-चुनल विद्वान कँ आमंत्रित कएल जाइत छल। ताहि काल चिंतन-मननक मुख्य विषय रहैक 'भारत कँ स्वतंत्र भेला लगभग एगारह बर्ख बीति चुकल अछि मुदा प्रांतक विकास अवरुद्ध अछि। की बिहार प्रांत दुखित अछि? एकर कारण एवं निदान।'

विचार मंथन सँ जे निष्कर्ष बाहर आयल रहै से एकहि तरहक छल। बिहार कँ उटपटांग तरहँ प्रांत बना देल गेलैए। फराक-फराक प्रांत बन' लेल जे मुख्य-मुख्य तत्व चाही तकर एतय अभाव छैक। सम्पूर्ण बिहार प्रांत मे भाषा, आचार-व्यवहार, भेष-भूषा, खान-पान एवं सोच मे भिन्नता छैक। प्रांतक निर्माण एवं ओकर विकास लेल जे मूल मंत्र हेबाक चाही से भेल भावनात्मक एकता। भावनात्मक एकरूपता एतय छैहे ने आओर हेबो नहि करतैक। बिहार प्रांत ताबे तक दुखिते रहत जाबे तक मिथिला, भोजपुर एवं संथाल नामक तीन गोट अलग-अलग प्रांत बना नहि देल जेतैक।

चाणक्य सोसाइटीक अधिक सक्रिय सदस्य मिथिलेक रहथि। संस्थाक अधिक बैसार मिथिलेक समस्या ल'क' होएक। मिथिलाक व्यथा सँ व्यथित बहुतो मैथिल अपन-अपन विचार उपस्थित करथि। मिथिला एकटा अलग प्रांत होउक ताहि लेल सभ एकमत छल। मुदा मिथिला नामक अलग प्रांत बनत कोना, ताहि प्रसंग पर जखन विवेचना शुरू होइक त' सभ बौक-बधिर बनि जाथि। सम्पूर्ण मिथिलाक जनसंख्याक एक छोट भाग अहि विचार सँ संकल्पित रहथि। मुदा ताहिसँ होअय की? मानल जे विचारक संघर्ष सँ क्रांतिक जन्म होइत छैक, मुदा केहन क्रांति? जवाब भेल अहिंसक क्रांति। क्रांति करतै के? राजनीति मे रहनिहार। ताहि समय मे केन्द्रीय सरकार मायावी समाजवादी भ्रमजाल मे फँसल छल। सोस्लीस्टिक पैटर्न ऑफ सोसाइटी, किछु शब्दक अर्थहीन समूह। प्रधान नेता देशक छोट-छोट समस्या सँ विरक्त संसारक गुरुपद प्राप्त कर' लेल व्यग्र। ओहि प्रधान नेताक कद पहाड़ एतेक उच्च। मिथिलाक राजनीतिक नेताकँ की एतेकटा साहस हेतनि जे ओ मिथिलाक समस्या लेल लोकसभा मे अपन मुँह खोलि पौताह? भ' गेल विचार मे ओझराहटि। हमहूँ ओही हतासाक मनोदशा मे रही। मुदा हमर हृदय मे संचित मैथिली प्रेम-रोग हमर चेतना कँ सदिकाल खोंचारैत रहल।

३

जीविकोपार्जन करैत काल कलकत्ताक जाहि बासा मे रहैत छलहुँ ताहि मे मात्र एकटा कोठली। कोठली पैघ, स्वच्छ, हवादार त' रहबे करै आ ताहू पर सँ हम धूप-दीप जरा ओकरा आरो पवित्र बनौने रही। फर्श पर सतरंजी-जाजिम आ एक कात देबाल सँ सटल मोटरी-चोटरी। ताही समय मे अपना दिसका लोकक एकमात्र गंतव्य कलकत्ता। कलकत्ते मे चाकरी भेटैक आश। हमर कोठली मे सदिकाल अतिथि रहबे करथि। जोगार फिट भेला पर एक अतिथि जाथि ताबे दोसर अतिथि पहुँचि जाथि।

एक दिन बैद्यनाथ बाबू कोठलीक मुँहथरि लग सँ निहोरा केलनि–पिताक आदेश सँ मजबूरन एतय आब' पड़लए। हुनक कहब अनुसारे जँ हम मिथिला मे रहब त' भूखे मरि जायब। कलकत्तेटा मे हमर पेट भरैक सम्भावना। तेँ एलहुँए। तखन अहाँक जेहन कृपा होअय।

बैद्यनाथ बाबू हमर पुरान परिचित, हमरा सँ एक किलास ऊपर, सज्जन लोक, एक हाथ मे छाता आ दोसर हाथ मे टिनही पेटी पकड़ने आज्ञा मांगि रहल छलाह। हुनकर आँखि मे सिनेहक लत्ती पसरल छलनि। हम हड़बड़ाइत आग्रह केलियनि–चरणपादुका खोलि कोठली मे प्रवेश कएल जाए। अहाँक स्वागत अछि। अहि क्षणभंगुर संसारक ई कोठली अहींक थिक।

बैद्यनाथ बाबू पटने विश्वविद्यालयक छात्र रहथि। ओ सामाजिक विज्ञान नामक विषय मे फर्स्ट क्लास फर्स्ट भेल रहथि। प्रखर बुद्धि एवं सरल चित्तक वैद्यनाथ बाबू विभिन्न तरहक प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी शुरू क' देलनि। तत्काल मे काज चलाउ खर्च लेल हुनका कोनो काज चाही। कलकत्ताक बड़ा बाजार भेल मारवाड़ीक गढ़। ओ जाति मुनीम आ मास्टर रखिते छल। जेहन धनिक मारवाड़ी तेहन पगार। बाप बेटा कँ पढ़बै लेल पैंतीस टकाक पगार पर हुनकर नियुक्त केलक। मुदा मारबाड़ी-पुत्र कँ किताब-कॉपी सँ ओहने परहेज जेना माँछ खाइबला कँ तुलसीक कंठी सँ। ओ नहि पढ़त ताहि एबज मे सय टाका मासिक देबा लेल तैयार भ' गेल छल।

बैद्यनाथ बाबू कैँ एक सय पैंतीस टाकाक आमदनी होब’ लगलनि। पढ़ैबाक टेम मे ओ रेडियो सिलोन खोलि देथिन। छात्र गीत सुनै मे मगन भ’ जाए आ बैद्यनाथ बाबू अपन कम्पिटीशनक पुस्तक मे लीन भ’ जाथि।

बैद्यनाथ बाबू एलाइड परीक्षा उतीर्ण केलनि आ एक्साइज विभागक हाकिम बनि मध्य प्रदेशक कोनो शहर लेल प्रस्थान केलनि। बैद्यनाथ बाबू करीब सात-आठ महिना हमरा संगे हमर कोठली मे रहला। हमरा मैथिली प्रेम नामक रोग छल। अपन रोग द’ बैद्यनाथ बाबू सँ गप्प-सप्प नहि करितहुँ से संभव कोना होइत? बैद्यनाथ बाबू संग मिथिला-मैथिलीक मूल समस्या ल’क’ वृहद् चर्चा भेल छल।

गप्पे-सप्पे मे बैद्यनाथ बाबू कहलनि—अहाँ असगरे नहि छी, हमहूँ मिथिलेक छी आ हमरो अहि बातक वेदना अछि। हमरा-अहाँ सनक हजारो मैथिल छथि जनिका मिथिलाक वर्तमान दुर्गति देखि क्षोभ होइत छनि, कष्ट होइत छनि। खास क’ मैथिली भाषाक रचनाकार त’ आरो दुःखी छथि। कारण, क्षेत्र-विशेषक पहिचान भाषेक माध्यमे होइत छैक। मैथिली भाषाक मिथिला सँ बाहर कोनो पहिचान नहि छैक। हिन्दी भाषाक आलोचक मैथिली कैँ भाषा नहि ‘बोली’ मानैत छथि। मैथिली सदृश प्राचीन एवं समृद्ध भाषा कैँ अष्टम अनुसूची मे स्थान नहि देल गेलैए ताहि सँ अधिक अपमानबला बात आरो की हेतैक?

सरकारक उच्च ओहदा पर अनेको मैथिल छथि। मिथिलांचल सँ सांसद एवं विधायक सेहो चुनल जाइत छथि। मुदा केन्द्र सरकार लग किनको चहु अलगिते ने छनि। तकर बाद मिथिलाक जन-साधारण मे चेतनाक अभाव छैक। अकर्मण्यता, आलस्य आ बहुतो तरहक दुर्गुण हमरा सभ मे अछि। समस्या गंभीर एवं प्रत्यक्ष छैक। बाढ़ि आ सुखाड़, सड़क आ बिजली, स्वास्थ्य आ शिक्षा, सभठाम अन्हारे-अन्हार। मिथिला मे सभ तरहक विकास अवरुद्ध छैक। भविष्यो मे कोनोटा इजोतक संभावना नहिएक बरोबरि छैक। मिथिला अलग राज्य बनौ ताहि बात कैँ विराम द’ एखन अपन सभहक सोच कैँ विस्तार करिऔ ने! एहन दयनीय स्थिति मिथिलाक भेलैए किएक, ताहि बात पर विचार करिऔ ने! थोड़े काल मानि लिअ जे हम-अहाँ जागल छी, तखन सभटा मैथिल कोना जागथि तकर मार्ग ने तकिऔ!

बैद्यनाथ बाबू कहिते रहला—विचार मे जखन जड़ता आबि जाए, कल्पना यथार्थ सँ हटि चेतनाक तलहटी मे पहुँचि जाए तखन द्रष्टा बनि जेबाक चाही। द्रष्टाक अर्थ भेल बुद्धि कैँ स्थिर क’, अहंकार कैँ त्यागि, मोन कैँ समस्या सँ विलग क’ विरक्ति भावे वर्तमान कैँ अवलोकन करब। एहने स्थिति मे सही विचार उत्पन्न होइत छैक, जटिल समस्याक समाधान लेल युक्ति भेटैत छैक।

बैद्यनाथ बाबू अपन बात कैँ फरिछाक' कहलनि–हम द्रष्टा बनि अपन मिथिला लेल कइएक बेर विचार केलहुँ। मोन पर जमकल सभ सँ पैघ अवरोध ठाढ़ केलक पलायनवादी विचार। दिशा एवं दृष्टि दुनूक अभाव। भविष्यक बदला अतीत मे घुसिआयल मनोवृत्ति। विचारक छुद्रता एक तरहक व्यभिचार भेल, पाप भेल। हम अहि तरहक प्रवृत्ति कैँ ठेलि-ठेलि क' मोन सँ हटेलहुँ। तखन हमरा मार्ग भेटल। मार्ग अछि मिथिलाक्षरक पुनः स्थापना। मिथिलाक्षरेक माध्यम सँ एकता, संगठन, संकल्प एवं मैथिली भाषाक पहिचान कायम हेतै। सय-सवासय बर्ख पहिने मैथिली भाषा मे एक तरहक जागरण आयल रहै। जयपुर एवं काशी सँ अहि जागरणक उत्थान भेल छलै। ओतहि सँ जँ मैथिली भाषाक रचना कैँ मैथिली लिपि मे कयल गेल रहितए त' आजुक मैथिलीक ई दुर्दशा नहि होइतैक। अबस्से मैथिली भाषा अष्टम अनुसूची मे आबि गेलि रहितए। देवनागरी लिपि मे मैथिली साहित्यक रचना मिथिला-मैथिली लेल अभिशाप बनि गेलैए। हमर सभहक लिपि कैँ बंगभाषी ल' गेलाह। मानलहुँ जे हुनका सभ कैँ सभ तरहक प्रगति कर' लेल कलकत्ता सनक शहर भेटलनि। मुदा बंग भाषाक मधुरता एवं पहिचान लिपिए सँ भेल छैक।

वार्तालापक जटिलता दुआरे हम चिंता मे पड़ि गेल रही। बैद्यनाथ बाबू जाहि विचार कैँ प्रतिपादित क' रहल छलाह से हमरा लेल नव छल। हम कहलियनि–तत्काल मे हम मिथिलाक्षरक महत्त्व कैँ स्वीकार करैत छी। समस्याक समाधान लेल कतहु सँ आरम्भ त' करैए पड़तैक। मुदा मैथिली लिपि मे आब रचना करब कोना संभव हेतैक? एकरा लेल त' बिलम्ब भ' चुकलैए।

बैद्यनाथ बाबू जवाब देलनि–किछुओ बिलम्ब नहि भेलैए। जखने जगलहुँ तखने भोर। मैथिली भाषाक अपन लिपि छैक, अपन व्याकरण छैक तैँ ने मैथिली 'भाषा' भेलै! अपन सभहक मिथिलाक्षरक पुनः स्थापना कोना हेतै तकरा लेल विचार करियौ ने, रस्ता भेटबे करत आ प्रत्येक डेग अन्तिम लक्ष्यक लगीच ल' जायत।

बैद्यनाथ बाबूक ठोर सँ बहरायल वाक्य हमर मोन कैँ बैखरी सँ मध्यमा मे पहुँचा देलक। भगवतीक चिनवार लग, शोणितक रंगक आरतपातक शुभ भावक डरीर मे, दुआरि पर बनल अरिपन मे, एतय तक जे जन-बोनिहारक चिकनी माटि सँ लेबल देबाल पर बनल जानवर एवं चिड़ै-चुनमुनीक चित्र मे हमरा मैथिली लिपिक दर्शन होम' लागल। नेना रही ताहि काल माय-काकी कैँ महाभारत पढ़ैत देखने रहियनि। सुनने छलहुँ जे महाभारत बंग भाषाक लिपि मे छैक। आब मोन पड़ल जे बंग भाषा मे लिखल लिपि त' अपन मिथिलाक लिपि छलै जकरा

माय-काकी धाराप्रवाह पढ़ैत छलीह। सही मे, बैद्यनाथ बाबूक चिंतन मे हमरा धूमिले सही, आशाक किरण देख' मे आब' लागल। हम हुनक वाणी कैँ ध्यान सँ श्रवण कर' लागल छलहुँ।

बैद्यनाथ बाबू आगाँ कहलनि—बहुतो विश्वविद्यालय मे आ सैकड़ो स्कूल-कॉलेज मे मैथिली स्वीकृत विषय अछि। सामान्यतः शिक्षक दरमाहा मे आ छात्र अधिक सँ अधिक अंक प्राप्त करबा मे संतुष्ट छथि। हिनका सभ कैँ मिथिलाक्षरक महत्त्व द' किछु कहब व्यर्थ। पत्र-पत्रिका मे मिथिलाक लिपिक नमूना छापि सभ कैँ मिथिलाक्षर सिखैक आग्रह करब सेहो भेल समय दूरि करब। उद्देश्यहीन कार्य आ उद्देश्यहीन वार्ता कोनो समस्या कैँ मात्र दुर्बलेटा बनबैए। सैह सभ एखन तक भ' रहलैए। मिथिलाक्षरक प्रसार लेल हम उपयुक्त तरहक योजना कैँ सोचि चुकल छी आ एखन ओही योजना द' कहब।

—कहियौ।

—त सुनू। स्कूल खोलू।

—स्कूल?

—जँ मिथिलाक्षर कैँ मिथिला एवं मैथिलीक पहिचान लेल आवश्यक मानैत छियैक त' स्कूल खोलू। मिथिला धनबल, शक्तिबल सँ दरिद्र अछि, मुदा बुद्धिबल सँ परिपूर्ण। एतय विद्याक खजाना छैक। विद्याबले मिथिला शिक्षाक केन्द्र बनाओल जा सकैए। मैथिली साहित्य मे सृजनात्मक पोथी लिखि मिथिलाक मान-सम्मान कैँ विश्व-स्तर पर पहुँचाओल जा सकैए। एतय योग्य शिक्षक एवं संस्कारी छात्रक कमी नहि छैक। प्रथम वर्ग सँ अपन लिपि मे तैयार मैथिली भाषाक पठन-पाठन आरम्भ करू। अपन सभहक धर्मग्रंथ मे हजारो रोचक एवं शिक्षाप्रद खिस्सा-पिहानी भेटत। ओही खिस्सा-पिहानी कैँ लघु बना चित्र संगे छापि क' पोथी तैयार करू आ बालक-बालिका कैँ प्रथम वर्ग सँ पढ़ेनाइ शुरू करू। देवनागरी लिपि मे हिन्दी एवं ग्रीक लिपि मे अँग्रेजी सेहो पाठ्य-पुस्तक मे रहतैक। मुदा मैथिली लिपि मे लिखल पोथी कैँ उच्च स्थान मे राखल जेतै। दस-पन्द्रह बर्खक बाद मिथिलाक्षर जननिहारक एकटा फौज तैयार भ' जेतैक। स्कूल-कॉलेज मे स्वतः मिथिलाक्षर मे छापल किताब कैँ मान्यता भेटि जेतैक। इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र सभटा मिथिलाक्षरे मे छपतै आ छात्र ओकरा पढ़तै। एकरा संगे मिथिला सम्पूर्ण भारत मे शिक्षाक केन्द्र बनि जेतै। विभिन्न विषय मे आ खासक' प्रतियोगिताक दृष्टि सँ शिक्षा ग्रहण कर' लेल लाख मे छात्र एतय आब' लगतै। मिथिला आर्थिक रूपे सबल बनत आ शिक्षेक माध्यम बना मिथिला अपन गरीबी,

भुखमरी सँ मुक्ति पाओत। शिक्षाक केन्द्र बनक लेल मिथिलांचल मे माटि छै, पानि छै, लोक छै आ सभ सँ पैघ संस्कार छैक। बाद मे आनो तरहक उद्योग मिथिला मे स्थापित हेतै। मुदा शिक्षा नामक उद्योग सभ समय मे सर्वोपरि रहतैक।

—एकटा बात आरो कहब। जँ मिथिलाक्षरक बले मैथिली पढ़निहार, मैथिली बजनिहारक फौज तैयार नहि कएल जेतै त' कालक्रमे मैथिली भाषा विलुप्त भ' जेतै। जेना ब्रजभाषा, अवधीभाषाक नामी-नामी कविक रचना कँ हिन्दी भाषा अपना मे आत्मसात क' लेलकै तहिना विद्यापतिक कविता हिन्दी भाषाक अंग बनि जेतै। जेना ब्रजभाषा, अवधीभाषा मृत अवस्था मे पहुँचि गेलए तहिना मैथिली भाषाक दुर्गति हेबेटा करतैक। जाहि मैथिल परिवार मे आधुनिक शिक्षाक विस्तार भ' रहलैए तेहन परिवार मे पारिवारक भाषा मैथिली नहि हिन्दी अथवा अँग्रेजी भ' गेलैए। एकरा रोकलो ने जा सकैए। तँ कहैत छी सावधान भ' जाउ। मिथिलाक्षरक महत्त्व कँ बुझियौ। मैथिली भाषा कँ मृत्युसज्जा पर जेबा सँ रोकियौ।

बैद्यनाथ बाबू किछु समय तक चुपे भेल रहला। हुनकर मुखमंडल गंभीर भ' गेल रहनि। हुनकर आँखि मे अनन्त आकाशक छाया प्रतिबिंबित होब' लागल छलनि। बजैत काल जेना हुनकर धैर्य आँचर मे अपन मुँह झाँपि लेने होअय तेना आक्रोशित भेल कहलनि—भारतक इतिहास मे अशोक एवं अकबरक राज्य भारतक अधिकांश भूभाग मे पसरल छल। मुदा तखनो ओहि दुनू सम्राटक सम्पूर्ण भारत पर सम्राज्य नहि छलनि। सम्पूर्ण भारतक अभिप्राय भेल कश्मीर सँ कन्याकुमारी आ कामरूप कामाख्या सँ द्वारिका तक। ओ त' धन्यवाद दिऔ अँग्रेज कँ जे हमरा सम्पूर्ण भारत देबाक प्रयास केलक मुदा नेताक स्वार्थक कारणे हमरा खंडित भारत प्राप्त भेल। आब हमरा सभ कँ विचार करक चाही जे ओ कोन तत्व छैक जे प्राचीनकाल सँ भारतकँ एकटा राष्ट्र बनौने छैक। राजनीतिक दृष्टिएँ खंडित रहितहुँ ओकरा एक सूत्र मे बन्हने छैक। एकर जवाब भेटत भारतक धर्म मे, साहित्य मे, दर्शन मे। आर्य धर्म एवं आर्य दर्शन भारतक हृदयक धड़कन रहलैए आ आगूओ रहतैक। अंधकार युग सँ बाहर भेल यूरोपक अनेक देश मे दांते, मिल्टन, होमर आदि साहित्यकार भेलाह जे ओतुक्का भगवानक कथा कँ विस्तार करैत ओहि देशक चरित्रक निर्माण केलनि। अपना देश मे त' सभ काल सँ धर्मकथाक चमत्कार रहबे कैलैए। विदेशी आक्रमण, विदेशी षट्यंत्र आ विदेशी साम्राज्य रहितो राम-कृष्णक कथा सभ दिन कायमे रहलैए। इएह हिन्दू विशिष्टता भारत कँ एक राष्ट्र बनौने छैक।

तहिना हमरा सभ कँ ई बुझय पड़त जे ओ कोन मुख्य तत्व छैक जे मिथिला

कैँ भारतक अन्य प्रांत सँ अलग करैत छैक। जवाब भेल स्वाभाविक रूपे जनमल एतुक्का पांडित्य। वैशेषिक न्याय, सांख्य, व्याकरण, यौगिक अर्थात् जतेक तरहक दर्शन संसार मे प्रचलित छैक तकर उद्गम एवं विस्तारक स्थान भेल जनकक भूमि मिथिला। एतुक्का पंडित सनातन धर्मक अनुयायी बनि प्रत्येक दर्शन आ दर्शनक गुटका मिथिलाक्षर मे लिखलनि। ताम्रपत्र आ भोजपत्र मे मिथिलाक लिपि मे एखनो ओ सभ उलपब्ध अछि। तैँ मिथिलाक्षर मे धर्मकथाक पुस्तक अनबै त' सभकैँ रुचि जगतै, अपन माटि सँ उपजल दर्शनक ज्ञान भेटतै आ मिथिला मे मैथिलक जमात ठाढ़ भ' जेतै। इएह सुच्चा मैथिल एतुक्का समस्याक निदान तकतै, एतुक्का सभ तरहक कष्टक लोप क' देतैक। तैँ कहलहुँ जे मिथिला मे क्रांति अथवा जागरण आनैक एकेटा मार्ग छैक आ ओ छैक मिथिलाक्षरक पुनः स्थापना। ई काज स्कूल खोलले सँ संभव हेतै।

बैद्यनाथ बाबूक नजरि झुकि गेलनि। ओ कहलनि—अफसोच जे स्कूल खोलैक योजनाक महत्त्व बुझितहुँ हम अहि काज मे आगाँ नहि बढ़ि सकलहुँ। हमर पिता पोस्टमास्टर। सरकारी अमला मे पोस्टमास्टरक तनखाह सभ सँ कम। हम तीन भाइ आ दू बहिन। सभहक शिक्षा-दीक्षा मे हमर पिता आर्थिक बोझ मे तेना ने दबि गेलाह जे हमरा अपन विचारल काज कैँ तिलांजलि दिअ पड़ल। स्कूल खोलैक योजना मे मिथिलाक सेवा करैत अपन सेवाक नीक गुंजाइश छलै। केदार भाइ, अधिकार भीख मे नहि भेटैत छैक। अधिकार प्राप्त कर' लेल सक्षम होब' पड़ैत छैक आ एकरा बलपूर्वक छीनल जाइत छैक। हमरा सभहक बल भेल मिथिलाक्षरक माध्यमे शिक्षित मैथिलक फौज। हम अगिला सय बर्खक कल्पना करैत छी जे जँ मिथिलाक्षर कैँ पुनः स्थापना नहि कएल जेतै त' अहिना मैथिल सभा करिते रहि जेताह, पत्र-पत्रिका मे विशिष्ट लेख लिखतहि रहि जेताह, मंच पर सँ पांडित्यपूर्ण भाषण करिते रहि जेताह मुदा मिथिला-मैथिलीक कोनो टा उपकार नहि क' पौताह।

बैद्यनाथ बाबू हाकिम बनि कलकत्ता सँ प्रस्थान केलनि। हुनकर कहल विचार मोन मे धमगज्जर मचबैत रहल। मैथिली रोगी बहुत दिन सँ रही। कतहु सँ एकर निदानक मार्ग नहि भेटल छल, जनिका सँ अहि बात ल'क' वार्तालाप होअय। सभहक आँखि मे अतीतक चित्र। हमर पिता-पितामह एहन छलाह, ओहन छलाह। सारा परहक तुलसी मे जल ढारैत रहू, गप्प कैँ मथैत रहू। मुदा बैद्यनाथ बाबूक ठेकनगर विचार किछु सार्थक करैक परामर्श छल। मिथिलाक सेवा करैत धन कमेबाक सेहो गुंजाइश। मोन स्थिर भैए ने रहल छल।

मुल्ला नसरुद्दीन घोड़ा पर सवार छलाह। घोड़ा एकहि स्थान पर चक्कर काटि

रहल छल। कियो पुछलक—मुल्लाजी, कत' जा रहल छी? ओ जवाब देलथिन—ई बात घोड़ा कैँ पुछियौक। हमर मोन एके स्थान पर चक्कर काटि रहल छल जे स्कूल खोलैक विचार सही छल। मुदा ई होयत कोना? ई असगरक काज नहि। आरो लोकक सहयोग चाही। एकाएक छोटका कका नेताजी पर ध्यान गेल। नेताजी मिथिलाक सेवा निमित्ते जीवि रहल छलाह। जीवनदानी लग स्कूल खोलैक स्कीम ल'क' जेबाक चाही। मुल्ला नसरुद्दीनक घोड़ा एक स्थान पर चक्कर कटनाइ छोड़ि मंजिल दिश बिदा भ' गेल।

4

लगभग एक महिनाक बाद गाम अयलहुँ। प्रातःकाल दीपकजीक ओहिठाम पहुँचलहुँ। संयोग, कका ओतहि छलाह। सूर्योदय नहि भेल रहै मुदा भोरुका झलफली साफ भ' गेल छलै। दीपकजी अखड़ा चौकी पर बैसल रहथि। कने हटल ब्रेंच पर कका बैसले-बैसल तमाकू कँ तरहथ्थी पर रगड़ि रहल छलाह। सामने परती मे फूलक गाछ सँ हटल एकटा मड़बी छलै। मड़बीक ओसार पर बालकृष्ण चौधरी उर्फ बाले बाबू लोढ़ी-सिलौट पर भांग पिसि रहल छला। बाले बाबू त्रिकालदर्शी रहथि। साँझू पहरक भोग विलासी, भोरुका कागाबासी आ दुपहरियाक सत्यानाशी, तीनू उखराहाक भांगक ओ प्रेमी छलाह। हुनकर नयनक ज्योति कम भ' गेल रहनि। आँखिक जाँचकाल डाक्टर श्रीमोहन मिश्र पुछने रहथिन–नशो करैत छी? बाले बाबू जवाब देने रहथिन–नारायण, नारायण! श्रीमान्, हम कोनो तरहक नशा नहि करैत छी। मात्र भांग खाइत छी।

–नशा नहि करैत छी, मात्र भांग खाइत छी। भांग कतेक खाइत छी?

–श्रीमान्, भांग खएबा मे उर्दी कयने छियैक।

–उर्दीक तात्पर्य?

बाले बाबूक जवाब छलनि–श्रीमान्, जखन जतेक भांग भेटल ओकरा उदरस्थ क' लेलहुँ। सैह भेल उर्दीक तात्पर्य।

–वाह, वाह। तखन सुनिए लिअ'। अहाँक आँखिक ज्योति कम भ' रहलए। जँ भांग खाइते रहब तखन आन्हर भ' जायब।

–बाले बाबू आन्हर होथि अथवा त्रिनेत्रक सोआमी। ओ भांग खायब नहि छोड़ताह। एखन थोड़ेक गामक छौंड़ा हुनका घेरि क' बैसल छल। पिसैकालक भांगक सुगन्धिक मजा लूटि रहल छल।

हम दीपकजीक चौकीक एक कात मे बैसि रहलहुँ। मोन मे खलबली मचल रहए तँ बैद्यनाथ बाबू सँ ग्रहण कएल विचारक पाठ करए लगलहुँ। दीपकजी एकाग्र

भेल हमर सभटा बात सुनलनि आ तखन कहलनि–अइ सँ बेशी नीक विचार भैए ने सकैए। अपन सभहक लिपिक पुनः स्थापना मैथिली साहित्यक लेल वरदान हेतैक। मैथिल धिया-पूता कैँ जँ नेनहि सँ मिथिलाक्षर सिखाओल जेतै त' एकर प्रचुर लाभ हेबेटा करतैक। मिथिलाक सभ जाति मे सजगता औतैक। मैथिली भाषा कैँ पाठक चाही ने! तकर अभाव नहि रहतैक। अहि तरहक प्रारम्भिक शिक्षाक पाठशाला मिथिलाक कोन-कोन मे खुजबाक चाही। शिक्षाक प्रसार संगे आर्थिक सम्पन्नता। हम बैद्यनाथ बाबूक देल विचार सँ शत-प्रतिशित सहमत छी।

ब्रेंच पर बैसल ककाजी हमर एवं दीपकजीक वार्तालाप सुनलनि आ कि नहि सुनलनि तकर निस्तुगी किछु कहब कठिन छल। ओ चौकी लग आबि तमाकूक एक जूम दीपकजी कैँ देलथिन। फेर चुटकी मे तमाकू, हमरा दिश हाथ बढ़बैत कहलनि–हैए लैह तमाकुए, खा।

–हम तमाकू नहि खाइत छी।

–अएँ हौउ, तौँ पढ़ब-लिखब समाप्त क' नोकरी करैत छह। आब तौँ बालिग कहिया हेब'?

हम चुप्पे रहलहुँ। कका दीपकजीक चौकीक दोसर कातमे बैसि गेलाह आ कहलनि–तमाकू नहि खाइत छह से नीके करैत छह। आदति कोनो प्रकारक होअय अधलाहे कहाओत। चाह पिबाक आदति, तकर बाद तमाकू खाइक आदति। मुदा सभहक परपितामह अखबार पढ़ैक आदति। अखबारक पहिल पृष्ठ पर जाहि मनुक्खक फोटो देखबहक तकरा भोरे-भोर देखला सँ पछिला दू जन्मक पुण्यक नाश भ' जाइत छैक। मुदा तैँ की? अखबार पढ़ैक आदति की छुटैत छैक?

हम ककाक बात कैँ अलगनी पर टाँगि दीपकजी कैँ अपन कहल विचार कैँ आगाँ बढ़बैत कहलियनि–मुदा स्कूल खोलैक काज हमरा बुते असगरे संभव नहि हेतै। अहिमे अधिक सँ अधिक लोकक सहयोग चाही। खास क' एहन लोक जे बुद्धिमान होथि आ मिथिलाक सेवा कर' लेल आतुर होथि, तनिकर जँ मार्गदर्शन भेटि जाए त' सोना मे सुगंध। तत्काल मे हमरा छोटका कका नेताजी पर ध्यान आकृष्ट भेलए। ओ ज्ञानी संगे जीवनदानी छथि। ओ स्कूल खोलैक महत्त्वपूर्ण सुझाव द' हमर विचार कैँ आरो पुष्ट क' सकैत छथि।

पित्ती आ भातिजक तफरका। मुदा दीपकजी एवं कका समतुरिया। दुनू मे भरि छाबाक यारी। यद्यपि दीपकजी कैँ कका नेताजीक प्रतिए एलर्जी छलनि। तथापि ओ हमर बात कैँ अनुमोदन करैत बजला–हमर यार नेताजी। तौँ अबिलम्ब कौआली संग लहेरियासरायक लेल प्रस्थान कर'।

हमर छोटका कका विदुर नीतिक अनुगमन करैत अपन पैतृक सम्पत्ति कैँ निपुणता सँ स्वाहा क' रहल छलाह। मुदा कका सरल प्रवृत्तिक सज्जन लोक रहथि। कका ककरो अहित करथिन अथवा ककरो कुवाच्य कहथिन से सोचलो ने जा सकैत छल। मुदा दीपकजीक छोड़ल व्यंग्य-वाण 'हमर यार नेताजी, कका कैँ आपा सँ बाहर क' देलक। रंजे ककाक टीक फरफहराए लागल। कका चौकी सँ उठि क' तमाकू थुकरलनि, तखन फुफकारैत बजला–ओहि हरशंख लग हम फेर जाउ, कथमपि नहि, कथमपि नहि। ओ नेता नहि राकस थिक। अनेरे भुकभुका क' जान द' रहलए।

अपन नेताजी कैँ मनुक्खक योनि मे सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वगुणी माननिहार ककाक एखुनका बेसुमार क्रोधक कारण की छल तकर स्पष्टीकरण दीपकजी केलनि।

चुनाव मे कका तन-मन-धन सँ नेताजीक प्रचारक काज केलनि। कका नेताजीक संग गामे-गाम, टोले-टोल महिनो तक घुमैत रहलाह। नेताजीक व्यवहार अजीबे तरहक छल। हुनकर विचित्र आचरण सँ आजिज भ' कका कइएक बेर हुनका सुझाव देलथिन जे फलाँ-फलाँ गामक फलाँ-फलाँ प्रतिष्ठित व्यक्तिक दलान पर जा क' हुनकर आशीर्वाद प्राप्त करब जरूरी अछि। तखने भोट भेटत। मुदा नेताजी ककाक सुझाव पर कान-बात नहि देलनि। नेताजी जखन मुसलमानक गाम जाथि तखन अप्रत्याशित तरहें चंचल भ' जाथि। मुसलमान लग जा क' नेताजी अपन कुर्त्ता उठा लेथि आ कहथि–देखहक हम जनेउ तोड़ि क' फेकि देने छियैक। हम सुच्चा सोस्लीस्ट छी ने!

नेताजीक अहि तरहक उटपटांग व्यवहारक प्रभाव क्षेत्रक हिन्दू भोटर पर पड़लैक। एक त' ओहिना काँग्रेसक बिहाड़ि बहैत छलै आ ताहि पर सँ नेताजीक उद्दंड आचरण। चुनाव मे नेताजीक भयंकर पराजय भेलनि। हुनकर जमानतो जप्त भ' गेलनि। दुर्वाशाक पुत्र नेताजी अपन पराजयक क्रोध एवं क्षोभ कके पर उतारलनि–जाहि चुनाव मे तोरा सनक डपोरशंख प्रचार करैत रहत ओतय प्रत्याशीक सर्वनाश हेबेटा करतैक। तोँ एखने हमर आँखिक सोझाँ सँ बाहर निकलि जाह।

ककाक माथ मे विभिन्न तरहक भाव एकहि संग उत्पन्न भेल रहनि। सर्वप्रथम कका छगुन्ता मे रहथि–कहू त', एकरा पाछाँ-पाछाँ बौएलहुँ, अपन सम्पत्तिक नाश केलहुँ, अदना-अदनाक पयर पखारलहुँ। तकर बादो ई केहन क' हमर तिरस्कार केलकए। एकर ई छिच्छा? फेर कका कैँ अपना पर क्रोध जगलनि– हम सभ दिनुका मूर्ख छी आ मूर्खे रहब। अधिक काल बिन विचारल करैत छी। तकर फल त' भेटबे ने करत!

अन्त मे कका कैँ नेताजीक प्रतिए घृणाभाव जाग्रत भेलनि। अहंकारी मनुक्ख

कहूँ नेता बनलए! एहन खटाउँस प्रवृत्तिक लोक लग हम जँ कहिओ फेर सँ आबी त' हमरा सँ पैघ पतित दोसर के हैत?

मलेरियाक रोगी कैँ तीत-अकत कुनैन पिअ पड़ैत छैक। मैथिली-प्रेम रोगी ककाकैँ जँ तीत-अकत गप्प सुन' पड़लनि त' एकरा लेल अफसोच करब हितकारक नहि। विचारक आदान-प्रदान मे उनटा-पुनटा होइते छैक। असल बात भेल संकल्प। संकल्प अहि बातक जे मिथिला लेल किछु करी। हमर मोन कराहि रहल छल। स्कूल खोलैक बात, मिथिलाक्षरक पुनः स्थापनाक बात हमर संकल्प कैँ दृढ़ कयने रहए। ककाक नेताजी जीवनदानी संगहि प्रकांड पंडित छथि। हुनका जखन बैद्यनाथ बाबू बला बात कहबनि त' अबस्से प्रसन्न हेताह आ नीक-नीक विचार देताह। तकर निश्चय क' हम असगरे लहेरियासराय लेल बिदा भेलहुँ।

कबिलपुर गामक मुहथरि लग गुमती। गुमतीए लग मिस्टर टमाटरजी भेटलाह। ओ नेताजीक चेला छलाह, आब नहि छथि। टमाटरजी कहलनि—नेताजीक लग जा रहल छी, सावधाने रहब। मधुबनीक बाबू साहेब कैँ कियो उकसा देलकनि जे जँ नेताजी अधिक दिन तक हुनकर घर मे रहथिन त' घर कैँ हथिया लेथिन। तुरंत घर खाली कर' लेल बाबू साहेब दिस सँ ओकीलक नोटिस नेताजीक लग पहुँचि गेलैए। नेताजी उग्र भेल बमकि रहल छथि, तैँ चेता देलहुँ अछि।

टमाटरजीक असलीका नाम छल ठाकुर विमलनाथ सिंह। ओ नेताजीक होनहार चेलाक अग्रिम पाँत मे रहथि। प्रत्येक दिन विभिन्न विषय पर नेताजीक प्रवचन होइत रहए। विमलनाथ तकरा श्रवण करथि आ गुरुवचन अनुसारे अपन आचरण पर लगाम लगाबथि। एक दिन नेताजीक प्रवचन टमाटर पर भेल रहनि। टमाटर फलो थिक आ तरकारियो थिक। टमाटर मे विटामिन एवं खनिज, दुनू भरल अछि। टमाटर मे एतेक ने गुण अछि जे जँ एकर वर्णन कर' लागी त' जिस्ताक जिस्ता कागत आखर सँ भरि जायत। अँग्रेज एतेक हृष्ट-पुष्ट किएक होइए, ओ नित्य टमाटर खाइए। मेमिन एतेक भुभुक्का गोर किएक होइए, ओ टमाटरक व्यंजन, तरकारी खाइए। तैँ अपन देशक लोक कैँ टमाटर अबस्से खेबाक चाही।

बस भ' गेल। विमलनाथ कैँ नुस्खा भेटि गेलनि। हुनकर पत्नी ओना त' देखै मे सुन्नरि छलथिन मुदा हुनकर वर्ण अन्हरिया राति जकाँ कारी छलनि। विमलनाथ पसेरीक पसेरी टमाटर कीनि क' आन' लगलाह। तरकारीक कोन कथा अधिक काल टमाटरे खा क' विमलनाथ अपन प्रेयसीक संग आलिंगनबद्ध भेल दिन-राति बिताब' लगलाह। एकर वाजिब प्रतिफल भेलै। महिना बितैत-बितैत विमलनाथक शरीर चेरा बनि गेलनि, पेट कोहा बनि बाहर निकलि गेलनि आ हुनकर समग्र काया इतिहासक

किताब मे छापल वासगो-डि-गामा बनि गेलनि। विमलनाथक प्रियदर्शनीक देहक चमड़ी बीया लेल राखल भाटा जकाँ घकुचि गेलनि। शीलवती, लज्जावती, संकोची विमलनाथक प्राणेश्वरी एक दिन सभ तरहक मर्यादाक कोठी कैँ फोड़ि धिपल करौछ महक फोड़न जकाँ फरफराइत अपन सोआमी सँ कहलथिन–हरौ कोढ़िया, हरौ जनपिट्टा, खबरदार! जँ आब एकोटा टमाटर घर मे अनबें, जँ फेर कहियो ओहि सरधुआ नेताक प्रवचन सुनै लेल जेबें त' तोहर कपार पर माँड़ ढारि देबौ आ हम फँसरी लगा प्राण त्यागि देब।

विमलनाथक पत्नीक चिकरब-भोकरब सुनि मोहल्लाक जनानी-पुरुष जमा भ' गेल छल। की भेलै हौ, की भेलै? बुझि लिअ जुलूम भ' गेलै। बेरा-बेरी सभटा मोहल्लाक लोक सही बातक जानकारी हासिल केलनि। सभटा आफदक जड़ि छल टमाटर। मार बाढ़नि एहन टमाटर कैँ। ओहि दिनक बाद सभ कियो विमलनाथ कैँ टमाटर कहि सोर पाड़' लगलनि। कालेक्रमे विमलनाथ मिस्टर टमाटर नामे प्रसिद्ध भ' गेलाह।

मिस्टर टमाटरजीक चेतेलाक बाद डेराइते-डेराइते हम नेताजीक निवासस्थान पर पहुँचल रही। पहिलुके दृश्य, पहिलुके समाखा। कपार पर हाथ रखने नेताजी परतीक एक कात मे बैसल रहथि। थोड़ेक हटल परतीक दोसर कात हुनक चेलाक झुंड बैसल रहए। सभटा चेला उदास रहए आ भनभना रहल छल। चेलेक झुंड मे हमहूँ सन्हिया गेलहुँ। बगल बला चेला हमर कान मे मुँह सटबैत फुसफुसेला–समग्र मिथिलांचल मे जनिक चर्चा होइत होअय, जनिक अभियानक डंका पटना संग दिल्ली सरकार मे हरकम्प मचौने होअय, जनिक आगाँ कलक्टर, एस.पी. नतमस्तक भेल ठाढ़ होअय तेहन ख्यातिप्राप्त नेता कैँ डेरा खाली करैक नोटिस मधुबनीक बाबू साहेब पठाबथि से की नीक बात भेलै? ई त' नेताजीक संगे सम्पूर्ण मिथिलाक अपमान भेलै ने!

हम चुप्पे रहलहुँ। गंभीर भेल वातावरणक नाप-तौल करैत रहलहुँ। कहबी छै जे विपत्ति कखनो असगरे नहि अबै छै। नेताजीक डेरा खाली करैक विपत्ति त' छलनि, ताहि काल दोसर विपत्ति हुलकी देलकनि। नेताजीक प्रधान शिष्य जे उड़िया बाभन छलाह आ जे मिथिलाक सेवा कर' लेल कटिबद्ध रहथि, हाथ मे अखबार नचबैत ओतय पहुँचलाह आ हँफैत बजलाह–सुनि लिअ अजुका समाचार। मिथिला अलग राज्य बनय तकर पिहले-पहिल शुरुआत केलनि अपन नेताजी। मुदा अखबार मे बाबू जानकी नंदन सिंहक नाम मोटका आखर मे छपलए। समाचारक आशय अछि जे बाबू जानकी नंदन सिंह पहिल व्यक्ति छथि जे मिथिला अलग राज्य बनौक तकर

सूत्रपात केलनि। समाचार मे अपन नेताजीक ने नाम छनि आ ने कोनो तरहक चर्चा। एहन अनहेर ने कहिओ भेल छल आ ने हैत।

उड़िया बाभन जे सम्प्रति मिथिलेक बासी छला तनिक आनल समाचार विस्फोटक छल। आगि मे घी पड़ि गेलै। नेताजीक गरदनि कनेक सोझ भेलनि आ मुखमंडल बक्र बनि गेलनि।

किछुए महिना पूर्वक कथा छल जे बाबू जानकी नंदन सिंह कलकत्ता मे पत्रकार सम्मेलन मे घोषणा कयने रहथि जे मिथिला एक पृथक प्रांत बनय। तकरा लेल ओ मिथिला जेताह आ आन्दोलनक शुरुआत करताह। ई समाचार सुनि बिहारक मुख्यमंत्री सही मे काँपि गेल रहथि। ओ अविलम्ब पश्चिम बंगालक मुख्यमंत्री सँ सम्पर्क कयने छलाह। अन्ततोगत्वा बाबू जानकी नंदन सिंह आसनसोल मे गिरफदार भ' गेल रहथि। बिहार एवं पश्चिम बंगालक सभटा दैनिक समाचार पत्र मे ई समाचार प्रथम पृष्ठ पर छपल रहए। एखन जे उड़िया बाभन समाचार पत्र अनने रहथि से पटना सँ प्रकाशित अँग्रेजी भाषाक दैनिक समाचार पत्र 'इन्डियन नेशन' छल। ओही मे मिथिला अलग राज्य बनौक ताहि संबंधी लेख छपल छल जाहि मे बाबू जानकी नंदन सिंहक वृहत् चर्चा छल।

नेताजीक उड़िया चेला अपन आनल अखबार कैँ भूमि पर पटकि देलनि आ खोखिआइत बजला—केलक किओ आ पौलक किओ। मिथिला अलग प्रांत बनौक तकर समाचार अपन नेताजीक चर्चा बिनु अपूर्ण अछि। ई अखबारक अज्ञानताक परिचायक अछि।

सभटा समाचार श्रवण क' नेताजी रंजे काँपय लगलाह। हुनकर दुनू नेत्र लाल-टरेस भ' गेलनि। हुनकर मुँह सँ असंसदिए शब्द बाहर निकल' लगलनि। सत्य मे, कतेक झंझावात कैँ पार क' मिथिला अलग हेबाक मांगक ओ असगरे अलख जगौने छलाह, से हुनकर सभटा चेला कैँ बुझल रहै। मुदा प्रांतक अखबार मे तकर कोनो टा चर्चा नहि। एहि संताप कैँ सहब असंभव छल।

बात एतबहि पर समाप्त भ' जइतए त' नीक रहितैक। मुदा से नहि भेलै। हम नेताजीक तुरुप बनल मुखमंडल कैँ निहारिए रहल छलहुँ तखने यादवजीक आगमन भेल छल। यादवजी उठौना दूध देब' आयल रहनि। बिन छड़बला खिड़की पर सँ आलमुनियमक डेकची कैँ जल सँ पखारि सबा एक सेर दूध नापि यादवजी डेकची कैँ झाँपि देलनि। तखन ओ सोझे नेताजीक लग मे आबि क' कहलनि—सुनलहुँ जे अहाँ मिथिला राज्य बनेबाक एलान केलहुँ अछि, अहीँ एकर अगुआ छी। नीक बात। संसार मे जन्म ल' क' परमार्थक काज करी त' पुण्य भेटैत छैक। मुदा हमर बात

कँ ध्यान सँ सुनि लियौ। हम भुइयाँक लोक छी तेँ ठोकल बात कहब। अहि तरहक काज कँ आन्दोलन कहल जाइत छैक। आन्दोलन एक प्रकारक युद्धे भेल। युद्ध लेल सेना चाही। पहिने सेनाक निर्माण क' लिअ तखन अपना कँ सेनापति बनाउ। बिना सेनाक सेनापति बनब त' टिटियाइते रहि जायब।

एतबा बाजि क' यादवजी अपन दूध बला कनस्तर उठौलनि आ प्रस्थान क' गेलाह। आगि मे घी त' पहिने पड़ि चुकल रहै। आब आगि मे की पड़ितैक? आगि मे तेजाब पड़ि गेलै से कहब उचित हैत। एकटा मूर्ख यादव इंगलैंड सँ पी-एच.डी. डिग्रीधारी कँ उपदेश देबाक दुस्साहस करए? अनर्थ, घोर अनर्थ! एकरा नेताजी कोना सहितथि? आवेश मे आबि नेताजी ठाढ़ भेलाह आ पयर पटक' लगलाह। फेर थरथराइत दुनू हाथे माथ पकड़ि जमीन पर बैसि रहलाह। जेना मिर्गीक रोगी छटपटाइए तहिना इर्खा नामक मनोरोग सँ ग्रस्त नेताजी अहुछिया काट' लगलाह। अनुशासन मे आकंठ डूबल शिष्य समुदाय मे थोड़ेक चंचलता अवश्ये अयलै। मुदा उत्पन्न भेल विषम परिस्थिति मे ओ सभ की करथि तकर निर्णय नहि क' सकलाह। चेलाक समूह दुख मे थकुचल अपन प्रिय नेता कँ मात्र निहारैत रहि गेलाह।

नेताजीक प्रतिए हमर विश्वास डगमगा गेल। हम नेताजीक निवासस्थान सँ निराश भेल वापस बिदा भेलहुँ। उदास आ खिन्न सनक मनोदशा छल हमर। बैद्यनाथ बाबूक देल टिप्स मे एकटा लुत्ती नुकायल रहै। स्कूल खोलब, मिथिलाक्षरक माध्यमे धिया-पूता कँ ओना मासी धँग सिखायब एकटा एहन काज छलै जकरा हम अति महत्त्वपूर्ण काज बुझैत रहियैक। अही काज मे सहयोग लेल हम पैघ आश ल'क' नेताजी लग आयल छलहुँ। मुदा वाह रे नेताजी! नेताजी त' अपन अहमक संग कुस्ती लड़ि रहल छलाह।

मोन ब्याकुल छल। मैथिली-प्रेम रोग अपन राग अलापिए रहल छल। अनिर्णयक स्थिति मे जे मानसिक क्लेश होइत छैक ताही हालत मे हम अपन मित्र महंथ मदन मोहन दासजीक डेरा लेल बिदा भ' गेलहुँ।

5

महंथ मदन मोहन दासजी सँ पहिल भेट पटना सँ बनारस जेबा काल ट्रेनमे भेल छल। मदन भाइ इलाहाबादक क्वीन्स कॉलेज मे आ हम काशीक उदय प्रताप राजपूत कॉलेज मे, दुनू आइ.ए. क प्रथम बर्खक छात्र रही। दुनू कँ मोंछक पम्ही उगले छल। बुद्धि मे, व्यवसाय मे आ वयस मे समतुरिया। दुनू मे अटूट मित्रता कायम भ' गेल छल। हमरा लेल मंहथजी मदन भाइ आ हुनका लेल हम केदार भाइ।

हमरा देखिते मदन भाइ हुलसि क' हमर स्वागत केलनि आ कहलनि—अहाँक पत्र भेटि चुकलए। हम प्रतीक्षे मे रही। आउ, भीतरे आबि जाउ।

हम मदन भाइक ड्राइंग रूमक सोफा पर बैसि रहलहुँ। मदन भाइ हमर चेहराक उजड़ल कांति कँ ठेकनबैत प्रश्न केलनि—केदार भाइ, अहाँ उदास छी, की भेलए?

मदन भाइ चिंतित भेल प्रश्न कयने छलाह। हमर बकार फुटिए ने रहल छल जे हुनका हम जवाब दितियनि। हम टुकुर-टुकुर हुनका दिस तकैत रहलहुँ। मदन भाइक खबास लखन जल सँ भरल गिलास हमरा समक्ष मे राखि देलक। हम एकहि सांस मे गिलासक सभटा जल पीबि गेलहुँ। मोन स्थिर भेल, चित्त मे थोड़ेक स्फूर्ति आयल। हम बाजब शुरू कयल। कलकत्ता मे बैद्यनाथ बाबू सँ प्राप्त स्कूल खोलैक परामर्श, गाम मे दीपकजी द्वारा देल प्रोत्साहन, स्कूलक उपयोगिता, अन्तिम लक्ष्य मिथिला नामक पृथक प्रांतक स्थापना लेल एक फौजक निर्माण, ताही क्रममे कबिलपुर मे नेताजीक ओहि ठामक यात्रा, नेताजीक ओतय मचल घमासानक विवरण इत्यादि सभ किछु हम एकहि स्वर मे मदन भाइ कँ सुना देलियनि। मदन भाइ शांत भेल हमर अनुराग एवं उपराग कँ सुनलनि। ताही बीच लखन नास्ता-चाह अनलक। खायब समाप्त केलहुँ। मोनक पीड़ा शब्दक माध्यमे निकलि चुकल रहए। मुदा हारल खेलाड़ी जकाँ मोन हीन भाव सँ तखनहुँ ग्रस्ते रहि गेल छल।

मदन भाइ सभ दिनुका अल्प-भाषी। मुदा हमार मोनक कष्ट सँ मर्माहत ओ बाचाल बनि गेलाह, कहलनि—लगभग छह-सात सय बर्खक गुलामीक बाद अपन

देश स्वतंत्र भेलए। एखन तक देशक मात्र दू गोट चुनाव सम्पन्न भेलैए। अगिला बर्ख तेसर चुनाव हेतै। राजतंत्र अथवा अँग्रेजक क्रूरतंत्रक बाद लोकतंत्रक स्थापना भेलैए। तखन मिथिला नामक अलग राज्य नहि बनलैए त' अन्हेर नहि भ' गेलैए। जँ मिथिला नामक प्रांत बनिओ गेल रहितैक त' की आकाश सँ अमृत बरिस' लगितैक? केहन-केहन सांसद आ विधायक चुनाव जीति रहलैए तकरा सभकँ ठेकना क' देखियौ ने! अही जमात मे सँ ने मिथिला प्रांतक मंत्री, मुख्यमंत्री बनितैक। कल्पनाहीन एवं दृष्टिहीन विधायक मिथिला मे कोन तरहक रामराज्य अनितैक जे एखन नहि एलैए आ जकरा लेल अहाँ घनघोर चिंता मे पड़ि गेलौं। हमर दृष्टि मे एतुक्का समस्याक निदान मिथिला नामक पृथक प्रांत मे नहि छैक। एकर निदान छैक सम्पूर्ण जागरण मे। एखन अहिठामक जनसंख्याक मात्र पाँच प्रतिशत जे पूर्वहि सँ धन एवं विद्या सँ परिपूर्ण रहलैए अपना कँ मैथिल बुझैत छथि? जनसंख्याक पंचानबे प्रतिशित जे पछिला कइएक सय बर्ख सँ दलित, प्रताड़ित आ थकुचल अछि तकरा इहो ने बुझल छैक जे मैथिल कोन तरहक जीव होइए। मिथिला मे रहनिहार सभ मैथिले छथि तकर जानकारी एतुक्का जनसंख्याक विशाल भाग कँ नहि छैक। तखन केदार भाइ, अहाँक भीतर एतेक हाहाकार किएक मचल अछि? अपन मातृभूमि लेल किछु करी, स्कूल खोली अथवा आरो आन तरहक नीक-नीक काज करी से भेल उत्तम विचार। मुदा अहि काज लेल धैर्य राखब जरूरी अछि। अगुतेला सँ कखनहुँ की कोनो काज भेलैए जे एखन हेतै?

मदन भाइ धारा प्रवाह बजिते रहलाह—मिथिला मे पंडित छथि, बुधियार छथि, बुद्धिजीवी छथि। मुदा सभटा विद्वान एकटा खास संभ्रांत जातिक छथि। सभहक दुआरि पर अहंकारक माला टांगल छनि। ओ भाषण देबा मे कुशल छथि, कविता कर' मे निपुण छथि, कथा लिख' मे पटु छथि आ आन-आन तरहक गुण सँ सेहो विभूषित छथि। मुदा तमाम पंडितक बीच एक दोसरा लेल प्रतिस्पर्धा छनि। कियो किनको सँ छोट नहि। सभटा पंडित कँ एक मंच पर आनब असंभव। एक दोसराक आलोचना करैत-करैत अपन-अपन अलग-अलग मंडली बना क' अपन भितरका इर्खाक पूजे टा क' रहल छथि। आब विचारियौ जे अहि ठामक पंडितक एहन स्वभाव किएक छनि। एकर जवाब अछि जे अत्यधिक संस्कारी, अत्यधिक पांडित्य एहन विरल स्वभाव कँ जन्म दैत अछि। वशिष्ठ एवं विश्वामित्र दुनूक तर्क-वितर्क आ एक दोसरा कँ पछाड़ैक जन्मजात प्रवृत्ति। तकरे प्रतिफल अछि जे सभटा पंडित अपन-अपन अहंकारक ओढ़ना मे नुकायल छथि। केदार भाइ, अहाँ एखन जाहि नेताजीक ओतए गेल रही से एहने अहंकारी बुद्धिजीवीक उदाहरण भेलाह। तँ हमरा-अहाँ कँ बुझैक

जरूरी बात भेल जे मिथिलाक पांडित्य फूल नहि, काँट बनि गेलैए। ई काँट जाबे तक अगिला पाँत मे बनल रहतैक, विद्यापति समारोह होइत रहतै, मुदा मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रगति मे मुख्यतः की बाधक छैक तकर सही-सही जानकारी कहियो नहि भेटतै।

मदन भाइक शब्दक थाप सोझे कनपट्टी पर बजरैत रहल। सदिकाल चुप रह' बला मदन भाइ आगि उगलि रहल छलाह। हम हुनकर तर्क कैँ ध्यान सँ सुनि रहल छलहुँ। मदन भाइ आगाँ कहलनि—मिथिला राज्य बनौक। आब मिथिला राज्य हेतै कतेकटा? एकर सीमाक आकलन कोना हेतै? बहुत तरहक गप्प सुनबै। बहुत तरहक नक्शा देखबै। बहुत तरहक खिस्सा-पिहानी सेहो सुनबै। राजा जनक, राजा मिथि सँ ल'क' अँग्रेजक राज्य तकक मूल्यांकन करबै। मुदा सत्यक धरातल पर सत्य एतबेटा जे जतए तक लोक मैथिली भाषा बजैए मिथिला ततबेटा। आब मैथिली बाज' बलाक सीमा कतेक दूर तक? एखन नेपालक मैथिली बाज' बला जनसंख्या कैँ बिसरि जाउ। मात्र बिहार नामक प्रांत मे मिथिलाक खोज करी। मधुबनी, दरभंगा आ तकर आगाँ समस्तीपुर जाइत-जाइत मैथिली भाषा कैँ त' रोग पकड़ि लेलकैए। मैथिली प्रध्यापकक उक्ति—जनिका बुते मैथिली भाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारणो ने कएल होइत छनि ओ मैथिल कोना भेलाह? आब बुद्धि कैँ ठेस लागब आरम्भ भ' गेल ने? आब बाजू जे मिथिलाक सीमा कत' तक?

मदन भाइ हमर आँखि मे देखैत कहलनि—मधुबनी जिला मे राजनगर। राजनगर स्टेशनक दक्षिण-पश्चिम कोन मे लगभग आध कोसक दूरी पर हमर स्थान मिर्जापुर। हम मुज्जफरपुरक भूमिहार मिर्जापुर स्थानक महंथ। पाँच बर्खक रही तखने महंथ बनलहुँ। मात्र अध्ययन कर'काल बाहर रहलहुँ। बाँकी सभ समय अपन स्थान मे रहि महंथक दायित्वक निर्वहन कयलहुँ। स्थानक सभटा कर्मचारी सँ मैथिलीए भाषा मे वार्तालाप कयलहुँ। आब अहाँ सँ हमर प्रश्न अछि, की हम मैथिल छी? हम हड़बड़ाइत जवाब देलियनि—अहाँ सय फीसदी मैथिल छी।

—फूसि। केदार भाइ, अहाँ एकदमे सँ फूसि बजैत छी। हम ने बाभन आ ने कर्ण कायस्थ। हम मुज्जफरपुरक भूमिहार। मैथिल पंडितक परिभाषा मे हम कथमपि मैथिल नहि भ' सकैत छी।

मदन भाइ कैँ की जवाब दियनि किछु फुराइए ने रहल छल। हमरा सान्त्वना दैत ओ कहलनि—दुख नहि करू। मात्र सत्यक दर्शन करू। हम एखुनका वार्तालापक आरम्भे मे कहि चुकल छी जे मिथिलाक पांडित्य फूल नहि काँट बनि चुकलैए। एकटा संकुचित सोच, एकटा निरर्थक गौरव। हमर पूर्वज एहन प्रकांड पंडित छलाह

जकर मुकाबिला समग्र भारतक पंडित नहि क’ सकैत छला। अही मंत्रक जाप करैत ओ सभ विचरण क’ रहला अछि। समय बदलि चुकलैए। प्रजातंत्र कायम भ’ गेलैए। सभ कैँ एक भोट, बरोबरिक अधिकार। एकर प्रभाव पड़ि रहलैए। एहन बदलल समय मे अपन सोच कैँ बदल’ पड़तैक। समयानुकूल अगिला कार्यक्रम बनब’ पड़तैक। एक खास जातिक एकाधिकार कैँ तोड़’ पड़तैक। जाबे तक सम्पूर्ण मिथिलाक लोक अपना कैँ मैथिल नहि बुझत ताबे तक कोनो तरहक अभियान सफल नहि हेतैक। तैँ हम विचार देब जे कोनो एहन योजना बनाउ जाहि मे कल्पने सही, कल्पना कैँ साकार करैक मार्ग होइ। कल्पना कैँ यथार्थ बनबैक एकहि टा मंत्र सफल होयत जे मंत्र मिथिला मे रहनिहार प्रत्येक जाति, प्रत्येक समुदाय कैँ मैथिल बनैक प्रेरणा देतै, अनिवार्यता बुझौतै।

कनेकाल पहिने तक हम मदन भाइक विचार सुनि अप्रतिभ भ’ गेल रही। सुराही मे लोटा नहि डुबाओल जा सकैत छल। मुदा एखुनका हुनकर विचार मे सकारात्मक भाव उदय भ’ गेल छलनि। मिथिला मे रहनिहार प्रत्येक व्यक्ति मैथिल छथि, ई एकटा नव बात भेल। अही नवीन विचार कैँ मूलमंत्र बना अपन सोच कैँ बदलल जा सकैत छल। काज एहन होयबाक चाही जाहि सँ एक जातिक नहि अथवा एक सम्प्रदायक नहि, समग्र मिथिलाक उत्थान होइक। हमर मोन मे संतुष्टि आयल रहए।

मदन भाइ कहलनि—हम साहित्यक प्रेमी छी। अँग्रेजी, हिन्दी एवं बंग भाषा मे रचल रचना कैँ पढ़ैत रहलहुँए। मैथिली साहित्यक बहुत अनुभव नहि अछि, कारण कोनो नियमित स्थान पर मैथिली पुस्तक उपलब्ध नहि छैक। तकर बादो जतय कतौ सँ मैथिली भाषाक पुस्तक एवं पत्रिका भेटलए ओकर मूल्य द’ प्राप्त केलहुँ आ पढ़लहुँए। खास क’ विद्यापतिक हृदयस्पर्शी कविता पढ़ि क’ हम मुग्ध भ’ जाइत रहलहुँए। विद्यापतिक प्रत्येक कविता मे एक तरहक संस्कृति, एक तरहक परम्पराक निधोख परिचय भेटैत छैक। तखन ज्ञात होइत छैक मिथिलाक गौरवमयी अतीतक, एकर विशिष्टताक आ एकर कोमलताक। केदार भाइ, स्कूल खोलैक अनिवार्यता हम स्वीकार करैत छी। मुदा हमर विचार मे मिथिला एवं मैथिलीक सेवा आरो तरहेँ हेबाक चाही। मुदा कोनो लक्ष्यक निर्धारण सँ पहिने हमरा-अहाँकैँ अपना-अपना कैँ तौल’ पड़त। की हमरा-अहाँ मे मिथिला-मैथिलीक सेवा करैक योग्यता अछि? मानि लिअ योग्यता नहि अछि त’ सभसँ पहिने योग्यता प्राप्त करी आ तकर बादे लक्ष्य दिश डेग उठा अपन देशक, समाजक, भाषाक एवं संस्कृतिक रक्षा करब, विकास करब त’ अबस्से पुनीत काज भेलै ने! मुदा से काज सोचि-विचारि क’ करबाक चाही, मात्र

मैथिली प्रेम मे बहकि क' नहि।

हम सावधान भ' गेल छलहुँ। मदन भाइक कथन गंभीर भ' रहल छलनि। हुनकर स्थिर भेल दृष्टि मे एकाग्रता आबि गेल छलनि। एहन स्थिति मे मनुक्खक विचार आत्माक स्पर्श करैत बाहर अबैत छैक। ओ कहलनि–हमरा-अहाँ कैँ ताक' पड़त जे हमरा-अहाँ कैँ अछि की? हमरा सभ कैँ मैथिली भाषा। प्राचीन काल सँ अर्वाचीन काल तक मैथिली भाषाक गरिमा प्रत्यक्ष अछि। अहि भाषा कैँ अपन लिपि छै, व्याकरण छै आ सभ सँ पैघ विद्यापति सनक महान कविक आशीर्वाद छैक। मैथिली भाषा कैँ ई सामर्थ छैक जे ओ मिथिलाक संस्कृति, सभ्यता एवं परम्परा कैँ अक्षुण्ण राखि सकैत अछि। तैँ मैथिली भाषा भारत मे अपन वर्चस्व स्थापित करए तकरा लेल प्रयास करी आ अभियान चलाबी। देशक आंचलिक भाषाक कतार मे मैथिली भाषा कैँ आदर भेटौक, सम्मान भेटौक एवं अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटौक तकरा लेल आन्दोलन चलाबी। मुदा ई सभटा होयत कोना?

हम अधीर भेल मदन भाइ कैँ पुछलियनि–से सभटा सत्य। मुदा से हैत कोना?

मदन भाइ सोझ आ स्पष्ट उत्तर देलनि–मनोरंजनक दृष्टिएँ त' छैहे, मुदा भाषाक विकास मे एखन फिल्मक भूमिका अहम् बनलए। हिन्दी भाषा फिल्मक कारणे सम्पूर्ण भारत मे सरताज बनलए। देशक आन-आन आंचलिक भाषा सेहो फिल्मे सँ ऊर्जा ग्रहण क' सुरक्षित अछि। तैँ हमर विचार अछि जे मैथिली भाषा मे एकटा फिल्मक निर्माण होउक, फिल्म बनला सँ मैथिली भाषाक पहिचान उजागर हेतै। हमर मिथिला आलस्य मे ओंघरायल अछि। जाति, उपजाति एवं परम्परा एकरा दरिद्र बनौने छैक। सभटा दुखक निदान फिल्मक माध्यमे कएल जा सकैए। गंडकक पूब ता भागलपुर तक आ नेपालक सीमा सँ लगाइत गंगा कात तक मिथिला मे भावनात्मक एकताक निर्माण मे फिल्म अपन भूमिकाक निर्वाह करत से हमर सोचब अछि। एतुक्का सरल, सुलभ, जीवन-धारा मे एक तरहक विशिष्टता छैक, एक अलग तरहक प्रवाह छैक तकर जानकारी सम्पूर्ण भारतवासी कैँ फिल्मे सँ भेटतैक। मिथिलांचलक भाषा एवं अन्य तरहक जागरण लेल फिल्मक गीत-संगीत एवं कथा अबस्से कारगर हेतै। तैँ आन-आन विचार कैँ स्थगित क' हम आ अहाँ मैथिली भाषा मे एकटा फिल्मक निर्माण लेल अग्रसर होइ से हमर कथन अछि।

एकाग्रताक संगे मोन कैँ अधिकार मे राखि हम मदन भाइक विचार कैँ सुनि रहल छलहुँ। अगिला पाँच दिन तक हम हुनके संग रहलहुँ। प्रात भेने मदन भाइक संगे राजनगर स्टेशनक समीप मिर्जापुर मंहथाना पहुँचलहुँ। लगभग तीन सय बर्ख पूर्व अहि स्थानक स्थापना कएल गेल छल। पूजाक विग्रह छलाह लक्ष्मी एवं नारायण।

वैष्णव रीति-रेवाज मे समर्पित मिर्जापुर मंहथक जेठ भ्राता, हुनकर छोट सीतामढ़ी महंथ आ तनिकर छोट चोरौतक महंथ। अही क्रमे महंथक साम्राज्यक विस्तार छल। स्थानक अधिक जमीनक दाता विभिन्न मुसलमान शासक। महंथाना सभ तरहक राजनीतिक उथल-पुथल सँ वंचित मात्र धार्मिक काज मे संलग्न रहए। अँग्रेज शासक सेहो महंथानाक क्रिया-कलाप मे कहियो हस्तक्षेप नहि केलक। मदन भाइक गुरु आ तनिकर गुरुक समय मिर्जापुर महंथानाक लगभग बत्तीस सय बीघाक जिरात एवं जमींदारी। भारतक स्वतंत्रताक बाद अनेक तरहक विघटन एवं दखल-अन्दाजी। जमींदारी उन्मूलनक संगहि रिलिजियस बोर्डक स्थापना। तरह-तरहक मनमानी आ बेगारी। तकर बादो एखन लगभग एक हजार बीघा जमीन अहि महंथक स्वामित्व मे रहि गेल छल। मधुबनी जिलाक अतिरिक्त आन-आन जिला मे अहि महंथानाक अनेक मौजे। सभठाम मंदिर, पूजाक नियम-निष्ठा आ खर्च-बर्च। मुदा प्रत्येक मौजेक आमदनीक एक निश्चित भाग मिर्जापुर स्थान मे पठाओल जाइत छल।

अयोध्या सँ जनकपुर एवं जनकपुर सँ अयोध्याक बीच संन्यासीक धाराप्रवाह आवागमन। मिर्जापुर स्थान मे संन्यासीक मुख्य पड़ाव। एक मन चाउर दिन मे आ एक मन चाउर राति मे, तकर दालि, तीमन-तरकारी नित्य रान्हल जाइत रहए। संन्यासी संग गरीब, दरिद्र, अपंग सभ भोजन प्राप्त करए। सन्यासी कैँ जरूरति मोताबिक कंबल एवं कैंचा सेहो देल जाइत छलनि। एकर अलावा स्थानक सोलह गोट सिपाही, अनगिनत कमतिआ, देबानजी, माली, चरबाह, नोकर-चाकर। एकरा सभहक लेल अलग सँ भानस कएल जाइत छल। मुख्य पुजेगरी एवं महंथजीक भोजन सभ सँ अलग नियम-निष्ठा सँ बनैत छल।

महंथानाक मुख्य मंदिरक स्थान पाँच-छह बीघा मे पसरल आ चारूकात सँ उच्च देबाल सँ घेरल। मंदिर, महंथजीक आवास, इनारक काते-कात पतियानी मे घर-बखारी, भंडार-घर आ चहुँदिश विभिन्न तरहक फूलक गाछ सँ भरल। स्थानक पछबरिया फाटक सँ बाहर लगभग पाँच बीघा देबाल सँ घेरल खेत। ई छल तरकारी उपजाबक मुख्य जगह। तकर सटले छोटेसन आम, कटहर, लीची, जामुनक गाछ। तकर ठीक सामने पक्का घाटबला सार्वजनिक उपयोग लेल पोखरि। पोखरिक पश्चिम जन-मजदूरक टोल दूर-दूर तक छिड़िआयल। स्थानक पश्चिम-दक्षिण कोन मे कने हटि क’ साठि बीघा खेतक प्लॉट से तार सँ घेरल। बीच मे कनेटा पोखरि। पोखरिक दछिन बरिया मोहार पर खपड़ा सँ छाड़ल सुन्दर, हवादार बंगला। महंथजीक अतिथि लेल ई विश्रामगृह बनल छल। हम अही बंगला मे ठहरल रही। सेवा लेल कइएक गोट नोकर-चाकर त’ छले।

पूजा-पाठ एवं आरो तरहक स्थानक काज समाप्त केलाक बाद मदन भाइ अधिक काल हमरे लग बंगला मे रहैत छलाह। हमर प्रस्थानक एक दिन पहिने मदन भाइ पुछलनि—केदार भाइ, फिल्म निर्माणक सम्बंध मे अहाँक मंतव्य जनबा लेल हम उत्सुक छी। अहाँ की सोचलहुँ से कहू?

—फिल्म बनबै मे त' बहुत पूजी लगतै ने?

—पूजी त' लगबे करतै। मुदा कतेक पूजी लगतैक तकर सही-सही अन्दाज केनाइ कठिन अछि। पूजी सम्बन्धी विषयक सोच-विचार हम कयलहुँ अछि। हम आरम्भे मे कहने रही जे मैथिली सेवा करक लेल योग्यता चाही। योग्यता नहि होअय त' योग्यता प्राप्त करी। एखन हमर सभहक योग्यता भेल फिल्म निर्माणक लेल पूजीक इन्तजाम। देशक स्वतंत्रताक बाद आ खास क' नव संविधान लागू भेलाक उपरान्त व्यक्तिक सोच, समाजक स्वरूप, धर्म-कर्म मे आस्था तथा आर्थिक विकासक गति मे फर्क आबि चुकलैए। जीमींदारी प्रथा समाप्त भेलै। आब मंहथानोक आयु अधिक दिनक नहि रहि गेलैए। जनसंख्याक विस्फोट, समान अधिकारक कानून, जमीनक बँटबारा, लाल झंडाक अतिक्रमण, प्रशासन व्यवस्था मे शिथलीकरण इत्यादि सभ-किछु कैँ आकलन केलाक बाद हम अहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे मंहथाना समयक संग समाप्त हेबेटा करतैक। तखन समयानुकूल किछु एहन कार्य हमरा करक चाही जाहि सँ पुण्य भेटए आ आत्माकेँ संतुष्टि भेटए। अहाँक सत्संग मे आबि मिथिला-मैथिली लेल किछु करी तकर प्रेरणा प्राप्त भेलए। हमर त' किछु मजबूरी अछि। रेलिजस बोर्ड विभिन्न तरहक प्रतिबंध लगा चुकलैए। जमीन बिना आज्ञाक नहि बेचि सकैत छी। आमद-खर्चक हिसाब प्रांत सरकार कैँ दिअ पड़त। विधि-विधानक अलाबे महंथानाक खर्च सेहो प्रांतीय सरकारक चिंताक विषय बनि गेलैए। सत्य त' एतय तक छैक जे मिर्जापुर स्थानक खर्च आमद सँ अधिक भ' चुकलए। परम्पराक सभ तरहक परिपाटीकैँ पूरा करक लेल धनक अभाव आगाँ मे ठाढ़ भ' गेलए। हम मंहथ, तैँ हमरा सभ बातक जानकारी अछि। मुदा सभ तरहक व्यवधान रहितहुँ हम फिल्म बनब' लेल पूजीक ईन्तजाम क' लेब तकर विश्वास करैत छी। मैथिलीक सेवा लेल मानसिक रूपे हम तैयार छी। फिल्म निर्माण मे सम्प्रति पूजी अड़चन नहि छैक। अड़चन दोसरे तरहक छैक।

हम थोड़ेक हड़बड़ाइत पुछलियनि—मदन भाइ, पूजीक अलावा फिल्म निर्माण मे दोसर की अड़चन हेतैक?

मदन भाइक नजरि शून्य मे अटकि गेलनि। ओ कहलनि—अड़चन छैक ने! फिल्म निर्माणक कर्त्ता-धर्त्ता अहीं कैँ बन' पड़त। सम्प्रति अहाँ अध्ययन समाप्त क'

नोकरी करैत छी। अहाँक जीवन एक दिशा पकड़ि लेलकए। जँ फिल्म बनतै त' अहाँ कैँ नोकरी सँ इस्तीफा देब' पड़त। की अहाँ अपन एखुनका व्यवस्थित जीवन कैँ त्यागि फिल्म बनबै लेल तैयार हेबै? इएह भेल मुख्य अड़चन।

तमाम तरहक गलत काज करक हमर एवं मदन भाइक उमेर छल। मुदा से सत्य नहि। मदन भाइक सोच मे परिपक्वता आबि चुकल छलनि, भविष्य मे किछु दूर तक देखैक काबिलियत सेहो हुनका मे छलनि। अड़चन सम्बन्धी हुनकर प्रश्न सटीक एवं समयानुकूल छलनि। फिल्म बनबैक बात जँ पक्का भेल त' हमरा नोकरी सँ त्यागपत्र देबहि पड़त।

हमर ठोर सिया गेल। नोकरी छोड़' पड़त ताहि दिस हमर ध्यान गेले ने छलनि। मैथिली प्रेम मे भ्रमित हमर मोन एखन तक गप्प-सप्प मे सीमित छल। फिल्म निर्माणक लेल एक दिन, एक सप्ताह, एक महिना नहि, कम सँ कम एक बर्खक समय त' चाहबे करी। फिल्म व्यवसायक पूर्ण अनभिज्ञता। तकर माने भेल आरो समयक खपत। आब भेल मुश्किल। एक कात नोकरी करैत एक तरहक सपाट जीवन-यापन करक वास्तविकता आ दोसर दिस मैथिली-प्रेम रोग मे मातल काल्पनिक संसारक आकर्षण।

हम गुमसुम तर्क-वितर्क कइए रहल छलहुँ, बीचहि मे मदन भाइ कहलनि– विचार विषम स्थिति मे पहुँचि गेलए। हम एतबा कहब जे अगुता क' किछु निर्णय नहि लिअ। कलकत्ता जाउ आ अपना कैँ तौलू। मैथिली सेवा लेल वाक्यपटुता नहि कर्त्तव्यपटुता चाही। एक तरहक बलिदान लेल अहाँ अपना कैँ तैयार करू। हम अहाँक तैयारीक सूचनाक प्रतीक्षा मे रहब।

6

1961 ईसवी। हमर उमेर पच्चीस बर्खक। गदह-पचीसी मे फँसल आयु-रेखा। मैथिलक सेवा करक उत्कट आकांक्षा। मुदा तकरा लेल त्याग करब जरूरी। त्याग एकटा महत्त्वपूर्ण शब्द। मदन भाइक कहब जे सम्प्रति हमर त्याग भेल नोकरी छोड़ि मैथिली भाषाक फिल्म बनेबाक संकल्प। हम त्याग कर' लेल मोन कँ निहोरा कर' लगलहुँ। ई कहबा मे हमरा लाज नहि होइए जे नोकरी कँ त्याग' मे हमरा लगभग एक बर्खक समय लागि गेल रहए। नोकरी नीक छल। ओकर भविष्यो नीक रहै। एमहर जाउ आ कि ओमहर जाउ। विचार कँ स्थिर करै मे, संतुलित करै मे मोन मे खिचाब, तनाव। वेगवती धार मे दहाइत कमलक फूल आ ओकरा हाथ सँ पकड़ैक प्रबल लोभ। फूल हाथ मे आओत आ कि हम स्वयं धार मे दहा जायब तकर अंदेशा। अन्त मे एकटा 'सौलिड' विचार। ''पल दो पल का राही हूँ। पल दो पल मेरी कहानी है।'' जे हेतै से देखल जेतै। आब मैथिलीक सेवा लेल प्रवचन नहि चाही। आब चाही अपन शांत, सपाट जीवनक सुख-मनोरथक बलिदान। नोकरी सँ इस्तीफा दाखिल कएल।

1962 ई.। देशक तेसर चुनाव सम्पन्न भ' चुकल रहै। काँग्रेस प्रचंड बहुमत सँ जीति अपन सरकार बना चुकल छल। देश भरि मे शांत भेल समय अपन नियमित चालि सँ चल रहल छल। हम दृढ़ निश्चय क'क' गाम आयल रही जे फिल्म निर्माणक बात ककरो नहि कहबैक। ताहि समय मे सिनेमाक आकर्षण अपन चरम पर छल। खास क' कॉलेजक विद्यार्थीक जीवनक मनोरंजनक लेल मुख्य स्रोत छल फिल्म। सिनेमा देखक लालसा गाम-घरक लोक मे सेहो पर्याप्त रहै। हम सिनेमा बनबै बला बात कँ मोन मे दबने गाम मे घुमि-फिरि रहल छलहुँ। टने झा भेटलाह। अधिक काल सटले रहलाह। हुनकर जिज्ञासाक अन्त नहि। ओ खोदि-खोदि क' सवाल पूछैत रहलाह—अयँ रौ केदार भैया, तोँ सिनेमा बनबै लेल बम्बइ जा रहल छैं! हे एकरा कहै छै भाग्य। नसीब मे तोरा सँ के जीतत, आह! मोन पड़ैए, सिनेमा मे कक्कूक डान्स। अयँ रौ, तोँ त' आब कक्कू कँ अपन आँखि सँ देखबीहिन?

एतबा बाजि क' टने झा स्वप्न लोक मे पहुँचि गेलाह। शायद हुनकर स्वप्न-दोष मे मुख्य भूमिका कक्कूएक रहैत छलनि। हम हुनका बुझबैत कहलियनि—कक्कू बुढ़िया भ'क' रिटायर क' चुकलए। आब जमाना छैक हेलेनक।

मुदा टने झा हमर बात सुन' मे असमर्थ भ' गेल रहथि। बड़ी काल तक ओ विभिन्न तरहक मुद्रा प्रदर्शित करैत अपना मे मगन भेल रहला। फेर ओ जजवन्ती राग मे गीत गाबए लगला—''तुम चले गये परदेश, लगाकर ठेस, ओ प्रियतम पियारा, दुनियाँ मे कौन हमारा।''

टने झा हँसमुख आ सरल जीवन जीनिहार। हुनकर फूहर किश्मक हाव-भाव हमर तप्पत भेल मनोदशा मे बामक काज केलक। हमर मानसिक तनाव कम भ' गेल। जखन टने झा भव-सागर कैँ पार केलनि आ फेर सँ धरती पर पयर रोपलनि तखन हम हुनका चेतबैत कहलियनि—अहाँ सिनेमा बला बात बुझलियै त' बुझलियै। मुदा ई बात अनका ककरो नहि कहबै।

टने झा हमरा आश्वस्त करैत जवाब देलनि—हम अपन सझुआर बाली कनियाँक शपथ खा क' कहैत छियौ। हमरा पर विश्वास कर। एहनो गोपनीय बात कियो बजैए! जँ तोहर सिनेमा बनबइ बला बात ककरो कहियै त' हम नर्क मे खसी।

टने झा अपन घरबालीक शपथ खेलनि। मुदा हुनकर पेट मे बात पचनि तखन ने! रातिए मे ओ गाम भरिक लोक कैँ जगा-जगा क' कहि एलथिन। भोर होइत-होइत समूचा गाम मे खबरि पसरि गेल रहै जे हम हीरो बन' लेल बम्बइ जा रहल छी।

संयोग कहियौ अथवा हमर भाग्य-रेखाक खेल। हमर परिवारक सदस्य कैँ हमर अगिला कार्यक्रम कैँ जनबा लेल कनिकबो रुचि नहि। हुनकर सभहक बीच दोसरे तरहक हड़कम्प मचल रहए। हमर चारि भाइक भैयारी। पिताक मृत्यु भ' चुकल छलनि। माता जिविते छलीह। हमर तीनू ज्येष्ठ भ्राता जमीन-जथा बँटबारा मे बेहाल छलाह। मोजे छल पुतइ नामक गाम मे। लगभग एक सय पचास बीघाक चास। गाम मे सेहो थोड़ेक जोता जमीन, कलम-गाछी आ एक बीघा आठ कट्ठाक घराड़ी। चारू कैँ अलग कोठाक घर। भैयारी मे हम सभसँ छोट। पहिने कानाफूसी, फेर आंगन मे तीनू भाउजक घमाउज। ज्येष्ठ भ्राता जानि-बुझि क' मुँह बन्न कयने रहथि। हुनक आंगनबाली जखन मुँह खोलथि त' गाम थर्रा जाए। केमहर सँ हिस्सा लेब तकर निर्णय सँ पहिने हम कतेक हथिया लेब तकर बियौंत। एक भाइक गुनधुन—जँ पूरा आंगन हमरे हिस्सा मे आबि जाइत त' हमर तीन बालक कैँ घरहट नहि लगितनि। दोसर भाइक सोच मे कनिकबो ओझराहटि नहि। हमरा एककात सँ एकहि ठाम खेत चाही। हम बाधे-बाध हिस्सा नहि लेब। ज्येष्ठ भ्राता कैँ सेहो मुँह खोल' पड़लनि—

दरंभगाक चारि कट्ठा जमीन, ओ पिता किनलनि तँ की? ओ त' हमरे थिक आ हमरे रहत। बाँकी गाम मे आ मौजे पर हमरा एक-चौथाइ हिस्सा चाही। अनेक तरहक आरोप आ प्रत्यारोप। बँटबाराक जहर आंगन, दुआरि, दरबज्जा सभठाम पसरल रहए। पुस्तैनी सम्पत्ति हथिआब' लेल वाक्‌युद्ध, घमर्थन आ सभ तरहक पेंच। अपना मे फरिछौट होयब असंभव। की हर्ज, कुटुम्ब मे सँ किनको बजा क' पंच बना देल जाए। मुदा कुटुम्ब मे किनका? एकमत नहि। जखन बँटबारा हेतै त' गामक जमीन सेहो बँटि जाउक। मायक आश्रम पछिला छह-सात बर्ख सँ अलगे रहलनि। एखन ओ गामक जोता जमीनक उपजा पबैत छलीह। गामक जोता जमीन, कलम एवं घराड़ी केँ सेहो कूड़ी लगा दिऔ। माय केँ कोनही बला खेत खोरिस मे द' देल जेतनि।

तीनू अग्रज एक बातक लेल एकमत रहथि। छोटका भाइ, केदार भैया लेल चिंता करब व्यर्थ। ओकर एखन बिआहे भेलैए, दुरागमनो बाँकिए छैक। से बात त' सत्य, मुदा सचेत रहब जरूरी। देखहिन ने, अपन सभहक कोनो दुश्मन ओकरा चिट्ठी लिखि कलकत्ता तक खबरि पठा देलकैए। बँटबाराक समाचार पाबि ओ नोकरी छोड़ि गाम पहुँचि गेलए। ओहो त' एक हिस्साक पट्टीदार। मुदा तकर चिंता नहि करू। ओकरा जे देबै ओ ल' लेत।

हम मायक आश्रम मे भोजन पबैत रही। मायक खास टहलनी पाहीबाली गार्जियनक हैसियत सँ एक दिन लोहछि क' कहलक—बौआ, बँटबारा भ' रहलैए। अहाँ चुप किएक छी? बाजू, नहि बाजब त' घाटा मे रहब। फरिक सँ पैघ दुश्मन कहियौ कतौ भेलैए?

छोटका कका उर्फ कौआली बाबू खानगी मे ल' गेलाह आ बुझबैत कहलनि—हमर बात छोड़, हम अपन बापक एकहिटा बेटा। तँ हमरा बँटबाराक नाटक देख' नहि पड़ल। मुदा तोहर बात अलग छौ। तोँ तीन भाइक तर मे सन्ना भेल छएँ। दुख भ' रहलौए ने? दुख नहि कर। भैयारी बँटवारा मे लत आ उलार होइते छै। जे जेहन बइमान तकर कौर ततेकटा। अपन-अपन कनिआँक आँचर तर मूड़ी गोतने ई बेइमनमा सभ कतेकटा बइमानी करतौ तकर थाहो ने पेबहिन। बाभन जातिक कलह, बाभन जातिक सुलह, दुनू भेल बाभन जातिक स्वभाव। आंगन मे एक तरहक आ दलान पर दोसर किस्मक मुखौटा। ई तमासा हम बहुत देखने छी। तँ हम विचार देबौ जे बाप-पुरखाक अरजल सम्पत्तिक बँटबाराक समय आँखि मुनने नहि रही। भाइक बीच दुश्मन बनि अपन हक-हिस्सा लेबेटा करी, छोड़ी नहि। सैह भेलौ विदुर नीति।

हम कका केँ पुछलियनि—अहि बँटबारा मे कतेक दिन लगतैक?

—हाइकोट मे दायर मोकदमाक फैसला आब' मे कतेक दिन लगैत छैक से

बुझल छौ? जँ मुद्दै-मुद्दालह आ दुनू कातक ओकील दाव-पेंच खेलाइ मे पटु होअय त' फैसला होइते ने छैक। तहिना भैयारी बँटबारा मे जँ घरबालीक उजूरक सुनबाइ होइत रहल त' बँटबारा कहिया समाप्त हैत तकर समयक मुकर्रर भविष्यज्ञाता बशिष्ठो ने क' सकैत छथि, हम त' एकटा अदना मनुक्ख छी।

अपन जेठ भ्राता लेल सिनेह छल आओर छल आदर एवं विश्वास। बँटबारा काल सभहक सही आकृति देखल। चिन्हब कठिन भ' गेल रहए। खास क' ज्येष्ठ भ्राताक लज्जाविहीन आचरण एवं कुटिल व्यवहार देखि हमरा अत्यधिक दुख भेल छल।

बँटबाराक मोहजाल सँ निकलि हम मिर्जापुर महंथाना पहुँचलहुँ। मदन भाइ हमरा देखि प्रसन्न भेलाह। हमर आगत-स्वागत केलनि। गप्प-सप्प मे बम्बइ जयबाक तारीख ल'क' चर्चा भेल। महंथानाक अनगिनत काज, बहुत तरहक व्यस्तता। तथापि एक महिनाक बाद बम्बइ लेल यात्रा करब तकर निश्चय क' हम वापस गाम एलहुँ।

कि तखने देश मे भूचाल आबि गेल रहै। हिमालयक शिखर पर तुषारपात नहि वज्रपात भेलै। चीन भारत पर आक्रमण क' देलकै। सभहक बोलती बन्द। सम्पूर्ण देश सिहरि उठल। भय एवं अशंका सँ ग्रस्त समूचा भारत एक परिवार मे परिवर्तित भ' गेल। परिवार मे अफसोच, ग्लानि आ नेताक प्रतिँए अविश्वास प्रदर्शित होब' लागल। चीन युद्धक तैयारी बहुत दिन सँ क' रहल छल। अपन भारत मे शासक बनल नेता कँ एकर कोनो खबरि नहि। चीन भारतीय सेना कँ घास-फूस जकाँ धंगैत आगाँ बढ़ि रहल छल। हजारक-हजार भारतीय सेना मारल गेल तकर बादो चीनक सेना आगाँ बढ़िए रहल छल। हे भगवान्, आब की हेतै?

ताहि समय मे भारतक राजनीतिक आकाश मे सूर्य एवं चन्द्रमा सदृश नेहरू आ मेनन चमकि रहल छलाह। देशक नेताक प्रतिए सभहक हृदय मे सम्मान रहैक। खास क' नेहरूक लेल त' आरो आदर रहै। मुदा एखन अखबार एवं रेडियो मे युद्धक समाचार पढ़िक' आ सुनिक' सभहक हृदय दग्ध भ' गेल छलै। सभहक मोन कलपि रहल छलै। युद्धक समाचारक बीच जखन नेहरू आ मेननक नामक चर्चा होइक त' लोक घृणा सँ मुँह फेरि लिअए, मुँह सँ एकोटा शब्द बाहर नहि करए। सुन्न भेल चेतना, सुन्न भेल दर्प। समूचा राष्ट्र मूर्छित भ' गेल छल।

गाम मे सभ सँ अधिक मर्माहत भेल रहथि वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी नारायणजी चौधरी उर्फ बौआ। ओ दुख मे अधीर भेल कहने रहथि–जवाहर लाल नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इन्डिया' नामक पोथी लिखलनि। ओ सभ बातक डिस्कभरी केलनि मुदा भारतीय आत्माक डिस्कभरी नहि क' सकलाह। लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाइ पटेल

जे लगभग पाँच सय देशी रियासत केँ देश मे मिला क' एक मजगूत राष्ट्रक निर्माण केलनि से स्वर्गीय भ' गेल छथि। आब असगरे बचि गेल छथि नेहरू। ओ बुद्धिक बद्धी पहिरि बुधियार बनि गेल छथि। ओ जे सोचै छथि सैह भेल गृह-नीति, विदेश-नीति एवं अर्थ-नीति। नेहरूक एकाधिकार, रोक-टोक कर' बाला कियो नहि। ओ कृष्ण मेनन सनक सनकल मनुक्ख केँ ईगलैंड मे भारतक हाइ कमीश्नर बना देलनि। मेनन प्रसिद्ध जीप घोटला केलक। घोटलाक जनक मेनन केँ सजाय भेटक चाही। सजा भेटलै ने! नेहरू ओकरा देशक रक्षामंत्री बना देलनि। आब लिअ, मेनन सनक सेक्स मेनिया जखन रक्षामंत्री होअय तखन देश केँ जे दुर्दशा हेबाक चाही से भ' रहलैए।

बौआ बजिते रहलाह–जे नेता भूगोलक वास्तविकता संग छेड़खानी करैए तकरा इतिहास कहियो माफ नहि करैत छैक। तिब्बत संप्रभु देश मुदा कमजोर। अँग्रेजक शासनकाल तक तिब्बतक रक्षा लेल तिब्बतक राजधानी लासा मे भारतीय फौज तैनात छल। नेहरूजी विश्वगुरुपद प्राप्त करबाक निआर केलनि। हिन्दी-चीनी भाइ-भाइ नामक फकड़ा हिमालय पर फहराए लागल। बांडुंग कन्फ्रेन्सक तैयारी शुरू भ' गेल। पंचशील नामक पाँच गोट कील ठोकै लेल नेहरूजी चीन पहुँचि गेलाह। चीन मे हुनक एहन भव्य स्वागत भेल रहए जे कहियो ककरो लेल भेले ने रहए। नेहरूजी अपन भेल अभूतपूर्व सत्कार मे डूबि गेलाह। भाव मे डुबल मनुक्खक बुद्धि पंगु बनि जाइत छैक आब चीनक किछु मांग रहै तकर पूर्ति आदरणीय नेहरूजी कोना नहि करितथि? ओ लासा सँ भारतीय सेना केँ वापस बजा लेलनि। एतबे नहि, ओ सम्पूर्ण तिब्बत केँ चीनक थारी मे परोसि देलनि। चीन पहिनहि सँ पूर्वी तुर्किस्तान आ मंगोलियाक एक भाग गीड़ि चुकल छल। आब ओ तिब्बत केँ सेहो गीड़ि लेलक, पचा लेलक। तकर बाद चीन ढेकार करैत भारतक सीमा पर पहुँचि गेलए। ओ मैकमोहन लाइन केँ औंठा देखबैत भारत पर आक्रमण क' देलकए। वाह रे हमर विदेश नीति, वाह रे हमर रक्षाक तैयारी? यौ बाउ, चीन त' सभ दिन सँ लूटेराक देश रहलए। धोखा देब, औचक हमला करब त' चीनक इतिहास मे मोटका आखर सँ लिखल छैक। ओहि राक्षसक देश केँ अँग्रेज हफीम खुआ-खुआ क' सैतने छल। ओहि दानव केँ नेहरूजी पंचशील नामक शर्वत पिआब' गेल रहथि। आब लिअ तकर फल! सभ दिनका दुश्मन बनि चीन हिमालय पर गरजि रहलए।

बौआक वेदना सभहक पीड़ा बनि गेल रहए। कहबी छैक जे जँ परिवारक मुखिया गलती करए त' परिवारक सभटा सदस्य केँ कष्ट भोग' पड़ैत छैक। जँ देशक मुखिया गलती करए त' समूचा देशक क्षति होइत छैक, देशक अपमान

होइत छैक। एखन त' देशक स्वतंत्रते पर खतरा मरड़ा रहल छलैक। नेहरूक प्रतिँए जे आकाश एतेक ऊँच सम्मान छल, प्रेम छल आ विश्वास छल से चीनक आक्रमण सँ चकनाचूर भ' गेल छल। नेताक गलती काज केँ थोड़ेकाल लेल बिसरलो जा सकैत छल। मुदा, नेताक अहंकार केँ क्षमा करब त' असंभवे छल। शासन कोना चलतै तकर फिकिर बाद मे करब। एखन चीनक आक्रमण सँ देश केँ कोना बचायब तकर जोगार करू ने!

विश्व-स्तर पर भारत केँ सभ सँ बेसी निकटता रहैक रूस नामक देश सँ। नेहरूजी रूस सँ मदतिक गोहारि केलनि। रूसक जवाब स्पष्ट छल जे भारत ओकर मित्रदेश अछि। मुदा चीन त' ओकर भ्राता अछि। भ्राताक विरुद्ध रूस भारतक मदति कोना करत?

तखन अपन प्रिय नेता अमेरिकाक आगाँ मूड़ी पटकलनि। ताहि समय अमेरिका मे भारतक पंचशील एवं गुटनिरपेक्ष सिद्धान्तक मजाक उड़ाओल जा रहल छलै। विश्व दू खेमा मे बँटल रहए। दुनू खेमाक अग्रणी देश शक्ति सम्पन्न छल। ताहि बीच गुटनिरपेक्षक सिद्धान्तक महत्त्व ओतबे छल जतबा एकटा खिलखिल पातर आ रुग्न शरीरक मनुक्ख दारा सिंह सनक पहलवान केँ चैलेन्ज ठोकैत होअय। नेहरुक कार्यक्रम केँ हास्यास्पद मानितहुँ अमेरिका भारतक मदति मे आयल। अमेरिकाक राष्ट्रपति चीन केँ चेतावनी देलक। अमेरिकन सातम बेड़ा बंगालक खाड़ी मे प्रवेश केलक। तखन जाक' चीन नांगरि सुटकौलक। चीन युद्धविरामक बिगुल बजौलक आ वापस गेल। मुदा जाइतो-जाइतो चीन भारतक विशाल भू-भाग पर अपन कब्जा नहि छोड़लक।

चीनक आक्रमण सँ देशक प्रत्येक नागरिक आहत भेल रहए। सभहक मनोबल निम्न-स्तर पर पहुँचि गेल रहै। ओही काल सीमाक रक्षा लेल, शासन केँ चलबै लेल गोपाल सिंह 'नेपाली' एकटा मंत्र केन्द्र सरकार लग पठौने रहथि– ''चरखा चलता है हाथों से, शासन चलता तलवार से। दिल्ली जाने वाले राही, कहना अपनी सरकार से।''

देशक जनता सभकिछु देखैत रहल, सहैत रहल, कनैत रहल। जवाहरलाल नेहरू बाघ आ बाँकी मंत्री बकरी। महात्मा गाँधीक प्रभावे देशक कोन-कोन मे सैकड़ो, हजारो नेता बनल छला। ओ सभटा नेता मरि-खपि गेल छला अथवा राजनीति सँ संन्यास ल' लेने रहथि। विपक्ष मे थोड़ेक नेता अबस्से काँउ-काँउ क' रहल छलाह। मुदा भारतक राजनीति मे ताहि घड़ी विपक्षी ठेहुनियाँ द' रहल छल। विपक्षीक कोनो अहमियत कायम नहि भेल रहै। शासन मे छल काँग्रेस आ काँग्रेस मे छल एकटा

राजा, जकर एकछत्र राज चलैत रहै। एक तरहक राजतंत्र, प्रजातंत्रक नामो निशान नहि छल।

प्रत्येक काज मे हानि-संगे लाभ सेहो होइत छैक। चीनक आक्रमण मे बेहिसाब हानि भेल रहै। मुदा एकटा लाभ सेहो भेलै। सम्पूर्ण देशक नागरिक जागि गेल रहए आ चीनक आक्रमण सँ भेल क्षति एवं अपमानक जिम्मेवार नेता दिस वक्र नजरिए ताकि रहल छल।

डुबैत मनुक्ख सभ सँ पहिने अपन प्राण बचबैत अछि। नेहरूजी अपना कैँ बचबैक बियोंत केलनि। यद्यपि सम्पूर्ण मंत्रिमंडल आ खास क' प्रधानमंत्री कैँ इस्तीफा देब उचित छल। मुदा जवाहरलाल नेहरू लग बाजक कोनो दोसर नेता कैँ हिम्मति नहि भेलै। सभटा दोख कृष्ण मेननक कपार पर बजारि नेहरूजी ओकरा कान अइंठि क' मंत्रिमंडल सँ बाहर केलनि। सरकार मे सेहो थोड़ेक चेतना एलै। चीन धोखा देलक, पीठ मे खंजर भोंकलक। आब भारत आ तिब्बतक बीच सीमाक रक्षा करब जरूरी भ' गेलए। मुदा से होयत कोना? रक्षासम्बन्धी सभटा खर्च त' पाकिस्तान कैँ थोपड़ाब' मे खर्च भ' गेलए। खजाना खाली पड़ल अछि। सरकार तलवार पिजाओत तकरा लेल धन त' छैहे नहि। हे राम, आब की हेतै?

धनक अभाव बला खबरि समूचा देश मे पसरि गेलै। देशक महिला समुदाय सेहो अहि खबरि कैँ सुनलनि। महिला लेल गहना सँ प्रिय आओर किछु नहि। मुदा भारतक महिला कैँ देशक इज्जति सभसँ प्यारा। देश भरिक महिला अपन देह परक सभटा गहना उतारि प्रतिरक्षा फंडक सतरंजी पर राखि देलनि। ठाम-ठाम देशक राजा-महराजाक सेहो बुद्धि फरफरेलनि। ओ लोकनि अपन-अपन खजानाक मुँह खोललनि। दरभंगा महाराज चौदह मन सोना प्रतिरक्षा फंड मे दान केलनि। सरकार कैँ प्रचुर धन भेटलै, ओकर सक्रियता बढ़लै आ देशवासी मे विश्वास जगलै। आब आबथु चाउ-माउ। हुनका छटिहारक दूध पिया देल जेतनि।

समयक चक्र मलहमक काज करैए। नोकरी छोड़ब, परिवार मे बँटबाराक कलह आ देश पर चीनक आक्रमण सँ उपजल मानसिक प्रताड़ना हमरा एहन स्थिति मे पहुँचा देने छल जे सोचल-विचारल सभ तरहक काज सँ विरक्ति भ' गेल छल। उत्साह मे ब्रेक लागि गेल छल। मुदा जखन थोड़ेक समय बितलै तखन जा क' मोन मे विचारल बात फेर सँ अपन जगह पकड़लक। हम मदन भाइ लग पहुँचलहुँ। अन्ततोगत्वा 23 सितम्बर 1963 ई.क दिन हम आ मदन भाइ मैथिली भाषा मे फिल्म निर्माणक उद्देश्य सँ बम्बइ लेल प्रस्थान केलहुँ।

7

बम्बइ पहुँचलहुँ। विक्टोरिया टरमिनस नामक दैत्याकार रेलवे स्टेशन। स्टेशन सँ बाहर आबि बम्बइ शहरक पहिल दर्शन कएल। की ई शहर अपने देशक छियैक? हँ यौ, बम्बइ भेल महाराष्ट्र प्रांतक राजधानी। औरंजेबक सेना कैँ परास्त क' हिंदू धर्मक ध्वजा फहराबै बला छत्रपति शिवाजी अही प्रांत मे जन्म लेने छलाह। तखन ई आन देशक शहर कोना हेतैक? कलकत्ता आ बम्बइ, दुनू अही देशक शहर। मुदा दुनू एक दोसरा सँ भिन्न। कलकत्ता किशमिश त' बम्बइ अखरोट। कलकत्ता पारो त' बम्बइ चन्द्रमुखी। सौन्दर्यक परिभाषा भिन्न-भिन्न रहितो दुनू देवदासक प्रेम मे आकंठ डुबल। हमर आ मदन भाइक उमेर गुड्डी उड़बैबला। तैँ सौन्दर्य मे कतबो ने आकर्षण होइ, सुपाच्ये छल।

सितम्बर महिनाक अन्तिम सप्ताह। मुसलाधार बरखा बम्बइ कैँ धो-पोछि क' रमणीय बना देने छल। हम आ मदन भाइ बम्बइ सँ अपरिचित छलहुँ। क्षमा करब, बम्बइ एखन हमरा दुनू सँ अपरिचित छल, मुदा बाँहि पसारि स्वागत करैक ओकर अन्दाज मे गजब केर चुम्बक छलै। स्टेशने लग एकटा होटल कैँ आवास बनैलहुँ। नाक मे अनजान समुद्री हवाक गंध आ खयबा काल नारियल तेल मे पकाओल भोजनक स्वाद। हमरा दुनू कैँ मुँह बिचकौने देखि क' होटलक बेरा कहलक– ''नये-नये आये हो इसलिए तकलीफ है। अपुन बम्बइ का खाना नारियल तेल और मुंमफली तेल मे पकता है। सरसो तेल केवल बैल के सिंघ का मालिश मे खर्च होता है। आदत की बात है। हप्ते, दो हप्ते मे सुधर जाएगी।''

हम आ मदन भाइ आदति सुधार' नहि, फिल्म बनब' लेल बम्बइ आयल रही। फिल्म व्यवसायक इल्म शून्य छल। तैँ सूत्रधारक खोज मे छलहुँ। सूत्रधार छला एक व्यक्ति आ तनिकर तलाश। ओहि व्यक्तिक नाम छलनि उदयभानु सिंह उर्फ भानु बाबू। आब हमर सभहक फिल्म निर्माणक बात सुनि भानु बाबूक केहन प्रतिक्रिया हेतनि? सभकिछु भविष्यक गर्त मे आ मैथिली भाषाक नसीब मे नुकायल-भुतिआयल रहए।

होटल सँ निकलि सड़क पर एलहुँ, अता-पता पूछैत डेग उठबैत रहलहुँ। फॉउन्टेन फ्लोरा आ तकरे सटल वीर नारिमन रोड। चौबिस नंबर मकान मे लिफ्ट सँ दोसर मंजिल, बामा कात पहिले दरबज्जा भेल भानु बाबूक ऑफिस।

भानु बाबू प्रशंसनीय व्यक्तित्वक मालिक छला, स्वागत केलनि। ऑफिस मे एकमात्र कमरा, कमरा सैंतल आ स्वच्छ। बीच मे बड़ी टा टेबुल, टेबुलक पाछाँ स्प्रींगदार कुर्सी पर भानु बाबू बैसल रहथि। ऑफिसक एक कोन मे बैसलि छलीह एकटा मराठी महिला। महिलाक सामने टेबुल पर टाइपराइटर राखल छल। महिलाक खोपा मे फूलक गजरा लटकल रहनि।

टेबुलक दोसर कात राखल कुर्सी पर हम आ मदन भाइ जगह पकड़लहुँ। तत्काल भानु बाबूक चपरासी दू गिलास जल हमरा दुनूक आगाँ राखि देलक। चपरासीक अधपक्कू, खूजल एक बीताक फहराइत टीक आ ओकर मुँहक फर्मा मे पानक दग्गी बला दाँतक पथार। दूर देश मे अपन मिथिलाक लोक कैँ देखि मोन सहजहि पुलकित भ' गेल छल।

भानु बाबू मधुबनी जिलाक रहुआ-संग्राम गामक बासी आ मदन भाइक पुरान परिचित लोक रहथि। आरम्भ मे ओ दरभंगा महाराजक कनिष्ठ भ्राता राजा बहादुरक तीनू पुत्रक शिक्षक बनलाह। फेर अपन पटुता, चतुरता एवं कार्यक्षमता बले एखन ओ महाराजक अँग्रेजी अखबार 'इन्डियन नेशन' एवं हिन्दी दैनिक समाचार पत्र 'आर्यावर्त'क बम्बइ मे संवाददाता एवं विज्ञापन संग्रहकर्ता बनि कार्यरत छलाह।

औपचारिकता समाप्त भेल आ वार्तालाप शुरू भेल। भानु बाबू अपन जिज्ञासाक पूर्ति लेल लम्बा प्रश्न केलनि–प्रायः अपन दिशुका लोक बम्बइ भ्रमण लेल अबैत छथि। ओना त' सम्पूर्ण बम्बइए देखबाक योग्य अछि मुदा एतुक्का एलीफेन्टा केभ, चौपाटी, इन्डिया गेट, ताजमहल होटल, मेरिन ड्राइभ, जूहू बीच आदि मनोरम स्थल विशेष क' प्रसिद्ध अछि। बम्बइ कैँ लोक फिल्म नगरी सेहो कहैत अछि। बहुतो व्यक्ति फिल्मक सूटिंग एवं नामी-नामी फिल्मी कलाकार सँ साक्षात्कारक इच्छा करैत छथि। अहाँ दुनू कोन तरहक अभीष्ट सँ बम्बइ पदार्पण केलहुँ अछि से त' कहू?

भानु बाबूक उमेर पचासक सीढ़ी पार क' चुकल छलनि। हुनका समक्ष हम दुनू नवतुरिया छलहुँ। हम चुप्पे रहलहुँ। संकोच कैँ एक कात ठेलैत बम्बइ ऐबाक उद्देश्यक जानकारी मदन भाइ देलनि। संक्षेप मे मिथिलाक मुख्य-मुख्य समस्याक विवरण दैत अन्त मे मदन भाइ भानु बाबू कैँ कहलनि–स्वतंत्र भारत मे मिथिलाक आर्थिक प्रगति सम्प्रति अवरुद्ध छैक, सामाजिक परिवर्तन छिन्न-भिन्न भ' रहलैए। हमरा दुनू व्यक्तिक दृष्टिएँ ई चिंताक बात अछि। मैथिल पंडितक चिंतन मे

कूपमंडूकता एवं रूढ़िवादिता सेहो सर्वविदित अछिए। तैँ नव जागरण अनबाक नितांत आवश्यकता छैक। अहि लेल मार्ग बहुतो भ' सकैए, मुदा हम दुनू मैथिली भाषा मे एकटा फिल्म बना क' अहि दिशा मे काज कर' चाहैत छी। आजुक युग मे फिल्म मनोरंजन करैक अलाबा बहुत तरहक सुधार करक संदेश सेहो दैत अछि। फिल्महि सँ मिथिला मे जागरण औतैक आ मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार हेतै से भेल हमर दुनूक मान्यता। अहाँ बम्बइ मे बहुत बर्ख सँ रहि रहलहुँए। फिल्म निर्माण मे अहाँक मदति चाही, मार्गदर्शन चाही। मिथिला आ मैथिलीक सेवा क' हमरा लोकनि भगवानक दुआरि पर अपयश सँ बाँचि जाइ तेहन मनोवृत्ति ल'क' हम आ केदार भाइ अहाँक समक्ष उपस्थित भेलहुं अछि। आब अपनेक जेहन आदेश होअय।

मदन भाइ केँ जे बजबाक छलनि ओ बाजि चुकलाह। हुनकर सभटा गप्प सुनि भानु बाबू मूड़ी गोंति लेलनि। हम भानु बाबूक चेहरा पर आँखि गड़ौने रही। भानु बाबू नजरि नीचाँ झुकौने चुपचाप आ भाव-शून्य बनल रहला। समयक घड़ीक सूइ अँटकि-अँटकि क' आगाँ बढ़ैत रहल। हमर हृदयक धड़कन तेज भ' गेल छल।

साधारणतः प्रत्येक मनुक्ख अपन विचार मे, अपन व्यवहार मे आ अपन कार्यशैली मे एक दोसरा सँ भिन्न होइए। हम दुनू शंकालु छलहुं जे फिल्म निर्माण संबन्धी बात भानु बाबू केँ अनसोहाँत ने लगनि। ओ हमर सभहक विचार केँ नकारि ने देथि। तखन त' फिल्म निर्माण मे अखने विराम लागि जेबाक संभावना।

करीब दस मिनटक चुप्पीक बाद भानु बाबू दम सैंत अपन चपरासी केँ सोर पाड़लनि–घटोतकच, एमहर आब'।

भानु बाबूक आवाज अप्रत्याशित रूपे कर्कश छल। ध्वनि सँ ऑफिस डगमगा गेल। एक कात बैसलि भानु बाबूक स्टेनो सेहो अकचका गेलीह। घटोतकच अर्थात् भानु बाबूक चपरासी। अजीबे नामकरण? सेहो ककरा लेल? एकटा सुच्चा मैथिल लेल। अहि तरहक नाम राखब एक तरहक चमत्कारे भेल ने! एहन चमत्कारी निश्चय कलाकार हेताह। जँ भानु बाबू कलाकार छथि त' ओ फिल्म निर्माणक विचार केँ अबस्से अनुमोदन करताह। अथाह कल्पना तर्क सँ लादल। मोन मे आशाक किरण छिटकल रहए।

भानु बाबू हुकूम देलनि–घटोतकच, ऑफिस बन्द कर'। ऑफिस बन्द भेल। कनेक कालक बाद हम तीनू सड़क पर चलल जा रहल छलहुं। भानु बाबूक लम्बाइ लगभग छह फीट, तहिना हुनक काया भारी-भरकम। हुनकर डेग मे 'रिदम' मिलबैत बुझि लिअ, हम आ मदन भाइ उधियाइत चलि रहल छलहुँ।

चर्चगेट स्टेशनक सोझाँ-सोझी समुद्रक कात पहुँचलहुं। जीवन मे पहिल बेर

समुद्र देखने रही। विशाल जलपिंडक दर्शन मोन मे उमंग भरि देलक। दहिना कात पसरल मानव तुलिका सँ चित्रित मेरिन ड्राइभ। एक त' ओहिना प्राकृतिक छटा सँ परिपूर्ण बम्बइ शहर अति सुन्दर छल, ताहि पर शहरक मखमल उज्जर गरदनि मे मोतीक माला सदृश शोभित मेरिन ड्राइभ त' अनुपमे लागल। मनहर उदासक गीत मोन पड़ि गेल–''चाँदी जैसा रूप है तेरा, सोना जैसे बाल। एक तुँही धनवान है बम्बई, बाकी सब कंगाल।''

मेरिन ड्राइभ सड़कक दोसर कात खूब चौड़गर फूटपाथ। फूटपाथ आ समुद्रक बीच देबाल। देबालक उपरका भाग लगभग एक चौकी बरोबरि चौड़ा। एक खास स्थान पर पहुँचि भानु बाबू देबाल पर बैसि गेलाह। आज्ञाकारी बनल हम आ मदन भाइ सेहो देबाले पर स्थान ग्रहण केलहुँ।

हम सम्मोहित भेल समुद्र दिस तकैत रही। समुद्र मे ज्वार उठल रहैक। गर्जना करैत समुद्रक लहरि प्रचंड बेग सँ पाथर पर अपन मूड़ी पटकि रहल छल। आकाश सँ अथवा समुद्रक पेट सँ अनायास एकटा मनुक्ख प्रगट भेलाह। हुनका हाथ मे छीलल आ टोंटी देल तीन गोट डाभ रहए। बिना ककरो किछु पुछने ओ तीनू गोटेक हाथ मे डाभ पकड़ा देलनि।

डाभ देनिहारक कद लगभग पाँच फीट, माथक जुल्फी दू भाग मे विभक्त आओर मोंछ हिटलर कट। हुनक वयसक ठेकान करब मुश्किल, किएक त' आगन्तुकक मुखराक चमड़ी पर पपड़ी उगल रहनि। ओहि अनचिनहार व्यक्तिक परिचय भानु बाबू देलनि–ई महापुरुष अपने मिथिलाक छथि। हिनकर गाम भेल मधुबनी जिलाक फुलपरास आ नाम छनि भोगेन्द्र झा उर्फ भोगल बाबू। ई जखन कखनो एना मे उगल अपन प्रतिबिंब देखथि त' हिनका अपन छवि मे दिलीप कुमारक चेहराक छाँह नजरि अबनि। हिनका विश्वास भ' गेलनि जे भगवान हिनका हीरो बन' लेल धरती पर पठौलनिहें। भोगी बाबू हीरो बन' लेल बम्बइ पहुँचि गेलाह। पछिला दस बर्ख सँ एक स्टूडियो सँ दोसर स्टूडियोक चक्कर लगबैत रहलाह। एक बेर हिनकर नसीब त' सफलताक शिखर तक पहुँचि गेल रहनि। मिस्टर सम्पत नामक फिल्म मे मोतीलाल नामक नायकक हाथ मे चाहक गिलास पहुँचेबाक पाट हिनके देल गेल रहनि। मुदा तकर बाद कोनो फिल्म मे ने हिनका चान्स भेटलनि आ ने कोनो डाइरेक्टर हिनकर प्रतिभाक कद्र केलकनि। ई बौआइत रहलाह। जखन हिनकर जमा पूजी शेष भ' गेलनि तखन भीख मांगक स्थिति मे भोगी बाबू पहुँचि गेलाह। संयोग सँ ई हमर सम्पर्क मे अयलाह। मैथिल कैँ मदति करब हमर कर्त्तव्य भेल। हमरा कइएक गोट फलक व्यापारी सँ जान-पहिचान। भोगी कैँ हम डाभ बेचैक धंधा मे लगबा देलियनि।

आर्थिक दृष्टिएँ भोगी बाबू आब संतुलित छथि आ बांद्रा नामक मोहल्लाक झोपड़पट्टी मे आराम सँ रहैत छथि।

भोगीक आँखि मे कृतज्ञताक भाव। तीन डाभक मूल्य छह आना, मुदा खरीद मूल्य तीन आना। भानु बाबू सँ तीन आना प्राप्त क' भोगी एक कात टरकि गेलाह। भोगीक खिस्सा सुनि हम दुविधा मे फँसि गेलहुँ। भोगी हीरो बन' लेल बम्बइ आयल रहथि आ एखन डाभ बेचि रहल छलाह। की हम आ मदन भाइ चिनियाँ बादाम बेचब? नहि यौ, हमसभ हीरो बन' लेल नहि, हीरो बनब' लेल बम्बइ गेल रही। तखन चिंता कथीक? मुदा एक बातक चिंता अबस्से छल। एखन तक फिल्म निर्माण सम्बन्धी विचार मे अपन सहमति अथवा असहमति देबा मे भानु बाबू कंजूसी किएक क' रहल छलाह? भानु बाबूक चुप्पी एक तरहें हिंसात्मक भ' चुकल रहए। हम आ मदन भाइ टेंशन मे पहुँचि गेल रही।

हमर शंका निर्मूल छल। भानु बाबू हमरो सँ पैघ मैथिली-प्रेम रोगी छला। विनम्रताक मूर्ति बनल अत्यन्त कोमल वाणी मे भानु बाबू बाजब शुरू केलनि—जीवन एकटा सफर थिक, एक कात सँ दोसर कात पहुँचैक खिस्सा। धरतीक समस्त जीवित प्राणी मे मनुक्ख सर्वोपरि, किएक त' ओकरा सोचैक अतिरिक्त यंत्र विधाता देने छथिन। तँ मनुक्ख अपन हितक अलावा परहित द' सेहो विचार करैए। हमहुँ मिथिलेक छी आ मिथिलाक हित करब हमरो कर्त्तव्य बनैए। मैथिली भाषा कैँ अष्टम अनुसूची मे स्थान नहि भेटलै एकर दुख हमरो अछि। मुदा एकरा लेल भर्त्सना ककरा कएल जाए? ककरो अनका दोख देब अनुचित, हमसभ स्वयं दोखी छी। हमसभ जागरूक नहि रहलहुँ, आत्म-सुख मे डुबल रहलहुँ। अवसर भेटबो कएल तथापि मैथिली भाषा लेल मुँह नहि खोललहुँ। आत्म-ग्लानि मे हमहूँ जिबैत रहलहुँ। अहाँ दुनू जखन मैथिली भाषा मे फिल्म बनबैक योजना हमरा लग प्रस्तुत केलहुँ तखन हमरो एकर उपयोगिता दिस ध्यान गेलए। फिल्म बना क' अबस्से मैथिली भाषा कैँ लाभ पहुँचाओल जा सकैए। अहाँ दुनूक संगे मैथिली भाषा मे फिल्म बनाब' लेल पूजी, समय एवं लगन हमहूँ अर्पित कर' लेल तैयार छी। अहाँ दुनूक हम स्वागत करैत छी।

भानु बाबू खुलासा केलनि, अपन मोन मे जमकल भाव कैँ धारा बना प्रभावित केलनि। हमर आ मदन भाइक मोन हर्षित भेल छल। भानु बाबूक आवास बांद्रा स्टेशनक पश्चिम चिंचपोकली रोड पर रहनि। प्रातःकाल हम दुनू मैथिलीप्रेमी ओतय पहुँचलहुँ। भानु बाबूक ममतामयी पत्नी आ छह-सात बर्खक पुत्री रानी सँ भेट भेल। चाह-नास्ताक बाद हम तीनू नजदीके मे सोलीसीटरक आफिस मे पहुँचलहुँ। करीब

दू घंटाक समय लगलै। स्टाम्प पेपर पर विभिन्न तरहक धारायुक्त कन्ट्रैक्ट पेपर तैयार भेलै। रुपैयाक आठ आना महंथ मदन मोहन दास, छह आना उदय भानु सिंह आओर दू आना केदार नाथ चौधरीक हिस्सा तय भेल। तखन भानु बाबू पूर्णतः व्यावसायिक मूड मे रहथि। हम दुनू कोनो तरहक उजूर नहि केलियनि। सहमति बनल जे जखन फिल्मक बजट बनतै तखन तय हिस्साक मोताबिक तीनू पार्टनर पूजीक उगाही करताह। खर्च सम्बन्धी एकाउन्ट बुकक प्रारूप सेहो बनल। सोलीसीटरक फीसक अदायगीक संग फिल्मक खर्च आरम्भ भेल। एकाउन्ट्स लिखक काज हमरा जिम्मा कएल गेल छल जकरा हम स्वीकार कयने रही। अहि तरहें प्रथम मैथिली भाषाक फिल्म 'ममता गाबए गीत'क श्रीगणेश भेल छल।

तेसर बैसक भानु बाबूक ऑफिस मे भेल रहए। अनिश्चयक स्थिति सँ मुक्त भेला पर हमसभ सहज मुद्रा मे आबि गेल रही। एखन तक फिल्म बनाएब से मात्र कल्पना छल। आब अहि कल्पना कँ साकार करक समय आबि चुकल रहैक। हमरा सभहक ध्यान ठोस धरातल पर केन्द्रित भ' गेल रहए। फिल्म बनेबाक कार्यक्रम आ तकर आरम्भ कोना हेतैक ताहि विषय पर हमरा आ मदन भाइक बीच वृहत् चर्चा भेल छल। ओही चर्चा कँ स्वरूप दैत मदन भाइ कहब शुरू केलनि—भानु बाबू, वयसे मे नहि, ज्ञान एवं अनुभव मे अहाँ हमरा दुनू सँ बहुत आगाँ थिकहुँ। पत्रकारिता मे अहाँक नीक दखल अछि। बम्बइक विभिन्न जाति-समुदाय मे अहाँक उठब-बैसब अछि। अइ शहर मे रह'बला तमाम मैथिल अहाँक जानकारी मे छथि। तँ अहाँ एखुनका अभियान मे हमर दुनूक गार्जियन भेलहुँ। जँ अहाँ आज्ञा दी त' हमर आ केदार भाइक किछु विचारल बात अहाँक समक्ष राखी।

—अहाँ निधोख अपन बात बाजू। आब हम तीनू एकहि पौदान पर पयर रखने छी छोट-पैघक व्यवधान नहि हेबाक चाही।

—त' सुनल जाओ। मिथिलांचल मे बड़ थोड़ लोक बुद्धिजीवी वर्ग मे अबैत छथि। फिल्म बनतै समस्त मैथिल जनसंख्या लेल। तँ फिल्मक शुरुआत ताहि तरहक विषय-वस्तु सँ होयबाक चाही जाहि मे सभहक दिलचस्पी होइक। हिन्दी सिनेमाक इतिहास दादा साहेब फाल्केक नाम सँ शुद्ध होइए। 1912 ई. मे दादा साहेब फालके 'राजा हरिश्चंद्र' नामक फिल्म बनौलनि जे देश भरि मे सफलताक संग प्रदर्शित भेल छल। दादा साहेब फाल्के धार्मिक खिस्सा राजा हरिश्चंदक चुनाव किएक केलनि? हुनकर कहब छलनि जे सिनेमा एवं सपना जँ अपन मातृभाषा मे देखल जाए त' ओकर सही प्रभाव देखनिहार पर पड़ैत छैक। सपना आ कि सिनेमा जँ धार्मिक होइक त' एकर प्रभाव आरो अधिक होइत छैक। सिनेमा युग आब' सँ

पहिने सम्पूर्ण देश मे नाटकक मंचन होइत छल। नाटक मे नब्बे प्रतिशत नाटक धार्मिक कथा पर आधारित होइत रहए। सभ तरहक विचार केलाक बाद हम आ केदार भाइ अहि निर्णय पर पहुँचलहुँ अछि जे पहिल मैथिली भाषाक फिल्म कोनो धार्मिक कथा पर आधारित हेबाक चाही। नीक त' ई होइतैक जे हिन्दी भाषा मे बनल कोनो धार्मिक फिल्मक राइट ग्रहण क' ओकरा मैथिली भाषा मे 'डब' क' हमरा लोकनि ओकरा प्रदर्शित करितहुँ। फिल्मक गीत-संगीत पक्ष पर ध्यान देब जरूरी रहैत। मैथिली संगीत कैँ नव दिशा देब एवं अत्यधिक कर्णप्रिय बनाएब सेहो हमर सभहक मुख्य काज अछि ने!

भानु बाबू चुपचाप मदन भाइक कथन सुनि रहल छलाह। मदन भाइ बजिते रहला—सिनेमा एकटा व्यवसाय थिक। निर्माण एवं वितरण, एकर दू गोट पक्ष भेल। निर्माण एवं वितरण, दुनूक ज्ञान हमरा तीनू पार्टनर कैँ किछुओ ने अछि। निर्माणक दृष्टि सँ डब कएल मैथिली भाषाक फिल्म मे श्रम एवं पूजी कम लगतै। वितरणक दृष्टि मे धार्मिक मैथिली फिल्म कैँ प्रदर्शन मे समस्या नहि औतैक। मिथिलांचल मे जतेक सिनेमा गृह अछि तकर मालिक मैथिली भाषा मे बनल धार्मिक फिल्म कैँ तत्काल स्वीकार करत। भानु बाबू, हम फेर दोहरबै छी जे फिल्म निर्माण करब एकटा व्यवसाय भेल आ एकर कार्यक्रम व्यवसायक तरहें हेबाक चाही। मैथिली प्रेम मे आबि अत्यधिक संवेदनशील बनि जँ फिल्म बनबैक योजना बनेबइ त' ई मैथिली फिल्मक भविष्य लेल घातक हेतैक। संगहि ई हमरा तीनू लेल सेहो अहितकर होयत। एखन फिल्म निर्माण एवं फिल्म वितरणक पर्याप्त जानकारी हासिल करब हमरा सभहक मुख्य उद्देश्य हेबाक चाही। मानि लिअ जे हम सभ जेनकेन प्रकारेँ मैथिली भाषाक फिल्म बनाइयो लैत छी तकर बादो एकर वितरक ताकै मे नौ डिबियाक तेल जरि जाएत आ वितरक नहिएँ भेटत। तेँ हमरा दुनूक विचार अटल अछि जे पहिल मैथिली भाषाक फिल्म धार्मिके हौउक।

भानु बाबू अन्यमनस्क भेल सभकिछु सुनि रहल छलाह। प्रायः हुनकर ध्यान कतहु आन ठाम टाँगल रहनि। मदन भाइ थोड़ेकाल चुप भेल रहला तखन फेर बाजब शुरू केलनि—जँ डब कएल फिल्म अहाँ कैँ स्वीकार नहि होयत त' ठीक, हम सभ नव फिल्म बनाएब। मुदा ओहो फिल्मक कथा-वस्तु धार्मिके रहतैक। भानु बाबू, जँ अहाँ नव फिल्म निर्माणक विचार कैँ पक्का करैत छी त' हमर एकटा सुझाव अछि। अपन मिथिला मे एक सँ एक उच्च कोटिक कवि एवं कथाकार शहर-शहर, गाम-गाम मे पसरल छथि। परिस्थितिवश आ पाठकक अभाव मे हुनकर सभहक रचना प्रकाशित नहि भ' पबैए। ओहने एक गोट कथाकार हमर

सम्पर्क मे छथि। ओ अपन रचना हमरा सुनबैत रहलाए। हुनकर एकटा लिखल नाटक छनि 'मित्रता'। ई नाटक कृष्ण-सुदामाक मित्र-भाव पर आधारित अछि। अहि नाटकक भाषा सरल एवं संवाद अत्यन्त हृदयग्राही छैक। हमरा 'मित्रता' नामक नाटक बड़ नीक लागलए। अहि अप्रकाशित नाटक कँ हम संगे नेने एलहुँ अछि। सुदामा-कृष्णक कथा धार्मिक, मार्मिक एवं मित्रताक उच्च आदर्श पर स्थापित छैक। अहि धार्मिक कथाक फिल्म कँ देखनिहारक कमी नहि रहतै। भानु बाबू, अहि नाटक कँ अहाँ देखियौ, पढ़ियौ आ फिल्म बनबै लेल बिचारियौ। हमर आग्रह जँ अति नहि होअय त' की हर्ज जे हमरा लोकनि अही नाटकक माध्यमे मैथिली फिल्म जगत मे प्रवेश करी।

मदन भाइ बड़ी काल सँ बाजि रहल छलाह। थाकि क' ओ चुप भ' गेलाह। मदन भाइ बाजि रहल छलाह आ भानु बाबू सुनि रहल छला। दुनूक बाजब आ सुनबक बीच हम अनुमान लगा रहल छलहुँ जे मदन भाइक कथनक एकोटा शब्द भानु बाबूक कर्णयंत्र मे प्रवेश नहि क' रहल छलनि।

बहुत बिलम्बक बाद भानु बाबू संक्षिप्त जवाब देलनि—अपन मिथिलाक एकटा मैथिल बहुत दिन सँ फिल्म लाइन मे कार्यरत छथि। एखन ओ कोनो नामी डाइरेक्टरक असिस्टेन्ट बनि फिल्मक सूटिंग क' रहलाए। फिल्म निर्माणक सभटा हूनर मे ओ व्यक्ति परंगत भ' चुकला अछि। हम हुनका संवाद पठौलियनि अछि। ओ काल्हि एगारह बजे एतहि हमर ऑफिस मे औताह। हमर आग्रह होयत जे अहूँ दुनू निर्धारित समय पर एतय आबि जाउ। हुनक समक्ष सभ बात राखल जेतैक। हुनका सँ वार्तालाप केलाक बादे हमसभ अपन फिल्म कथाक फाइनल करब।

8

दोसर दिन लगभग एगारह बजे हम आ मदन भाइ भानु बाबूक ऑफिस पहुँचल रही। ओतय पहिने सँ एक व्यक्ति उपस्थित रहथि। नाटे कद, हँसमुख चेहरा। हुनकर परिचय भेटल। दरभंगा जिलाक मोरो नामक गामक बासी, जनिक नाम छल परमानन्द चौधरी। चौधरीजीक बाजब, हँसब, आन-आन तरहक भाव-भंगिमा एवं देह परहक वस्त्र सभ किछु फिल्मी स्टाइल मे। कहल गेल जे परमानन्दजी फिल्म निर्माण एवं फिल्म उद्योगक तमाम बारिकीक जानकार छथि। ओहि समय मे फिल्म जगत मे डाइरेक्टरक पद पर एकटा मैथिल काज क' रहलाए ई बड़ पैघ गौरवक बात भेलै। हमरा दुनू कँ आन्तरिक प्रसन्नता भेल छल। आब मैथिली भाषा मे फिल्म बनत तकर विश्वास कायम भ' रहल छल।

बहुत तरहक हॉट-कोल्ड ड्रींक एवं हॉट-कोल्ड गप्प-सप्पक बाद भानु बाबू कहलनि—ई हमरा सभहक अहोभाग्य जे फिल्म निर्माण मे निपुण एकटा मैथिल हमर सभहक फिल्म बनबै मे अपन मूल्यवान समय, सहयोग एवं अनुभव देबा लेल तैयार भ' गेलाह अछि। इएह हमर सभहक फिल्मक डाइरेक्टर हेताह। हिनका पारिश्रमिक किछुओ ने चाही। ई त' प्रचुर धन कमाइए रहला अछि। मैथिल छथि तँ मैथिलीक सेवा लेल तैयार भेलाह। आब मुख्य बात पर अबैत जाउ। फिल्म बनबै लेल सभसँ पहिने फिल्मक कथाक चुनाव कएल जाए। अहाँ दुनूकँ आब'सँ पूर्व हम आ डाइरेक्टर साहेब अपन सभहक मैथिली फिल्मक कथा की हेतै तकर निर्णय क' चुकलहुँ अछि। ई कथा एखुनका समग्र मैथिल समाज लेल फिट अछि। डाइरेक्टर साहेब कँ समयक अभाव छनि। ई आइए संध्याकाल आउटडोर सूटिंग लेल बम्बइ सँ बाहर चल जेताह। तँ हमरा दुनूक बीच जाहि कथाक फाइनल चुनाव भ' चुकलए तकरा अहाँ दुनू सेहो सुनिए लिअ।

भानु बाबू वक्ता रहथि, कथा सुनौलनि।

एकटा ठाकुर, मानि लिअ पुरना जमींदार। ठाकुर, ठाकुरक पत्नी आ ठाकुरक जेठ

विधवा बहिन, परिवार एतबेटा। परिवारक भीतर ठाकुरक विधवा बहिनक कठोर अनुशासन एवं एकक्षत्र हुकूमत। बाकी खेती-गृहस्थीक काज लेल मुंशी, देवान, कमतीआ, चरबाह आ जन-मजदूर। दलान आ आंगनक बीच ठाकुरक आवागमन। मुदा सभ तरहक काजक संचालन लेल केवल ठाकुरक विधवा बहिनक आदेश। ठाकुरक पत्नीक सेवा मे नियुक्त खबासीन। खबासीन प्रत्याशित रूपे परम सुंदरि। कथा मे फिल्मक हिरोइनक स्थान पर खबासीन कैँ जगह देल गेल रहए। खबासीनक पति ठाकुरक मजदूर, जे ठाकुरेक देल जमीन पर फूसक घर मे रहैत छल आ ठाकुरक काज क' बोनि पबैत रहए। खबासीन कैँ दू बर्खक एकटा बेटा।

ठाकुरक पत्नीक प्रसवकाल मृत्यु। मुदा ईश्वरी चमत्कार, नवजात शिशु बाँचि जाइए। आब खबासीने ओकर माय, खबासीनेक दूध पीबि नेना जिबैए। खबासीन कैँ ठाकुरक बेटा लेल आस्ते-आस्ते स्नेह एतेक प्रबल भ' जाइए जे ओकरा अपन जनमाओल बेटाक सोह रहिए ने जाइए। खबासीनक बेटा टुग्गर बनल गाम मे बौआइए आ एक दिन पोखरि मे डुबि क' मरि जाइए। समूचा गाम मे हाहाकार मचैए मुदा खबासीन कैँ तकर परबाहि नहि। खबासीन ठाकुरक बेटाक प्रेम मे डुबलि आब रातिओ मे हबेलिए मे रहैए।

ठाकुर आ खबासीनक बीच प्रेमालाप। एकर भनक ठाकुरक विधवा बहिन कैँ लागि जाइए। बहिनक कठोर वचन सुनलाक बादो ठाकुरक रुचि खबासीन मे कम नहि होइए। नौकर-चाकर आ खास क' मुंशी ठाकुरक खबासीनक प्रेमालाप सुनैए आ गाम मे जहँ-तहँ बजैए। विधवा बहिन खबासीन कैँ अधिक काल दुर्वचन कहैत छथि। मुदा तकर कोनो असरि ने ठाकुर पर आ ने खबासीन पर पड़ैए।

समय बितैत छैक। ठाकुरक बेटाक मुंडन, उपनयन। खबासीनक एकटा भतीजी जे बकरीक चरबाही करैए, अधिक काल ठाकुरेक हबेली मे रहैए। ठाकुरक पुत्र आ खबासीनक भतीजीक बीच खेल-धूप और बहुत किछु... ठाकुरक पुत्र कैँ पढ़ाइ लेल शहर पठाओल जाइए। ठाकुरक मृत्यु।

आब ठाकुरक बहिनक एकमात्र शासन। विधवा बहिन अपन दुष्ट आ इर्खालु स्वभावक कारणे खबासीन कैँ यातना देब शुरू केलनि। अत्यन्त गरीबी मे खबासीनक जीवन-यापन, दुखित पड़ब, दवाइ-दारुक अभाव आ एक मुट्ठी पुरान अरबा चाउरक पथक अभाव मे मृत्यु।

ठाकुरक बेटाक पढ़ाइ समाप्त क' गाम मे वापस आयब। ओ जे खबासीन कैँ अपन माय मानैत छल तकरा खबासीनक कष्ट एवं गरीबी मे मृत्युक समाचार ओकर भयंकर क्रोधक कारण बनल। ओ बखारी मे आगि लगबै लेल तत्पर भ' गेल। काले-क्रमे ओकर

क्रोध कम भेलै आ खबासीनक भतीजी सँ प्रेमालाप बढ़ैत गेलै। अन्त मे ठाकुरक बेटा सँ खबासीनक भतीजीक बिआह सम्पन्न होइए। कथा समाप्त।

हम आ मदन भाइ कथा सुनलहुँ। कथाक रचयिता भानु बाबू छथि वा परमानन्द जी, किछुओ भाँज नहि लागल। कथा सुनलाक बाद एकरो जानकारी भेटल जे ठाकुरक पाट स्वयं भानु बाबूए करताह। बाँकी कलाकार एवं फिल्म मे काज केनिहारक, फनकारक चयन बाद मे कएल जेतै। भानु बाबू कथाक पाठ समाप्त केलनि आ कहलनि—ई कथा एहन अछि जाहि मे ऊँच-नीच, जाति-धर्म इत्यादि सभ किछुक भेद-भाव मेटा जाइए। ई कथा मिथिला मे जागरण आनत आ एकरा समस्त मैथिल स्वीकार करत।

हम आ मदन भाइ बौक भेल बैसल रहलहुँ। सभकिछु अटपटे लगैत रहए। भानु बाबूक नियति पर शंका करब अनुचित छल। मुदा शंका उचित अनुचितक परबाहि नहि करैए। अनुचित रहितहुँ सभ तरहक शंका मोन मे पदार्पण क' गेल छल। भानु बाबूक चंचलता एवं व्यग्रता देखि आश्चर्य भ' रहल छल। कोनो बातक विचार करक जरूरति भानु बाबू कँ नहि छलनि। ओ पहिनहि सँ अपन विचारल बात कहैत रहलाह—फिल्म मे पटकथा तैयार करब सभ सँ कठिन काज। पटकथे मे ड्रामा, थ्रील, गीत, संगीत एवं डायलॉगक स्वरूपक स्थान बनैए। परमानंदजी जखन छथिए त' चिंता कथी लेल? पटकथा लिखैक अथवा लिखबैक सभटा दायित्व ओ उठा लेलनि। एतबे नहि, पटकथाक संग फिल्मक कलाकार, फनकार, मेकअप मैन, ड्रेस मैन, कैमरा मैन, साउन्ड मैन सभहक जोगार परमेनंदजी करताह। आब बचल फिल्मक संगीत। एखन म्युजिक डाइरेक्टर मे चित्रगुप्तक स्थान जगजियार अछि, चित्रगुप्त बिहारेक छथि। जुगुत लगा क' हम हुनका अबस्से तैयार क' लेब। तखन बचल फिल्म सूटिंगक स्थान। एकर चयन अहाँ दुनू गोटे पर अछि। आउटडोर सूटिंगक स्थान अहीँ दुनू कँ ताकय पड़त।

हम आ मदन भाइ फिल्म निर्माणक सभटा भार उठबै लेल बम्बइ पहुँचल रही। मुदा भानु बाबूक तुफानी निर्णय मे हमसभ भसिया रहल छलहुँ। तँ चुप भेल बैसल रहलहुँ आ टकटक तकैत रहलहुँ। भानु बाबू चुप नहि रहलाह, कहलनि—फिल्मक बजट सेहो अनुमानित भ' चुकलए। लगभग तीस-पैंतीस हजार मे फिल्म तैयार भ' जाएत। फाइनल बजट बनै मे थोड़ेक समय लगतै। मुदा बेसी सँ बेसी चालिस हजार सँ बेसी नहि हेतै तकर करार परमानंदजी क' चुकला अछि।

भानु बाबूक उत्साह मे जाहि तरहक बिरड़ो उघिया रहल छल तकर कारण की भ' सकैत छलै? की ओ परमानंदजी सँ अत्यधिक प्रभावित भ' गेल रहथि? की हुनकर

अंतरात्मा मे किछु विचार, स्वयं हीरो बनी, पहिने सँ संचित रहए जे एखन अनुकूल समय भेला पर मुखरित भ' गेल छल? सही की छलै तकर अन्वेषण नहि क' सकलहुँ। भेल की रहै मात्र से एखन कहि रहल छी।

हम आ मदन भाइ वापस अपन होटल एलहुँ। मोन प्रसन्न नहि छल। मोन मे खतराक बिगुल बाजि रहल छल। यद्यपि परमानंदजी सँ भेट एवं फिल्म डाइरेक्शन मे हुनकर दीर्घ अनुभव मोन केँ थोड़ेक निश्चिंत करैत रहए। तथापि माथ मे चिंता प्रवेश कैए चुकल छल।

चिंताक कारण रहैक। भारतीय फिल्मक इतिहास में भाषा नहि भाव प्रधान रहै। भावक मुख्य स्रोत छल देशक धार्मिक आस्था। दादा साहेब फाल्केक मूक धार्मिक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र'क स्वागत सम्पूर्ण देश मे भेलै। तकर बाद बनल 'लंका दहन' आ 'कालिया मर्दन'। दुनू सफल फिल्म धर्मकथे पर आधारित रहए। ताही समय मे आंचलिक फिल्म बनब सेहो आरम्भ भेल छलै। तमिल मे 'कालिदास' आ तेलगू मे 'भक्त प्रह्लाद' बनल।

1931 ई. मे बोल्ती फिल्म 'आलम आरा' बनल। 1933 ई. मे पहिल सामाजिक फिल्म 'देवदास' बनल। शरच्चंद्रक अहि उपन्यासक नायक के.एल. सहगल छलाह। भारतीय मानस पटल पर देवदास फिल्मक प्रभाव एतेक ने पड़लै जे तकर बाद सामाजिक फिल्मक लाइन लागि गेलै। एक सँ एक हिट फिल्म पर्दा पर देखाओल जा रहल छलै–चन्द्रलेखा, आबारा, दो बीघा जमीन, प्यासा, मधुमती, पथेर पंचाली आदि अनेक प्रसिद्ध फिल्मक निर्माण भेल। फिल्मक गीत, संगीत, कथा, पटकथा, एक्टिंग, डायरेक्शन, छायांकन इत्यादि सभ किछु उच्च शिखर पर पहुँचि गेल रहै।

एहन स्थिति मे मैथिली भाषाक सामाजिक फिल्म केँ स्थापित करब साधारण काज नहि छलै। हमरा सभहक पूजी छल मैथिली भाषाक आकर्षण। मुदा मैथिल हिन्दी भाषा मे बनल उच्च कोटिक फिल्म केँ देखैक अभ्यस्त भ' चुकल रहथि। भाषाक नाम पर मैथिल केँ कतेक दूर तक फुसिआओल जा सकैत छल। जँ मैथिली भाषा मे धार्मिक फिल्म बनितैक त' दर्शक संबन्धी अड़चन नहि होइतैक। मुदा एकरा लेल चाही ओहन दृष्टि जे भविष्यक आकलन क' सकए। एखन भानु बाबूक आदेश मे, व्यवहार मे आ चिंतन मे तकर पूर्णतः अभाव छल।

चिंताक बहुतो कारण छल। पहिल कारण छल भानु बाबूक पार्टनर बनब। फिल्म निर्माणक सभटा खर्च जखन मदन भाइ बहन कर' लेल तैयारे छलाह तखन पार्टनरशिपक प्रयोजन किएक? दोसर जे फिल्म मे भानु बाबू स्वयं एक्टिंग करथि सेहो बात सही नहि रहए। नचबैक स्थान पर स्वयं नाच' लागी ई एक तरहक

हराकीरी (आत्मदाह) भेल। तेसर बात जे मदन भाइ फिल्मक खिस्सा लेल धार्मिक कथाक तर्कयुक्त चर्चा कयने छलाह। भानु बाबू तकरा एकदमे सँ खारिज क' देने रहथिन। पौराणिक कथा आ ओहि मे वर्णित जीवन-दर्शन मैथिल दर्शक लेल टॉनिकक काज करितए। फिल्म निर्माण भेला पर वितरकक अभाव नहि होइत। एखन जे कथा भानु बाबू सुनौने रहथि ताहि मे किछु नवीनता नहि रहै। तकर बादो अहि तरहक मैथिली भाषा मे बनल सामाजिक फिल्म लेल वितरकक दरकार हैत जकरा ताकब बड़ कठिन काज भेल ने!

इएह सभ बात कैँ विचारैत हम आ मदन भाइ राति भरि बिछौन पर करोट बदलैत-बदलैत भोर केलहुँ। प्रातःकाल मदन भाइ अपन बिछौन पर बैसले-बैसले कहलनि—केदार भाइ, जे भ' रहलैए तकरा होब' दिऔ। मैथिली भाषाक प्रति स्नेह हमरा—अहाँ कैँ एतय अनने अछि। भाषाक प्रतिष्ठा कोना कायम हेतै ताहि लेल भानु बाबू सहित सभटा मैथिल कैँ जिम्मेदारी छनि ने! एकटा बात कठोर सत्य छैक जे हमरा-अहाँ कैँ फिल्म बनबैक लूरि नहि अछि। तखन त' दोसरेक भरोसे ने काज हेतैक! एकरो संभावना छैक जे पहिने सँ हृदय मे संचित मैथिली प्रेमक कारणे भानु बाबू बावला बनि गेलाए आ उत्तेजित भ'क' फैसला क' रहलाहए। एखुनका स्थिति मे हुनका रोकब अथवा टोकब अनर्थकारी होयत। फिल्म बनब रुकि जायत। तैँ हम कहब जे नफा-नोकशान कैँ परमेसरक जिम्मा क' हमसभ भानु बाबूक आदेश कैँ शिरोधार्य करैत रही।

चूड़ा-दही-चीनी भोजन करए लेल गेल रही। आगू मे पोलाव-विरयानी-मूर्गमोस्सलम परसि देल गेल। एकटा ध्यान जेबी पर। मूल्य देल पार लागत आ कि नहि। दोसर ध्यान पेट पर। भोजन पचत आ कि नहि। तखन अल्प वयसक व्यग्रता, मैथिली-प्रेम रोगक विवशता आ 'जे हेतै से बुझल जेतै' बला विचारक अनिवार्यता हमरा परिस्थितिक अनुचर बना देलक। हम अपन सनकल बुद्धिक लगाम कैँ कसि देलियै आ भानु बाबूक आदेशक पालन करैक निश्चय क' लेलहुँ।

भानु बाबू फिल्मक नाम रखलनि 'नैहर भेल मोर सासुर'। फिल्मक नाम फिल्मक कथा सँ मेल नहि रखैत छल। मुदा तैँ करी त' की, हम आ मदन भाइ भानु बाबूक डेग सँ डेग मिला क' चलबाक प्रण क' लेने रही। फिल्मक प्रसिद्ध नाम 'ममता गाबए गीत' त' बहुत बाद मे फुरायल रहै। 'इम्पा' मे फिल्मक पहिल नाम 'नैहर भेल मोर सासुर'क नामे सँ रजिस्ट्रेशन कएल गेल रहैक।

काज कैँ रोकल नहि जा सकैत छल। फिल्मक नाम रजिस्ट्रेशनक बाद लैबक चुनाव कएल गेल। फिल्मक गीत-संगीत रेकार्डिङ्ग, एडिटिंग, प्रोसेसिंग इत्यादि सभ

तरहक काज लेल दादर स्थिति 'बम्बइ लैब' कैँ चुनल गेल रहए। हम आ मदन भाइ दस हजार टाका ल'क' बम्बइ लैब पहुँचलहुँ। लैबक मालिक आ एम.डी. कोनो संभ्रान्त पारसी महोदय रहथि। ओ हमर आ मदन भाइक चढ़ती जवानी आ 'चढ़ि जो बेटा शूली पर' बला वयसक बेकलता पर ब्रेक लगबैत कहलनि–''थोड़ी सी बात तुम लोग जान लो तो अच्छा रहेगा। फिल्म बनाना जोखिम का काम है। सौ फिल्म मेरे लैब में रजिस्टर्ड होता है जिसमें मुश्किल से दस-पन्द्रह ही फिल्म फ्लोर पर पहुँचता है। उसमें से एक या दो फिल्म ही बनकर तैयार होता है। उसके बाद वितरक का कारगुजारी और उसका पेचीदा कन्ट्रैक्ट। सभ के अन्त मे पब्लिक का पसंद और नापसंद। फिल्म फ्लाप होने का डर से निर्माता रात-रात भर सो नहीं पाता है। मेरी राय मे जल्दबाजी मत करो। फिल्म उद्योग में भी कुछ अच्छे लोग हैं। उनसे विचार लो। फिल्म बनाने की बात अगर पक्की हो तो समझबूझ कर कहानी का चुनाव करो। जानकार लोगों से पटकथा तैयार कराओ। कहने का मतलब है कि अच्छी तरह होम वर्क कर लो। उसके बाद ही लैब में रजिस्ट्रेशन का दस हजार रुपया जमा करो। दस हजार रुपैया एक भाड़ी रकम है और वह डूब जाने का खतरा है। तुम दोनों उमर के कच्चे हो। मेरा अगर कहा मानो तो फिल्म के धंधे से तौबा कर लो। यह बहुत ही गंदा काम है। नये-नये लोगों के लिए यह धंधा आत्मघाती है। इसमें इतना फिसलन है कि बड़ा-बड़ा बाजीगर भी गुमसुदा हो जाता है। मैंने अपनी बात कह दी, आगे तुम्हारी मर्जी।''

चेतावनी भेटल छल आ सेहो सोझ भाषा मे। मुदा हमर सभहक आतुरता मे तेहन ने गति रहए जे हमसभ चेतावनी कैँ ग्रहण कर' लेल बुद्धि नहि रखैत छलहुँ। दस हजार टाका जमा कएल। रजिस्ट्रेशनक कागत प्राप्त केलहुँ।

प्रोड्यूसर बनब फिल्मी संसार में बड़ पैघ ओहदा। बम्बइ लैब मे जखने किओ रजिस्ट्रेशन करैए एकर खबरि सिनेमा जगत मे आगि जकाँ पसरि जाइए। जेना कोनो तीर्थ मे अनेरो पंडा अहाँ मे सटि जाएत, तहिना लैबक मुख्य दुआरि पर अबैत-अबैत अनेक अनजान लोक हमरा दुनू मे सटि गेल रहए। विभिन्न तरहक प्रलोभन भेटल, अता-पता दिअ पड़ल। ''अच्छा तो बिहार प्रांत की भाषा है मैथिली। अरे, अभी-अभी बिहार की दूसरी भाषा भोजपुरी फिल्म का भी रजिस्ट्रेशन हुआ है। फिल्म का नाम क्या है? नाम है 'गंगा मैया तोहैं पिअरी चढ़ैबो'।''

भोजपुरीक प्रथम फिल्मक निर्माण संबन्धी सूचना भेटल रहए। फिल्मक नामे कहि रहल छलै जे फिल्म धार्मिक छैक। धार्मिक फिल्मक माने रहै, एकटा संदेश रहै। हमरा आ मदन भाइ कैँ अपन मैथिली भाषाक फिल्म 'नैहर भेल मोर सासुर' मे ढोल-पिपहीक ध्वनि कर्णगोचर होब' लागल रहए।

9

भानु बाबूक पत्र भेटल। सूचना छल जे स्क्रिप्ट अर्थात् पटकथा तैयार भ' गेलए। हम दुनू गोटे दोसर खेप बम्बइ जएबा लेल तैयार भ' रहल छलहुँ। बम्बइ मे भानु बाबूक कइएक गोट सभ्रान्त मैथिल बंधु सँ जान-पहिचान। ओहि मे सँ कइएक बंधुक डेरा गाहे-बगाहे खालिए रहैत छल। भानु बाबू ओहने खाली पड़ल डेराक इन्तिजाम क' क' रखने रहथि जे हमरा सभहक अगिला बम्बइ प्रवास मे आवास बनैत। आब होटल मे रहबाक जरूरति नहि। अइ बेर मदन भाइक नीजक सेवक लखन सेहो संगे जायत। बर्तन-बासन, ओछैन-बिछौन संगे घी-अँचारक मोटरी बान्हल जा रहल छल।

हम आ मदन भाइ फिल्मक गप्प-सप्प क' रहल छलहुँ। एकाएक मदन भाइ कँ किछु मोन पड़लनि। ओ चिहुकैत कहलनि—केदार भाइ, एकटा मैथिल कवि जनिक नाम छन्हि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आ जे धमदाहा, पुर्णियाँ जिलाक निवासी छथि तनिक रचना सुनक अवसर भेटल छल। हुनकर रचल गीत बड़ नीक लागलए। ओ एखन अही शहर मे छथि। हमर सभहक फिल्म मे गीत सेहो रहतै ने! गीत त' कियो लिखबे करताह ने? ओना त' मिथिला मे कविक कमी नहि अछि। मुदा हमरा नजरि मे रवीन्द्र अलग किस्मक गीतकार छथि। हम आ अहाँ बम्बइ प्रस्थान सँ पहिने जँ हुनका सँ भेट करिअनि ताहि मे कोनो हर्ज?

—एकदमे सँ कोनो हर्ज नहि। अपन सभहक फिल्म मे कथाक निबटारा भ' गेलए। कथाक साज-शृंगार लेल पटकथा सेहो बनि चुकलैए मुदा गीत-संगीत सँ जे फिल्मक धमनीक रक्त-प्रवाह हेतै, से त' बाँकिए छैक। रवीन्द्र सँ भेट करक लेल चलल जाए।

लहेरियासरायक बलभद्रपुर मोहल्ला। माटि सँ लेबल एकटा घर मे मात्र एकटा कोठली। देबाल मे नोनी लागल आ नीचाँ कच्चा फर्श मे कइएक ठाम चालीक भुरभुरी। अखरा चौकी पर चित्त भेल रवीन्द्रजी सुतल छलाह। हमरा सभ कँ देखतहि ओ हड़बड़ाइत उठि क' ठाढ़ भेलाह। कोठली मे फर्नीचरक नाम पर एसगरे चौकी

मुँह बौने पड़ल रहए। चौकिए पर हम तीनू विराजमान भेलहुँ।

परिचय-पात भेल। हम सभ किएक रवीन्द्रजी सँ भेट करए गेल रही तकर जानकारी हुनका देलियनि। आग्रह केलियनि जे ओ अपन रचल एक-दू गोट गीत सुनाबथि। रवीन्द्र मुँहक पान थुकरलनि, गमछा सँ ठोर पोछलनि आ चौकी पर पलथी मारि बैसि गेलाह। मात्र किछु मिनटक विश्रामक बाद ओ गीत सुनबए लगलाह। उजड़ल कोठली गमकि उठल।

उपनयनक समय मे ढोल-पिपहीक धमगज्जर ध्वनि मे लपेटल गीत, चतुर्थी रातिक कनिआँ-वरक प्रथम मिलन मे लजायल-सकुचायल-सिहरैत गीत, दुरागमनक समय मे बेटीक नोर मे भीजल गीत, गामक छौंड़ीक काँख तर दाबल छिट्टा-खुरपीक खनखन गीत। सभ गीत मे मिथिलाक माटिक अनुपम सुगन्धि। कोमल, हृदय-स्पर्शी आ नैसर्गिक गीत रवीन्द्रजी सुनौलनि। हाय रे मिथिला! तोहर नुकायल खजाना मे कतेक रत्न-जवाहरात भरल छौ? तखने हम आ मदन भाइ निश्चय क' लेलहुँ जे प्रथम मैथिली फिल्मक गीत रवीन्द्रे रचताह।

हम, मदन भाइ, रवीन्द्र आ लखन आधा दर्जन मोटरीक संग बम्बइ लेल ट्रेन पकड़लहुँ। दादर स्टेशन पर भानु बाबू पहिने सँ उपस्थित रहथि। रवीन्द्र कँ देखितहि हुनक आँखिक ऊपर भहुँ बक्र भ' गेलनि। हमरा एक कात एकांत मे ल' गेलाह आ कहलनि—जकरा-तकरा संग ल' लैत छियैक। फिल्मक 'कौस्ट' बढ़ि रहल छैक ताहि दिस ध्यान नहि जाइए?

ताहि समय मे दरभंगा सँ बम्बइ तकक यात्रा मे हारल पहलवानक थकान। भानु बाबूक उपराग सुनि क्रोध भेल रहए, मुदा तकरा हम पीबि गेलहुँ। हमर सभहक डेरा तारदेव मोहल्ला मे लगे मे समुद्रक पेट मे बनल महालक्ष्मी मंदिर। समुद्रक काते-कात पथार लागल सिमेन्टक ब्रेंच। साँझक समय, समुद्री हवा आ समुद्रक तरंग मे छिड़िआयल खाम्ह सँ बिजलीक ज्योति बम्बइ शहर कँ मादक बना देने छलै। भानु बाबूक संग हम तीनू ब्रेंच पर आराम सँ बैसि गेलहुँ। हम रवीन्द्र कँ आग्रह केलियनि। ओ अपन सीता नामक खण्ड-काव्यक पाठ शुरू केलनि। रवीन्द्रक कविता पाठ मे प्रत्येक ऋतुक संगीत, प्रत्येक फूलक पराग आ प्रत्येक भाव-भंगिमाक सचित्र छवि निवेदित छल। भानु बाबूक आँखि मे चमक आबि गेलनि।

तकर बाद रवीन्द्र गीत सुनबए लगलाह। 'चलू चलू बहिना, जहिना छी तहिना। लाल भैया ल'क' अयलायुह, लाले-लाले कनिआँ।'' एक गीत, दोसर गीत, तेसर गीत। भानु बाबू मंत्रमुग्ध भ' गेलाह। हमर हाथ पकड़ि फेर ओ हमरा एकांत मे ल' गेलाह आ नोरायल आँखिए कह' लगलाह—ई व्यक्ति जनिकर नाम रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अछि, विलक्षण प्रतिभाक स्वामी छथि। हिनकर गीत मे मिथिलाक संवेदनशीलता मुखरित होइए। हिनकर प्रत्येक गीत सँ एक नव खिस्साक निर्माण भ' सकैए। रवीन्द्रक गीत मिथिला मे गीत-संगीतक एकटा नवयुग आनत तकर हम कल्पना करैत छी। हमहूँ कविता रचैत छी आ सोचने रही जे अपन फिल्मक गीत हमहीं लिखब, मुदा से नहि। रवीन्द्रक परिचय पाबि हम अपन विचार कैँ तिलांजलि द' देलए। अपन फिल्मक गीतकार रवीन्द्रे हेताह। हम अहाँ कैँ आ महंथजी कैँ धन्यवाद दैत छी जे रवीन्द्र सनक होनहार एवं प्रतिभासम्पन्न कवि कैँ तकलहुँ आ बम्बइ अनलहुँ अछि।

गीतकार भेला रवीन्द्र। आब 'म्युजिक डाइरेक्टर'क खोज। आंचलिक भाषाक फिल्म आ कमजोर बजट। मुदा इच्छा आकाश मे ठेकल। बंग भाषाक प्रसिद्ध गायक आ संगीतकार हेमंत कुमार हिन्दी फिल्म मे सेहो तहलका मचौने रहथि। मोन पाड़ियौ नागिन फिल्मक गीत 'मन डोले तन डोले'। मदन भाइक कहब जे थोड़ेक खर्च बढ़तै त' बढ़तै। हेमंत कुमार बंगालक थिकाह आ हुनका विद्यापतिक कविता सँ परिचय हेबेटा करतनि। विद्यापतिक कविताक यद्यपि अपन राग एवं लय छैक, तथापि हेमंत कुमार सनक म्युजिक डाइरेक्टर ओहि मे अधिक माधुर्य भरि देथिन। भानु बाबू कैँ से पसिन्न नहि। ओ चित्रगुप्त नामक म्युजिक डाइरेक्टरक पक्ष मे रहथि। चित्रगुप्त बिहारेक छला आ हुनकर कनेक्शन 'इन्डियन नेशन' अँग्रेजी समाचारपत्रक एडिटर सँ छलनि। उत्साह एवं विश्वास उमंग-तरंग मे भानु बाबूक संग हम सभ चित्रगुप्तक निवास पर पहुँचलहुँ। हुनकर ठोका सनक जवाब—''मैंने भोजपुरी भाषा की फिल्म 'गंगा मैया तोहे पिअरी चढ़ैबो' का म्युजिक देने का करार कर लिया है। अब अगर मैं दूसरा आंचलिक फिल्म में म्युजिक देने की बात को स्वीकार करूँगा तो मेरा कॅरिअर खतरे मे आ जाएगा। मुझे हिन्दी फिल्म मे काम मिलना बंद हो जाएगा। मैं अपने कॅरियर के साथ और रिस्क नहीं ले सकता हूँ।''

'आश निराश भयो' बला मानसिक स्थिति मे आबि गेलहुँ। एकाएक श्याम शर्मा नामक एकटा नव म्युजिक डाइरेक्टर प्रगट भेला। हारमोनियम ओ संगे अनने रहथि। श्याम शर्मा फर्श पर बैसि गेलाह आ विद्यापतिक गीत 'तोहे जनु जाह विदेश' गाबए लगलाह। श्याम शर्माक आवाज अत्यन्त मधुर छलनि। हुनकर कंठ सँ बहरायल विद्यापतिक गीत हमर सभहक हेरायल, मुतिआयल आ चिंता मे उब-डुब करैत मनोदशा कैँ तरोताजा क' देलक। श्याम शर्माक वर्ण श्यामे रहनि। ओ पटनाक नजदीक खगौलक बासी रहथि। फिलिप्सक ऑल इन्डिया म्युजिक कम्पीटीशन मे ओ महेन्द्र कपूरक संग शीर्ष गायक घोषित भेल छलाह। फाइनल गीत रेकार्डिंगक

समय जखन हुनकर आवाजक पैमाइश ध्वनिनियत्रंक यंत्र पर भेल छलनि तखन ओ पार्श्वगायक पद लेल असफल भ' गेल रहथि। महेन्द्र कपूर पार्श्वगायक बनलाह आ श्याम शर्मा म्युजिक डाइरेक्शनक क्षेत्र मे अपन भाग्यक अजमाइस करैत बम्बइए मे रहि गेल छला। म्युजिक डाइरेक्टरक अइ फिल्मक बादे श्याम शर्मा अपन नामक टाइटिल बदलि श्याम सागर बनि प्रसिद्ध भेल रहथि।

एकटा साँच बात कहब जरूरी भ' गेलए। यद्यपि श्याम शर्मा हमर सभहक फिल्मक म्युजिक डाइरेक्टर रहथि, मुदा एकटा विद्यापतिक गीत कें छोड़ि बाँकी रवीन्द्रक सभटा गीतक स्वर, तर्ज एवं लचकक निर्माण जन्मजात कलाप्रवीण रवीन्द्र स्वयं कयने रहथि। गीतक पद मे भरल स्वरक आरोह-अवरोह रवीन्द्रेक छलनि। श्याम शर्मा विभिन्न वाद्ययंत्रक ध्वनि गीत मे पिरौने छलाह।

आब गीत के गौताह तकर विचार होब' लागल रहए। लता एवं रफीक फीस लगभग तीन हजार टाका प्रति गाना। तकर अलावा हुनक दुनू सँ डेट प्राप्त करब बड़ मुश्किल काज छल। तखन सभटा विचार केलाक बाद जे फाइनल भेल से कहैत छी। 'तोहे जनुजाह विदेस' आ 'भरि नगरी मे सोर, बौआ मामी तोहर गोर' दुनू गीत सुमन कल्याणपुरी, 'मैया हौउ विराजे मिथिला देश मे' महेन्द्र कपूर, 'अर्र बकरी घास खो' गीतादत्त, 'कनी बाजू अमोल बोल भउजी' कृष्णा कल्ले आ समदाउन स्वयं श्याम शर्मा गौलनि। अहि तरहें फिल्मक सभटा गीतक रेकर्डिंग बम्बइ लैब मे तैयार भेल छल।

गीत-रेकर्डिंगक काल बहुत तरहक कटु अनुभव भेल रहए जाहि मे सँ किछुएक हम चर्चा करब। सुमन कल्याणपुरी कें दू गीतक फीस चौदह सय टाका देने रहियनि। मुदा हुनकर पतिदेव तीन सय टकाक रसीद देलनि आ कहलनि—''फिल्म जगत मे ऐसा ही होता है।''

विद्यापतिक 'तोहें जनु जाह विदेस' नामक गीतक रेकर्डिंग समाप्त भेला पर गायिका सुमन कल्याणपुरी पुछने छलीह—''ये विद्यापति कौन थे?'' हुनकर अज्ञानता पर क्षोम भेल रहए। विद्यापति के छलाह, एहनो अनर्गल प्रश्न पूछल जेबाक चाहैत छल? मुदा तखने ध्यान मे आयल जे मराठी महिला मिथिला सँ दूर क्षितिजक ओहि पारक छलीह। हुनका जखन विद्यापतिक परिचय एवं गीतक भावार्थ बुझा देलियनि तखन ओ कहने छलीह—''आह! विद्यापति एक अच्छे शायर थे।''

तहिना 'अर्र बकरी घास खो' नामक गीतक रेकर्डिंग काल गीतादत्तक भावनात्मक समस्या सँ पाला पड़ल रहए। गीतादत्त कें अपन पति प्रसिद्ध फिल्म निर्माता गुरुदत्त संग अनबन चलि रहल छलनि। गीतादत्त दिन-राति नशा मे बूत्त रहैत छलीह। चारि दिनक सिटिंग बर्बाद भेल रहए। बम्बइ लैबक रोजक फीस आ वाद्ययंत्रक खर्चक

कारणे आर्थिक संकट मे पड़ि गेल रही। आरजू-मिनती केलाक बाद पाँचम दिन गाना टेक भेल छल। गीतादत्त आ गुरुदत्तक समस्या सही मे एतेक गंभीर छलनि जे किछुए दिनक बाद गुरुदत्त आत्महत्या क' लेने रहथि। काफी मेहनत आ दौड़-धूपक बाद 'ममता गाबए गीत' फिल्मक सभटा गीतक रेकर्डिंग समाप्त भेल छल आ म्युजिक खर्च कुल चौदह हजार टाका एकाउन्ट बुक मे दर्ज कएल गेल रहए।

आब फिल्मक कलाकार एवं फनकारक तलाश शुरू भेल। कैमराक आगाँ जनिक किरदारी अहाँ सिनेमा मे देखैत छियैक से भेलाह कलाकार। कैमराक पाछाँ कैमरामैन, डाइरेक्टर, साउन्डमैन, लाइटमैन, मेकअपमैन आदि भेलाह फनकार। जेना कहि चुकल छी जे फिल्म निर्माताक पद बड़ पैघ होइए। हेंजक-हेंज कलाकार एवं फनकार हमर सभहक डेराक तिरपेछन कर' लागल रहथि। बहुतो सँ भेट केलियनि, बहुतो कैँ आश्वासन देलियनि आ ओही मे थोड़ेक संग कन्ट्रैक्ट फाइनल सेहो कयलहुँ।

प्रसिद्ध चरित्र अभिनेता अभि भट्टाचार्य सेहो सम्पर्क कयने रहथि। फिल्म मे ठाकुरक पाट लेल ओ फिट रहितथि। मुदा ठाकुरक पाट भानु बाबू स्वयं करताह। तखन अभि भट्टाचार्यक कोन काज? ठाकुरक बेटा अर्थात् फिल्म मे हीरोक किरदार लेल त्रिदीप कुमारक चयन कएल गेल। त्रिदीप कुमार बानू छपड़ाक मैथिल रहथि। पछिला पाँच बर्ख सँ हीरो बन' लेल ओ फिल्म जगत मे तपस्यारत छलाह। त्रिदीप कुमार सज्जन, फिल्मक जानकार एवं पर्सनेल्टीक धनी छलाह। साइड हिरोइन लेल लता बोस कैँ सभ पसिन्न केलनि।

आब फिल्मक मुख्य हिरोइन अर्थात् ठाकुरक खबासिनक खोज शुरू भेल। बहुतो साइड हिरोइनक कोठी पर माथ पटकलहुँ। अन्त मे अजराक मकान पर पहुँचलहुँ। बम्बइ शहरक अट्टालिकाक बीच सँ कोनो मृगनयनी सोझा मे आबि गेलि होथि आ हुनका देखितहि मोन मे नुकायल रतिक सोआमी कामवाण छोड़ै लेल उद्यत भ' गेल होथि तेहने बोध भेल छल। सौन्दर्यक प्रतिमा अजरा कैँ देखि क' निरामिष मदन भाइ कैँ हिचकी उठि गेलनि। हमरा संशय होम' लागल छल जे कहुँ मदन भाइक संन्यास धर्मक पतन ने भ' जानि। अहाँ वाजिब प्रश्न करब जे केदार भाइ, अहूँक वयस त' मदन भाइक वसयक समकक्षे रहल होयत? की अहाँ मदनोन्मुख नहि भेल रही? हमर जवाब अछि जे हम फिल्मक खर्चा-बही लिखैत रही। कॉमर्सक विद्यार्थी कवि नहि बनि सकैए। सदिकाल हमर आँखि फिल्मक बजट मे केन्द्रित रहैत छल। फूलक गमक, गीतक मधुरता आ कि सौन्दर्यक पराग हमरा लेल किछु माने नहि रखैत छल। खर्चाबही लिखनिहारक मनोरथ ओहुना दग्ध भेल रहैत छै। हम समयक कतरन बनल फिल्मक काज क' रहल छलहुँ।

अजरा कैँ देखि मदन भाइक कंठ सँ हिन्दी कविता धाराप्रवाह बाहर निकल' लागल–'कछु आप हँसे, कछु नयन हँसे। कछु नयनन बीच हँसे कजरा।' एकाएक मदन भाइ कोंकिएला–अपन सभहक फिल्मक नाम हेबाक चाही–नयनन बीच हँसए कजरा।

मदन भाइ अजराक सुन्दरता मे रिझि गेल रहथि। मानलहुँ जे अजरा परम सुन्दरी छलीह। अजराक सुन्दरताक कारणे ठाकुर जे बुढ़ारीक सीढ़ी पर पयर राखि चुकल रहथि से फिल्मक कथाक मोताबिक मदान्ध भ' जाइत छथि। मुदा तैँ की? हम लोहछि क' मदन भाइ कैँ कहलियनि–फिल्मक हिरोइन अर्थात् ठाकुरक खबासिन। खबासिनक जखन फिल्म मे इन्टरी होइत अछि ताबे तक ओ दू बर्खक बेटाक माय बनि गेलि रहैत छथि। फिल्म मे अजराक सुन्दरताक पसाही थोड़बे दूर तक रहैए। ठाकुरक देहावसान भेला पर ठाकुरक विधवा बहिनक खबासिनक प्रतिए अत्याचार शुरू भ' जाइए। तकर बाद अजराक पार्ट गरीबी मे हकन कनैत सुखायल, टटायल, लाचार बुढ़ियाक पार्ट मे बदलि जाइए। तकर बाद समस्या बनत अजराक मुँह सँ निकलल डायलॉग डेलिभरीक। अजराक ठोर सँ मैथिली भाषाक संवादक उच्चारण होयब कठिन नहि असंभव रहत। अजराक पूरा संवादक डब करैए पड़त। सभटा काज मे खर्च लागत, समय लागत आ अकारण परेशानी होयत। जँ अजराक सौन्दर्य कैँ फिल्म मे अधिक दूर तक कायम रखबैक त' फिल्मक पटकथा मे परिवर्तन करए पड़तैक। से की आब संभव छैक? मदन भाइ, अजराक सौन्दर्य अहाँ कैँ निर्गुण सँ सगुण बना देलकए। अहाँ वास्तविकता सँ हटि कल्पना मे बौआ रहलहुँए। सभसँ गंभीर समस्या उठत फिल्मक बजट मे कोमलांगी, मृगनयनी, मधुरनयनी, गजगामिनी गुजराती सुकन्या अजरा कैँ जँ फिल्मक हिरोइन बनेबइ ने त' फिल्मक खर्च अप्रत्याशिते रूपे बढ़ि जेतैक।

मदन भाइ अपन ठोर सीने रहलाह। डेरा पहुँचलहुँ। हम अपन निर्णय हुनका सुना देलियनि–मदन भाइ, ठाकुरक खबासिन लेल हमरा लोकनि मिथिलांचले मे हिरोइन ताकि लेब। संवाद एवं खर्च-संबंधी सभटा दुविधा समाप्त भ' जायत।

प्रत्येक व्यक्तिक हृदय-कूप मे रचनात्मक ऊर्जा भरल रहैत छैक। एकर प्रगटीकरण अथवा स्पष्टीकरण समयानुकूल होइत छै। मदन भाइक सोच सदिकाल सकारात्मक रहलनि। ओ हमरा सि तकलनि आ कहलनि–की सौंदर्यक आकलन मात्र निष्प्राण दर्पणे टा क' सकैए, जीवित प्राणी नहि? की अनुपम सौन्दर्यक प्रति आकर्षित होयब पापे टा भेलै, कलात्मक अभिव्यक्ति नहि? केदार भाइ, हम अजराक सुन्दरताक लोभी मात्र फिल्मक भविष्य लेल बनलहुँए। फिल्म मे हीरो एवं हिरोइनक

अदाकारीक संग ओकर मोहक छविक आवश्यकता होइत छैक। हम आग्रह करब जे अहाँ अपन मोनक भ्रम कैँ त्यागि सत्यक धरातल पर विचार करियौक। अपन मिथिला मे फिल्मक हिरोइन नहि भेटतीह। एखन मिथिला मे नारी जागरण केवल आंगन मे एक-दोसरा कैँ गारि-फज्झति करै टा मे भेलैए। मिथिला मे नाटक-नौटंकी मंडली छैक जे घूमि-घूमि क' नाटक खेलाइए। मुदा ताहि तरहक नाटक-नौटंकी मे सीताक पाट मे छौंड़ा भेटत, छौंड़ी नहि। तेँ अपन फिल्मक हिरोइन चयन एतहि कर' पड़त, दोसर कोनो टा उपाय नहि अछि। संवादक डब कएल जा सकैए मुदा सुन्दरताक डब करब संभव नहि छैक। अजराक फीस भेल पन्द्रह हजार टाका। फीस सही मे आंचलिक चलचित्रक हिसाबे बहुत अधिक भेलै। मुदा करबै की? हम अजराक चुनाव फिल्मक सफलता लेल क' रहलहुँए, कोनो आन कारणे नहि।

ई गप्प भेल 1964 ईश्वीक। तखन सोना एक सय तिरसठि रुपैया भरी छल। तखन मिथिला मे फिल्मक हिरोइन ताकब गंगा मे सूइ तकबाक सदृश रहए। हम मदन भाइक कथन कैँ स्वीकार कएल। अग्रिम पाँच हजार टाका द' हमरा लोकनि अजरा कैँ हिरोइन लेल अनुबंधित केलहुँ।

भानु बाबू जोतखी सँ फिल्मक मुहूर्त लेल दिन तकबौलनि। कथा, पटकथा, संगीत, कलाकार आ फनकार, सभहक चयन भ' गेल रहै। तथापि हम आत्ममुग्ध नहि भ' गेल रही। फिल्म निर्माणक बारीकी सँ परिचित भ' रहल छलहुँ। एकर बादो फिल्म-व्यवसायक पूर्ण ज्ञान हमरा लेल अपर्याप्ते रहए। हम सावधान भेल फिल्मक खर्च पर आँखि गड़ौने रही। फिल्मक मुहूर्तक हम विरोधी छलहुँ। एकर मुहूर्तक काज मे खर्च, परेशानी आ समयक बरबादी। उपलब्धि किछुओ ने। मात्र भानु बाबूक अहमक पूर्ति। मुहूर्त मनबै लेल भानु बाबू एतेक ने अधीर भ' गेल रहथि जे हम आ मदन भाइ विवश भ' गेलहुँ। भानु बाबू आदरणीय एवं गार्जियन। एक सीमाक बाद हुनकर इच्छा कैँ, हुनकर बेकलता कैँ विरोध करब संभव नहि रहए। मुहूर्त पटने मे होयत तकर फरमान भानु बाबू देलनि।

कलाकार एवं फनकारक फौज-संगे पटना पहुँचलहुँ। पहिल निर्माता मदन भाइ मुहूर्त लेल पटना मे रुकि नहि सकलाह। आउटडोर सूटिंग राजनगर मे होयत तकर व्यवस्था लेल हुनका ओतय पहुँचब आवश्यक। दोसर निर्माता भानु बाबू स्वयं कलाकार। हुनकर परिचय-परिधि मे इन्डियन नेशन एवं आर्यावर्त्तक सभटा स्टाफ। तकरा अलावा पटना मे उपस्थित देश-विदेशक समाचारपत्रक पत्रकार कैँ मुहूर्तक निमंत्रण देब जरूरी। भानु बाबू कैँ एको क्षणक फुर्सति नहि रहनि। आब बचि गेलहुँ हम। हमरा जिम्मा काज रहए बम्बइ सँ आयल तमाम कलाकार एवं फनकारक

आवास एवं भोजनक इन्तिजाम। हम फटोफट मे पड़ि गेल रही। मुदा हमरा पर पटनाक महावीरजीक कृपा भेलनि। हमर मदति लेल श्याम शर्मा, हमर म्युजिक डाइरेक्टर पहुँचि गेल रहथि। श्याम शर्मा कँ पटना शहरक पूर्ण जानकारी। ओ सहयोग केलनि। फिल्म मंडलीक प्रत्येक सदस्य कँ अपन-अपन ग्रेडक मोताबिक होटल मे पहुँचा देल गेलनि।

सभटा व्यवस्था पूर्ण भेलाक बाद श्याम शर्मा निवेदन केलनि—मुहूर्त त' काल्हि होयत। आजुक काज शेष भ' गेलए। की हर्ज हमसभ फणीश्वरनाथ रेणु सँ भेट करए चली? हुनका कल्हुका मुहूर्तक निमंत्रण देबनि आ थोड़ेक गप्प-सप्प सेहो करब। रेणु जी हमर मित्र छथि।

मिथिलांचलक हृदयाकाश सँ अवतरित रचनात्मक शैली मे अभिव्यक्त आंचलिक भाषाक उपन्यास 'मैला आंचल' रेणुजी कँ हिन्दी जगत मे प्रसिद्ध क' देने छलनि। पटना शहरक राजेन्द्र नगर मोहल्लाक पुबारी कात बनल गोलम्बर। गोलम्बरक बनल एकटा फ्लैट मे रेणुजी श्याम शर्मा कें मित्रवत्, हमरा दुनू कँ स्वागत केलनि। गप्प-सप्प मे श्याम शर्मा मैथिली भाषाक चलचित्र निर्माण सम्बन्धी सभटा सूचना हुनका देलथिन। मैथिली भाषा मे फिल्म बनैए तकर जानकारी पाबि रेणुजी भाव-विह्वल भ' गेलाह। ओ श्याम शर्मा कँ आग्रह केलनि—जखन अहि फिल्मक तोहीं संगीत देलहकए त' एकटा गीत सुनाब'।

लतिका श्याम शर्माक आगाँ हारमोनियम राखि देलनि। श्याम शर्मा विद्यापतिक 'तोहे जनु जाह विदेस' गीत गाबए लगलाह। रेणुजीक श्याम शर्माक प्रति लगाव संगीत मे ओत-प्रोत रहए। तखनुक श्याम शर्माक गायन अत्यन्त हृदयस्पर्शी छल। साहित्यानुरागी रेणुजी विभोर भ' गेलाह। ओ हमरा तकैत कहलनि—हमहूँ मिथिलेक छी आ हमरो मातृभाषा मैथिलीए अछि। नेना मे हम जखन नेपालक विराटनगर मे रहैत रही तखन मैथिली भाषा मे कइएक टा कथा लिखने छलहुँ। मुदा मैथिली भाषाक क्षेत्र सकुचल, समटल आ एक विशेष जातिक एकाधिकार मे। अपने लिखू अपने पढ़ू। श्रोताक अभाव, खैर, छोड़ू ओहि प्रसंग कँ। समय बदललैए आ आब मैथिली भाषा मे फिल्म बनि रहलैए ई हमरा प्रसन्न क' रहलए। अइ फिल्म कँ बन' दिऔ। जँ अहाँ मैथिली भाषाक दोसर फिल्म बनेबाक योजना बनायब त' हमरा लग अबस्से आयब। राजकपूरक फिल्मक गीतकार शैलेन्द्र हमर मित्र छथि। शैलेन्द्र यद्यपि बनारसक लगीच कोनो गामक वासी छथि मुदा हुनका मैथिली भाषाक शब्द एवं उच्चारण बड़ बेसी सम्मोहित करैत छनि। 'मैला आंचल' हिन्दी भाषा मे रहितहुँ मैथिली भाषाक अत्यन्त समीप अछि आ से शैलेन्द्र कँ नीक लगैत छनि। हम आ

शैलेन्द्र अहाँ सभकेँ बहुत तरहक मदति करब तकर विश्वास दिअबैत छी। हम एखन स्वस्थ नहि छी तेँ मुहूर्त मे नहि जा सकब। हमरा अफसोच अछि।

रेणुजीक संक्षिप्त साक्षात्कार हमरा शरीर मे एक तरहक ऊर्जा भरि देने छल जकर तखन हमरा जरूरति रहए। थोड़बे दिनक बाद खबरि भेटल रहए जे रेणुक 'मारे गये गुलफाम' कहानीक नाम बदलि 'तीसरी कसम' नाम सँ शैलेन्द्र फिल्म बना रहल छथि। 'तीसरी कसम' फिल्म मे हमर सभहक फिल्मक डाइरेक्टर सी. परमानंद सेहो पाट कयने रहथि।

प्रात भेने पटनाक कदमकुआँ मोहल्लाक हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन मे हमर सभहक फिल्मक मुहूर्त मनाओल गेल। जाहि ताम-झाम सँ हमर सभहक फिल्मक मुहूर्त मनाओल गेल रहए प्रायः हिन्दीओ फिल्म मे नहि होइत हेतैक। हजारो दर्शक आ तत्कालीन बिहारक राज्यपाल आयल रहथि। राज्यपाल फिल्मक क्लिप दबलनि, जोरदार थपड़ी बाजल आ तखन फिल्मक सफलताक लेल मंगल कामना करैत भाषण भेल छल।

मुहूर्तक दिन संध्याकाल फिल्म मंडली महेन्द्रूघाट पहुँचल आ पनिया जहाज पर चढ़ि गंगाक ओइपार लेल बिदा भेल रहए। पहलेजाघाट पर एकटा बस आ अजरा एवं लता बोस लेल एकटा फियट गाड़ी अगिला यात्राक लेल तैयार राखल गेल छल।

जहाजक उपरका डेक पर कुर्सी पर हम चुपचाप बैसल रही। कनिकबे हटल अजरा अपन मौसीक संग एवं लता बोस अपन नानीक संग बैसले-बैसल गंगाक धारा मे झिलमिलाइत आकाशक तरेगनक छाँह केँ निहारि रहल छलीह। बाँकी फिल्म मंडलीक सदस्य जहाजक ऊपर-नीचाँ जहिं-तहिं छिड़िआयल बैसल छलाह।

बम्बइ सँ पटना तकक यात्रा आ पटना मे मुहूर्तक दौड़-धूप सँ हमर शरीरक रग-रग मे दर्द पैसि गेल छल। मुदा तेँ की? हमरा पीड़ा सँ मुक्त होयबाक ने समय छल आ ने होश रहए। फिल्म मंडली मे कतेक सदस्य एखन जा रहल छथि ताहि बात दिश हमर ध्यान टांगल रहए। राति आधा सँ अधिक बीति चुकल रहै। जहाज चलैक डकडक आवाज आ गंगाक लहरिक सरसराहटि छोड़ि सभ किछु शान्त रहैक। तखने हमर नजरि हमरा सामने ठाढ़ एकगोट नवयुवक दिश गेल।

पटनाक मुहूर्तक कार्यक्रम मे अहि युवक केँ हम कइएक बेर देखने छलियनि। अन्हरिया राति आ डेक परहक मध्यम इजोत रहितहु ओहि युवक केँ चिन्है मे हमरा भाँगठ नहि भेल छल। युवक हमरे दिस ताकि रहल छलाह। हमर जिज्ञासा प्रबल भ' उठल। इशारा सँ हम हुनका लग मे बजौलहुँ। युवकक परिचय भेटल। हमरा सँ वयस मे दू-तीन बर्खक छोट, लम्बा-छरहर शरीर, दामिल पेन्ट-शर्ट पहिरने ओहि युवकक

चेहरा पर एहन भाव पसरल रहनि जेना ओ जन्मजात कलाकार होथि। हुनकर नाम छलनि कमलनाथ सिंह ठाकुर। कमलनाथ मिथिलाक कोनो संभ्रान्त परिवारक वारिस रहथि। कमलनाथ सँ तत्काले निकटता भ' गेल रहए। हमर प्रश्नक जवाब मे ओ कहलनि—बम्बइ सँ आयल फिल्म मंडलीक सभटा सदस्य जहाज पर चढ़ि चुकलए। एकर अलावे पटनाक कलाकार मे पुरुष-महिला मिला क' लगभग एक दर्जन सदस्य सेहो जहाज पर छथि आ संगे जा रहल छथि। पटनाक कलाकार मे अगुआ छथि प्यारे मोहन। प्यारे मोहन माँजल कलाकार छथि। नाटकक अलाबा ओ बहुतो फिल्म मे काज क' चुकलाह अछि। बम्बइ एवं पटनाक सभटा सदस्य कुल चालीस गोट कलाकार एखन अहि जहाज पर यात्रा क' रहल छथि।

पटनाक कलाकार कैँ हकार के देलकनि? भानु बाबू आ कि परमानंद चौधरी जी? क्षणिक दुविधा भेल मुदा कमलनाथ सँ किछु पूछब उचित नहि बुझना गेल। हमरा जे जानकारी चाही से कमलनाथ द' देने रहथि। मुदा हम आश्चर्य मे पड़ि गेल छलहुँ। हमरा जाहि तरहक जानकारीक तखन दरकार छल से पहिने सँ कमलनाथ लग उपलब्ध किएक आ कोना छलनि?

कमलनाथक प्रशंसा मे हम किछु पाँती आरो खर्च करब। कमलनाथ सज्जन, हँसमुख, नापि-तौलिक' बजनिहार उत्साही, आ कुशाग्रबुद्धिक युवक छला। कमलनाथ फिल्म मे पाट केलनि आ हुनकर अभिनय सर्वश्रेष्ठ भेल रहनि। कमलनाथक आचरण मिथिलाक उज्जवल भविष्यक परिचायक रहए। ओ अहि बात कैँ इंगित करैत छल जे जँ उचित मार्ग भेटौक त' मिथिलाक उन्नति लेल मिथिलाक तमाम युवकक सहयोग अपने-आप प्राप्त भ' जेतैक। हमर सभहक फिल्मक पहिल नाम छल 'नैहर भेल मोर सासुर।' नाम कोनो तरहें रुचिगर नहि रहै। कमलनाथेक मुँह सँ अनायास निकलल रहै 'ममता गाबए गीत'। सभ कैँ नीक लागल रहै आ फिल्मक नाम बदलि गेल छलै। जहाज परहक परिचयक बाद फिल्म निर्माणक अन्त धरि कमलनाथ संगे रहलाह आ सभ तरहक सहयोग केलनि। पनियाँ जहाज पर कमलनाथक सान्निध्य मे हमरा मिथिलाक सौभाग्यक दर्शन भेल छल आ ताही काल हमर शरीरक थकनी एवं मानसिक चिंता तिरोहित भ' गेल रहए।

पहलेजाघाट मे बस आ मोटरगाड़ी तैयारे छल। दोसर दिन प्रातःकाल लगभग आठ बजे सम्पूर्ण फिल्म मंडली राजनगर पहुँचि गेल।

10

राजनगर, दरभंगा महाराजक पुरना राजधानी, अपन अतीत मे डुबल मुदा वर्तमानो मे मयूरपंखी सदृश भव्य, सजल एवं दर्शनीय स्थान रहए। हमर सभहक ठेकाना, मझिला राजकुमारक गेस्ट हाउस, लगभग दस बीघा मे पसरल विशालकाय प्रांगण। पश्चिम दिस पुरना डिजाइन मे बनल मकान जाहि मे अनगिनत कोठली, दुआरि आ दलान। तकर पाछाँ आंगन। आंगनक बीच मे बनल घोघ तनने नवकी कनिआँ जकाँ मड़बी। आंगनक पछबारी कात भनसाघर आ नहेबा-धोबा लेल फैल जगह। मकानक आगाँ बीच मे घेरल, सुन्दर कनेटा फुलबारी। बाँकी स्थान हरियर कंचन घास सँ झाँपल। गेटक लगे मे दहिनाकात सभ तरहक सुविधा सँ सम्पन्न खपड़ा सँ छाड़ल एकटा आरो घर।

राजनगर मे एखनहुँ जेठका राजकुमार आ महाराजक अनेको अमला-कर्मचारीक निवास। तँ धोबी, हजाम-मधुर पकवान बनबैबला हलुआइक कमी नहि भेल छल। फिल्म मंडलीक आगमन होइतहि विभिन्न क्षेत्रक सेवक बिन बजाओल अपन-अपन हाजरी पहुँचाब' लागल रहए।

गेस्ट हाउस सँ लगभग एक पाव जमीन हटल महंथ मदन मोहन दासजीक महंथाना। ओतुक्का सिपाही, भनसिया, नोकर-चाकरक फौज पहिने सँ गेस्ट हॉउस मे मोस्तैज छल।

मात्र एक घंटाक भीतरे फिल्म मंडलीक लगभग चालीस कलाकार एवं फनकार अपन-अपन निवासक स्थान पसिन्न क' लेलनि। महिला कलाकार मकानक दक्षिण भाग दू-तीन कोठली मे रमन-चमन कर' लगलीह। मकानक उतरबारी कात विशिष्ट अतिथि लेल कक्ष मे अजरा एवं हुनकर मौसी केँ राखल गेल। हुनकर रसोइ अलग सँ बनतनि तँ पाकशास्त्र मे निपुण जलील नामक खानसामा केँ नियुक्त कएल गेल रहए। साउन्ड ट्रैक एवं कैमरा कलकत्ता सँ आयल। साउन्ड इन्जीनियर चटर्जी मोशाय आ हुनका संग बारह गोट बंगाली लाइट मैन। गेस्ट हाउसक गेट लग बनल घर मे

ओ लोकनि अपन-अपन मोटरी पटकलनि। कहबाक अर्थ जे सभ बात केँ ध्यान मे रखैत मदन भाइ सभटा इन्तिजाम पहिने सँ क'क' रखने छलाह। फिल्म मंडलीक सभटा सदस्य नोकर-चाकर, बिन बजाओल किछु पाहुन, कुल साठि-पैंसठि मनुक्खक जलखै, दिनुका-रतुका भोजन बन' लागल। किछु कलाकार गेस्ट हॉउसक बाहर राजनगरक प्रसिद्ध मिठाइ खेबा लेल सेहो जाइत रहथि।

ओही इन्तिजामक हंगामाक मध्य एकटा जुल्फीबला खास किस्मक मनुक्ख अपन दर्शन द'क' हमरा तृप्त केलनि। मैल-चिकाठि पैजामा-कुर्त्ता पहिरने व्यक्तिक माथक जुल्फी कपारे नहि हुनक करजनी तरक लाल-लाल आँखि केँ झपने छल। हुनकर नाम छलनि बिच्छू। बिच्छूजी चाननक गमक मे बनल ठर्राक थौक व्यापारी छलाह आ सदिकाल तरंगे मे विचरण करैत रहथि। फिल्म संसार मे शराब एवं शबावक नाम सुनने रहियैक। फिल्म निर्माण मे मादक द्रव्यक ओहने महानता रहए जेना पूजाक समय गंगाजलक। सैम्पुल मे आनल चाननक गमक बला ठर्राक स्वाद चखिक' फिल्म मंडलीक सभटा सदस्य बिच्छूजीक चकोर बनि गेलाह। बिच्छूजीक असाधरण रूपे महत्त्वक आवश्यकता केँ स्वीकार करैत ठर्राक मूल्य निर्धारित करए पड़ल रहए। बिच्छूजी नित्य एक कनस्तर ठर्रा पहुँचाबैक कठिन दायित्व अपना कन्हा पर लदलनि।

भानु बाबू, फिल्मक तेसर निर्माता आ हमर दुनूक गार्जियन, अपन आन-आन काजक निपटारा क' चारि दिनक बाद गेस्ट हॉउस मे पदार्पण केलनि। राजनगर स्टेशन पर हुनक आगमनक स्वागत मे कियो नहि गेलनि तकर भयंकर प्रतिक्रिया हुनका भेल रहनि। जइतै के? जवाब भेल हम अथवा मदन भाइ। मदन भाइ अपन महंथाने रहि रोजक खर्च, रसद आ नगदी पठबै मे बाझल रहथि। एमहर हम ओहि महादेवक गणक भोजन-भात, सुखसुविधा आ अनेक तरहक फरमाइश मे एतेक ने व्यस्त भ' गेल छलहुँ जे आन बातक हमरा सोह रहिए ने गेल रहए। भगवानक असीम कृपा सँ भानु बाबू संयत भेलाह आ पहिने सँ हुनका लेल सुरक्षित कोठली मे ओ अपन बेड-होल्डरक फीता खोललनि।

फिल्मक सूटिंग मे कोनो तरहक व्यवधान अथवा त्रुटि नहि होउक ताहि लेल हम सतर्क रही। भोर सँ साँझ आ साँझ सँ भोर कखन भ' जाइ से किछु ने बुझियै। सदिकाल किछु ने किछु काज शेष रहिए जाइत छल।

फिल्मक सूटिंग आरम्भ भेल। तकरा संगहि अनेक तरहक अड़चन सेहो सामने आबि गेल। फिल्मक सूटिंगक चर्चा चारू कात पसरि गेल रहैक। राजनगर मे मनुक्खक मेला लगि गेलै। समीप आओर दूर तकक ग्रामीण जनता सँ राजनगर

ठसमठस भरि गेल छलै। जिलाक सभ तरहक हाकिम-हुक्कामक परिवार सेहो सूटिंग देख' लेल आबए लागल। सभ सँ पैघ विपत्ति ठाढ़ केलनि जेठका राजकुमार। ओ राजनगरे मे रहैत छलाह आ नित्य सूटिंग स्थान पर पहुँचि जाइत रहथि। पता चलल जे ओ तंत्रविद्याक माहिर भ' चकुलाए आ तंत्र-मंत्रक बले फिल्मक हिरोइन अजरा कैँ अपन वश मे करबाक उद्योग क' रहलाए।

लोकक भीड़ सूटिंग काज मे बाधा उत्पन्न क' देलकै। प्रत्येक शॉटक बाद कैमराक एंगिल मे परिवर्त्तन करब जरूरी आ तखन भीड़ कैँ एक कात सँ दोसर कात टारब भेल समस्या। अहि समस्याक निदान कोना होयत? अकस्मात मदति भेटल। कलकत्ता सँ आयल साउन्ड ट्रकक संग बारह बंगाली लाइटमैन मे एकटा युवकक नाम रहनि शंकर। शंकर कहलनि—''आपनी चिंता कोरबेन ना। अमार बाबा सत्यजीत रे यरे आउटडोर सूटिंग काज कोरतेन। बाबार साथे आमिओ जतैन। कखनो-कखनो आमिओ तार काजे सहाज्य कोरताम। अमार अनेक अभिग्यता आछे।'' धन्यवाद शंकर कैँ। ओ अपन टीम-संगे लाइट रिफ्लेकशनक अलावा भीड़ कैँ एमहर सँ ओमहर टारैबला काज दक्षता सँ कर' लागल छलाह।

फिल्मक सूटिंग देखक लेल हमरो जान-पहिचानक अनेक बंधु बिन बजाओल आबए लगलाह। जे आबथि से एक-दू दिन मे वापस भ' जाथि। मुदा शिवकुमार चौधरी नामक एकटा अड़ियल मनुक्ख जे हमरे गामक रहथि अपन खुट्टा गाड़ि देलनि। शिवकुमार ने कवि रहथि आ ने साहित्यकार। मुदा हुनक नाम मे 'टंच' टाइटिल जोड़ल छलनि। टंचजी सदिकाल हमरे आगाँ-पाछाँ घुमतै रहथि आ कखनहुँ काल हमर काज मे सहयोग करक प्रयास करथि। टंचजीक सहयोग केहन होइत छल तकर विवरण देब आवश्यक आछि।

साउन्ड मैन रहथि चटर्जी मोशाय। हुनक साउन्ड ट्रैक मे भीषण समस्या उपस्थित भ' गेल छलनि। सूटिंग स्थान सँ थोड़बे हटल एकटा आँटा पिसैक चक्की रहैक। चक्की बला ग्राहकक ध्यान आकृष्ट कर' लेल मसीनक एकझौस पाइप मे टीनक डिब्बा पैसा देने रहैक। जखन चक्की चालू होइ त' टीनक डिब्बा सँ पीं-पींक कर्णभेदी आवाज दूर-दूर तक पहुँचैत रहै। सूटिंगक स्थान मे साउन्ड ट्रैकक ध्वनि-प्रबंधक यंत्र जे सूक्ष्म सँ सूक्ष्म ध्वनि ग्रहण करक क्षमता रखैत छल से ओहि पीं-पीं बला आवाज कैँ सेहो अपन ध्वनि मे समेटि लैत रहए। पीं-पीं बला आवाज कैँ बन्द करबा देबाक लेल चटर्जी मोशायक अरजेन्ट फरमान हमरा लग पहुँचल।

चटर्जी मोशायक संवाद सँ चिंता मे रही। तखने संयोग सँ बिच्छूजी अपन चानन गमक बला ठर्राक पेमेन्ट लेब' लेल हमरा लग आयल रहथि। साउन्ड ट्रैकक समस्या

सँ अवगत होइते बिच्छूजी कहलनि—श्रीमान, अहाँ मडुआ भरिक चिंता नहि करू। चक्कीबला हमरे जातिक खट्टी अछि आ हमर मित्र अछि। हम पेमेन्ट बाद मे लेब। पहिने हम चक्की लग पहुँचिक' पीं-पीं बला आवाज बन्द करबैत छी।

टंचजी हमरा लगे मे ठाढ़ रहथि। ओहो बिच्छूजीक संग पीं-पीं बला आवाज बन्द करबै लेल बिदा भेलाह। एक घंटाक बाद राजनगर थानाक दरोगा पहुँचल। दरोगाक संग दू गोट सिपाही, बिच्छूजी, आटा मे लेरहायल टंचजी आ चक्कीक चालक रहै जकर कपार फूटल आ शोणितक धार बहि रहल छलै।

दरोगाजी सविस्तर सभ बात कहलनि। बिच्छूजी जखन चक्की बला कैँ पीं-पीं बला आवाज बन्द करै लेल कहलनि तखन ओ अपन असमर्थता बतबैत कहलक जे पीं-पीं बला अवाजे सुनि ओकर ग्राहक आँटा पिसबै लेल अबैत अछि। बिच्छूजी आ चक्कीक चालकक बीच वार्त्तालाप भैए रहल छल ताही बीच टंचजी छड़पि क' एक झौस पाइप सँ टीनक डिब्बा कैँ नोचए लगलाह। डिब्बाक स्थान पर पूरा एकझौस पाइपे टूटिक' खसि पड़ल। बस शुरू भ' गेल संग्राम। चक्कीक चालक एवं टंचजीक बीच मल्लयुद्ध भीषण रूप धारण क' लेलक। मल्लयुद्धक खबरि लगे मे थाना पहुँचलै। दरोगाजी आँखि तरेरैत कहलनि—''मारपीट करने वाले बेहूदों का जगह है हाजत। लेकिन आपका यह आदमी ने मुझे बताया कि यह बम्बइ का रहने वाला है और फिल्म कलाकार है। फिल्म के काम में किसी तरह का रुकावट नहीं हो इस तरह का आदेश मुझे जिला के एस.पी. से मिल चुका है। इसलिए मैं आपके कलाकार को पिटाइ कर हाजत मे बंद करने की जगह यहाँ लेकर आया हूँ।''

हम टंचजी अर्थात् फिल्म कलाकार दिश ताकल। टंचजीक बामाकात कानक कनौसी सँ शोणित टपकि रहल छलनि, ठोर फूलि क' नमरि गेल रहनि। आपसी समझौता भेल रहए। दरोगाजी कैँ दू सय, दुनू सिपाही कैँ पचास-पचास आ हील-हुजैत केलाक बाद चक्कीक चालक कैँ दवाइ-दारुक लेल तीन सय टाका द' मामिला कैँ रफा-दफा कयने रही। एकटा नीक बात भेल रहै जे पीं-पीं बला आवाज बंद क' देल गेल रहै।

राजनगर मे फिल्म सूटिंगक प्रत्येक दिन किछु ने किछु अजूबा घटना घटित होइते रहलै। एहने अलौकिक परिवेश मे एक दिन एक नव व्यक्तिक आगमन भेल रहए। व्यक्तिक नाम छलनि खगेन्द्र।

खगेन्द्रजी सहरसा जिलाक निवासी रहथि। साँची धोती, भरि बाँहिक बंडीबला कुर्ता, कुर्ताक ऊपर बंडी, आसाचक्र पर स्थापित सेनुरक ठोप, गरदनि मे तीन भत्ता तुलसीक माला, घनगर भहूँ, जुल्फी सँ झाँपल कपार, एक गौखूर बरोबरि टीक, उमेर

तीस-पैंतीसक लगीच, तीन संतानक पिता, हँसमुख, भोर-साँझ गायत्री मंत्रक जाप कर' बला खगेन्द्रजी हाथ जोड़ि नमस्कार केलनि आ कहलनि—सुगोना गाम मे हमर कुटुम्ब छथि। ओतहि सँ आबि रहल छी। राजनगर पहुँचिते कर्णगोचर भेल जे मैथिली भाषा मे फिल्म बनि रहलए। उत्सुकता चरम छू लेलक। हम नहि मुदा हमर स्वर्गीय पिता मैथिली भाषाक कवि रहथि। हुनकर रचित कइएक टा कविताक पोथी एखनो परिवार मे सुरक्षित अछि। तेँ मैथिली भाषाक सिनेह हमर शोणित मे प्रवाहित भ' रहलए। मैथिली भाषाक प्रेम हमरा एतय आबक लेल प्रेरित केलकए। हम एतय एक-दू दिन निवास क' फिल्म निर्माणक प्रत्यक्षदर्शी बनि सुखक भोग कर' चाहैत छी। हमर विनम्र निवेदन अछि जे श्रीमान् हमरा अनुमति प्रदान क' हमर अभिलाषाक पूर्ति कयल जाय।

संयोग सँ मदन भाइ ओतहि छलाह। खगेन्द्रजीक मैथिली भाषा मे कएल निवेदन सुनि ओ प्रसन्न होइत कहलनि—केदार भाइ, खगेन्द्रजीक मैथिली भाषाक उच्चारण मे जे मधुरता छैक तकरा पर ध्यान दिऔक। फिल्मक माध्यमे मैथिली भाषाक उच्चारण मे एकरूपता अननाइ एवं तकरा सर्वग्राही बनौनाइ हमरा सभहक प्रयोजन हेबाक चाही ने? अहाँक अहि मादे की विचार अछि?

हमर विचार मदन भाइक विचार सँ भिन्न तरहक छल। हम तखन किछु आने बात सोचि रहल छलहुँ जकर फिल्म निर्माण मे नितांत जरूरी रहैक। हमरा खगेन्द्रजी लेल एकटा काज फुरायल रहए। अजरा, फिल्मक हिरोइन गुजरात प्रांतक, आ ताहू पर सँ मुसलमानी। मैथिली संवादक उच्चारण मे अजरा कैँ सभ तरहक कष्ट। हम खगेन्द्रजी कैँ कहलियनि—मात्र एक दू दिन नहि, जाबे तक फिल्म निर्माणक काज राजनगर मे होइत रहतैक ताबे तक हमर अहाँ सँ आग्रह जे अहाँ एतहि रहि फिल्म मे सहयोग दियै। अहाँ मैथिली भाषाक प्रेमी छी, की अहाँ अपन अमूल्य समय मैथिलीक सेवा लेल देब?

खगेन्द्रजी मौन स्वीकृति प्रदान केलनि। हम हुनका फिल्म संबंधी काज बुझबैत कहलियनि—फिल्मक हिरोइन छथि अजरा। ओ गुजरात प्रांतक युवती छथि। हुनका मैथिली भाषा मे संवाद बाज' मे तकलीफ भ' रहलनिहँ। खगेन्द्रजी, अहाँ हुनका मैथिली भाषा मे संवाद बजैक अभ्यास कराउ। काज कठिन होइतहु मनलग्गू अछि। अहि काज मे अहाँक कर्मइन्द्री तृप्ति प्राप्त नहि करत मुदा पाँचो ज्ञान इन्द्री असीम सुखक भोग अबस्से प्राप्त करत तकर हम विश्वास दिअबैत छी।

खगेन्द्रजी तैयार भ' गेला। हम हुनका अजरा लग ल' गेलियनि आ संवाद अभ्यास संबंधी सभटा विधि-विधान वृहत् तरहें बुझा देलियनि। हमरा लग बहुतो

तरहक काज रहए। हम नित्यक काज मे बाझि गेलहुँ आ एक तरहँ खगेन्द्रजी कैँ बिसरि गेलहुँ।

हम आ मदन भाइ एकांत मे बैसल गप्प-सप्प क' रहल छलहुँ। करीब दू मासक समय बीति चुकल रहै आ अनवरत सूटिंगक काज भ' रहल छलै। एक दिन अजराक सेवा मे नियुक्त जलील नामक खानसामा दौड़ल आयल आ हकमैत बाजल—''खगा बाबू अजरा बीबी के ऊपर छड़पै का कोशिश मे छथ। खगा बाबू का ठमकल आँख मे हम शैतान का नाज देखलीअ, खगा बाबू आज कोनो जुलूम बला काज करतै। मालिक, आज खगा बाबू के रोक दहू।''

खगा बाबू अर्थात् खगेन्द्रजी। जलीलक चीत्कार सुनि चारूकात सँ लोक दौड़ल। प्यारे मोहन जे शरीर सँ पहलवान रहथि आ फिल्म मे अजराक सोआमीक पाट करैत रहथि से जखन बातक जड़ि-छीप बुझलनि त' डकारैत बजला—''अहाँ सभ फिकिर नहि करू। हम जभी कखनो फिल्मक आउटडोर सूटिंग मे जाइत हती, लट्ठ के साथ रखैत हती। हम एखने खगेन्द्रा सार के माथ कैँ दू खण्डी करै लेल जाइत हती ने!''

प्यारे मोहन झटकल आगाँ बढ़ला। बाँकी लोक हुनकर पछोड़ धेलनि। अजराक कोठलीक दरबज्जा लग मदन भाइ प्यारे मोहनक रस्ता रोकैत कहलनि—बिआहल पुरुष जखन छिनरपनी बला काज करैए त' ओ लाज-बिज कैँ त्यागने रहैए। जेना की जलील कहलकए, खगेन्द्र जाहि मनःस्थिति मे छथि ओ कोनो तरहक अभद्र काज कर' मे बाज नहि औताह। तैँ अहाँ कैँ हम खबरदार करैत छी। हंगामा कएला सँ मामला बिगड़ि जायत, सूटिंग रूकि जायत। परिस्थिति नाजुक अछि। तैँ अहाँ सावधानी सँ कहुना खगेन्द्रा कैँ घीचि क' बाहर आनू। तखन हम सभ अगिला काज करब।

खगेन्द्रक नट्टी पकड़ने प्यारे मोहन हुनका बाहर अनलनि आ तिरने-तिरने गेस्ट हाउसक गेटसँ आगू आमक गाछी मे पहुँचा देलनि। हम आश्चर्यचकित भेल खगेन्द्रजी दिस ताकि रहल छलहुँ। पाउडर सँ पोतल हुनक दुनू गाल आ सेनूरक ठोप निपत्ता, दू फाँक मे सीटल माथक जुल्फी आ टीक नदारत। कत' सँ अनलनि से त' वैह जनताह मुदा एखन ओ कारी रंगक पेन्ट आ हरियर रंगक टी शर्ट पहिरने रहथि। फूलदार दुपट्टा अबस्से अजराक हेतै, हुनक गरदनि मे लटकल छलनि। खगेन्द्रजीक आँखिक डिम्हाक सुर्ख लाल टरेस रहनि आ मुँह महक सिगरेट मे गाजाक गंध भरल छलनि। यद्यपि प्यारे मोहन हुनका घीचैत ल' जा रहल छला मुदा खगेन्द्र जीक चालि मे थ्री स्टेप्स डान्स ब'ला लचक आ थिरकन साफ-साफ देख' मे आबि रहल छल। ओरिजिनल खगेन्द्रजीक कतहु अता-पता नहि रहए।

सत्य मे कहल जाए त' खगेन्द्रजीक परिवर्तित छवि लेल हुनका दोख देब उचित नहि। खगेन्द्रजी भांगक आदी रहथि। हलुआइक दोकान मे बनल भांगक पेड़ा भक्षण क' ओ अपन नैसर्गिक निशाक पूर्ति क' लैत छलाह। जलीलक टिटकारी मे आबि ओ एक दिन गाजा भरल सिगरेट पीलनि। हुनका लेल गाजाक निशा अपरिचित छल मुदा से निशा हुनका तरंगित क' देलक। ओ आरो तरहक निशाक खोज-पुछारि केलनि। फिल्म मंडली लेल चाननक गमक बला ठर्रा कनस्तर मे अबैत रहए। खगेन्द्रजी भांग, गाजा एवं ठर्राक त्रिवेणी मे डुबकी लगाबए लगलाह। एमहर संवाद कर' काल बाढ़ि मे दहाइत कुम्हीक ऊपर फुलायल फूल जकाँ चतरल अजराक जवानी, लिपेस्टिक पोतल ठोर सँ पिछड़ैत मैथिली शब्दक उटपटांग उच्चारण सरल चित खगेन्द्रजीक हृदय मे खलबली मचबक लेल पर्याप्त छल। जखन अजरा अपन कानक झुमका कँ डोलबथि, कजरारी नजरिक किल्ली खगेन्द्रक आँखि मे भोंकैत हुनका पुछलनि–''बोल खगा बोल। मेरा डायलग डिलेभरी ठीक हुआ न! तखन क' त' बुझि लिअ खगेन्द्रजी कँ अपन चतुर्थी रातिक कनिआँ मोन पड़ि जानि। बेचारा खगेन्द्र! एक दिन नहि, दू दिन नहि, लगातार दू महिना तक अजराक सौन्दर्यक पसाही मे झरकैत रहला। एक त' अजरा ओहिना रूपक रानी छलीह आ तइ पर सँ मेकअप हुनका इन्द्रक परी बना देने छलनि। लगातार कामक प्रहार आ से अत्यन्त समीप सँ खगेन्द्र कँ एकटंगा बना देलकनि। ओ अपना कँ संतुलित कोना राखि पबितथि? अन्त मे कामेच्छा सँ प्रेरित भ' ओ धधकतै अग्नि-कुंड मे छलाँग लगबै लेल तैयार भ' गेल छला। जलीलक चेतावनी समय पर काज केलक नहि त' खगेन्द्रजी जुलूम कैएक' रहितथि।

लगातार कइएक बाल्टी पानि खगेन्द्रजीक शरीर पर ढारल गेल। हुनका हुनकर नाम ल'क' सोर पाड़ल गेल। मुदा सभटा प्रयास अकारथे रहल। खगेन्द्रजीक मूर्छा भंग नहि भेलनि। संयोग सँ निशाशास्त्रक विशारद बिच्छूजी ओतेय पहुँचि गेलाह। ओ खगेन्द्रजीक मुँह लग नाक सटौलनि। चाननक गमक ठर्रा। बिच्छूजीक नाकक नली कँ भोथरा क' देलक। अपन अनुभवक आधार पर बिच्छूजी सभ कँ शान्त करैत मंतव्य प्रगट केलनि–हिनका अही हालत मे छोड़ि दिऔन। तीन-चारि घंटा तक ई पतालपुरी तकक यात्रा करैत रहताह। तकर बादे ई धरती पर वापस औताह। तखन हिनका अपन नाम, अपन गामक नाम, अपन बहुक नाम, अपन धिया-पूताक नाम अपने आप मोन पड़ि जेतनि।

11

फिल्म युनिटक प्रायः सभ सदस्य भरि दिन सूटिंगक काज मे व्यस्त रहैत छल। मुदा संध्याकाल स्नान क' स्वच्छ परिधान पहिरि तौलिया अथवा पटिया गेस्ट हॉउसक चारूकात साफ-सुथरा कएल हरियर-हरियर दूभि पर ओछा बैसि रहैत छल। एक मंडली दोसर मंडली सँ हटिक' आसन जमबैत छल। साँझ मे इजोतक अभाव मुदा आकाशक तरेगनक प्रकाश मे झलफले सही सभकिछु दृष्टिगोचर होइत छलै। ताहि समय मे टंचजीक सेवाक काज प्रशंसनीय रहए। ओ चानन गमक बला ठर्रा कैँ कनस्तर सँ गिलास मे ढारथि आ आवश्यकता मोताबिक गिलास प्रत्येक मंडलीक लग मे पहुँचा दैत छलथिन। तखन बाहरक हलुआइक दोकान सँ विभिन्न तरहक नमकीन सेहो पहुँचि जाए। महिला कलाकार नशा नहि करथि। मुदा नमकीन चखना प्लेट मे भरि-भरिक' अपन-अपन पसिन्नक पुरुष कलाकार लग पहुँचा स्वयं गप्प-सप्प मे संलग्न भ' जाइत छलीह। अजरा सभ दिन रिजर्व रहलीह। ओ अपन कक्ष मे अपन मौसीक संग समय बितबैत छलीह। साइड हिरोइन लता बोसक बात फराक छल। 'ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे। मधुकर निकर करम्बित कोकिल कूंजित कुंज कुटीरे' बला स्वभाव लता बोसक छलनि। हिरणीक समान चंचल सभ पुरुष कलाकारक चहेती, लता बोस सभहक थकान उतारै मे पटु छलीह। कोनो तरहक मांग सँ परहेज नहि। ओहि समयक वातावरणक लता बोस शोभा छलीह।

हम सभ किछु देख रहल छलहुँ। ताहि जमाना मे फिल्म एकमात्र युवकक मनोरंजनक साधन रहै। यद्यपि हिन्दी सिनेमाक स्तर उच्च भ' गेल छलै। नामी-नामी कलाकार, तेहने संगीत आ सभसँ मूल्यवान छायांकन। मैथिली सिनेमा ओकर मुकाबिल मे बहुत नीचाँ छल। तथापि हमरा संतोष रहए। हम कलाकार एवं फनकार कैँ सभ तरहक सुविधा देबामे सक्षम रही। फिल्म मंडली आनन्दमग्न भेल समय व्यतीत क' रहल छल।

फिल्म मंडली मे दू गोट व्यक्ति एहनो रहथि जे संध्याकालक ठर्राक भोज मे रुचि नहि रखैत रहथि। पहिल व्यक्ति छलाह फिल्मक हीरो त्रिदीप कुमार। एकांत मे चुपचाप बैसल त्रिदीप शायद भविष्य मे किछु प्राप्त करक उद्देश्य सँ मंत्र जाप करैत छलाह। दोसर छला केमरामैन प्रसादजी। प्रसादजीक जन्म बिहारे प्रांत मे भेल रहनि। नेनपने मे हुनका सिनेमाक चस्का लागि गेलनि। ओ बम्बइ कोना पहुँचला, कोन तरहक पापड़ बेल' पड़लनि से सभ बुझल नहि अछि। फिल्म जगत मे ओंघराइत-पोंघराइत ओ केमरामैन बनि गेलाह से बात वएह कहलनि। सम्प्रति ओ अपन मराठी पत्नी एवं तीन संतानक संग बम्बइक खार मोहल्ला मे झोपड़पट्टी मे सुखक जीवन जीवि रहल छलाह। ओ नशाक सेवन नहि करैत छलाह तकर वास्तविक कारण किछु रहैक। बम्बइ मे ठर्रा कँे नौटांग कहल जाइए। प्रसादजी कन्टरक कन्टर नौटांग पीबि चुकल रहथि। तकर परिणामस्वरूप हुनका लीभर सोराइसिस भ' गेल रहनि। आब मादक पदार्थक स्थान पर प्रसादजी सतुआक घोर कँे सीप क' अपन पुरना हबस कँे अपना कन्ट्रोल मे रखने रहथि।

संध्याकालक समय मे हम अधिक काल प्रसादेजी लग बैसिक' फिल्मक गप्प-सप्प करैत छलहुँ। प्रसादजी फिल्म जगतक दीर्घ अनुभव आ हुनक नामी-नामी केमरामैनक असिस्टेन्ट बनि काज करब हुनकर वार्तालाप कँे सारगर्भित, रुचिगर एवं समयानुकूल बना देने छल। सूटिंग समाप्त होयबाक किछु दिन पूर्वक गप्प कहैत छी। ओइ दिन प्रसादजी बहुत उदास रहथि। हम हुनका सँ उदासीक कारण पुछलहुँ ताहि पर ओ जेना टूटि गेलाह। उदासे भेल कहब शुरू केलनि—कलाक जन्म भावनाक हिलकोर सँ होइए। फिल्म सेहो कला थिक। मुदा फिल्म बनबै मे उच्च कोटिक दक्षताक जरूरति होइत छैक। फिल्म निर्माण एक व्यक्ति नहि, बहुत व्यक्तिक परिश्रम सँ होइए। सभ व्यक्ति अपन-अपन जिम्माक काज पूर्ण मनोयोग सँ करैत छथि आ फिल्म निर्माणमे कलाक प्रदर्शन करैत आनन्दित होइत छथि। मुदा जखन फिल्मक पटकथा तैयार होब' लगैत छैक तखन कला संबन्धी भावना कँे रोकि व्यावसायिक तत्व कँे मुख्य भाग बनब' पड़ैत छैक। व्यवसाय अर्थात् व्यापार वस्तुक गुणवत्ता एवं लाभ-हानि पर आधारित अछि। फिल्म बनायब एवं एकर प्रदर्शन करब सेहो व्यवसाये भेल ने! फिल्म बनतै त' लाखो मनुक्ख एक निश्चित मूल्य द 'क' ओकरा देखतै। आब लाखो मनुक्खक मुख्य मांग की हेतै जकर पूर्ति भेला पर ओ सभ सिनेमा देखतै? फिल्म मे भरपूर मनोरंजनक सामग्री हौउक। तँ कथाक चुनाव लोकक पसिंदक मोताबिक कएल जाइए। पटकथा मे सस्पेन्स, ड्रामा, थ्रिल, एक्साइटमेंट संगे प्रचुर मात्रा मे सेक्स कँे भरल जाइए। किछु आर्ट फिल्म कँे छोड़ि बाँकी सभटा

व्यावसायिक फिल्मक इएह मूलमंत्र अछि। पटकथाक निर्देशन पर ड्रेसक चुनाव, मेकअपक स्टाइल, गीतक ध्वनि आ बोल, संवादक स्वरूप आ सभ सँ पैघ बात कैमराक प्रत्येक एंगिल एवं मूभमेन्टक निश्चित दिशा कायम कएल जाइए। पटकथा फिल्मक रीढ़ होइए। एकबेर पटकथाक फाइनल स्क्रिप्ट तैयार केलाक बाद ओहि मे कोनो तरहक परिवर्त्तन नहि कएल जाइए। अहाँ सभहक फिल्म आंचलिक भाषा मे अछि। राष्ट्रभाषा हिन्दीक अलावा भारतक आन-आन सभटा भाषा आंचलिके कहाउत ने! आब भाषा तामिल होउक अथवा तेलगू, पटकथा तैयार कर' मे सभठाम एकहि तरहक फरमूलाक अनुसरण होइए। फिल्म व्यवसायक दृष्टिएँ सफल होअय तँ पटकथा तैयार कर' काल मनोरंजनक प्रचुर मात्रा मे सामग्री ओहि मे राखल जाइए।

जहिना कोनो मूर्ख संस्कृतक श्लोक सुनि पल झपकबैए तहिना हम प्रसादजीक लम्बा प्रलापक अभिप्राय ताकि रहल छलहुँ। प्रसादजी बजिते रहलाह—हमरा जे बुझल अछि ताहि मोताबिक अहाँ आ महंथजी अहि फिल्मक प्रोड्यूसर एवं फाइनेन्सर थिकहुँ। मुदा अहाँ दुनू कैँ फिल्म निर्माणक ज्ञान शून्ये अछि। ई अत्यन्त दुखक बात भेलै ने! फिल्म निर्माणक थोड़बो ज्ञान अहाँ दुनू कैँ होयब जरूरी रहए। अहाँ दुनू मैथिली भाषा लेल समर्पित छी। भाषाक आकर्षण कतेक दर्शक जुटा पाओत तकर निर्णय त' भविष्य मे होयत। मुदा, फिल्म बनेबाक निश्चित फरमूला कैँ त्यागि फिल्म बनाएब भेल मूर्खता एवं विनाश कैँ निमंत्रण देब। हम पछिला तीस बर्ख सँ फिल्म जगत मे कार्यरत छी। हम अनेको आउटडोर सूटिंग मे भाग लेने छी। यद्यपि अहाँ सभहक फिल्म आंचलिक अछि तथापि अहाँ सभहक जे आउटडोर सूटिंगक व्यवस्था आ खर्च अछि से पैघ सँ पैघ फिल्म सूटिंगक बरोबरि अछि। एतय सूटिंग लेल लोकेशन सहजहि प्राप्त छैक। खेत-खरिहान, इनार-पोखरि, परती-गाछी, मनुक्ख, जानवर, घर-आंगन, अर्थात् ग्राम परिवेशक सभ किछु चारूकात पसरल छै। मुदा कैमरा मे कोन तरहक दृश्य कैद भ' रहलैए, कथाक स्वरूप केहन हेतै, एकर एडिटिंगक काज मे कोन तरहक बाधा हेतै तकर अहाँ कैँ आ महंथजी कैँ किछुओ अता-पता नहि अछि। इएह भेल तकलीफक गप्प। अहाँ दुनू एखुनका फिल्म निर्माण सँ अनजान छी। आब थोड़ेक समाचार हमरा सँ प्राप्त करू। फिल्मक पटकथा मे परिवर्तन कएल गेलैए, फिल्मक गला रेति देल गेलैए। अजरा सभ सँ महग हिरोइन। ओकर ग्लेमरस सीन कैँ ओमिट कएल गेलैए। अजराक सौन्दर्यक छायांकनक स्थान पर ओकरा फाटल-चीटल नुआ-आंगी पहिरा क' गोबरक गोइँठा ठोकबाक सीनक सूटिंग भेलैए। डाइरेक्टरक काज मे हस्तक्षेप करब अनुचित। मुदा फिल्म केहन बनि रहलैए तकरा द' जखन

सोचैत छी त' अहाँ दुनू लेल अफसोच होइए। आउटडोर सूटिंग काल पटकथा मे फेर-बदल करब भेल फिल्मक सत्यानाश करब। सैह भ' रहलैए।

आब जा क' प्रसादजीक उदासी एवं पीड़ामे पनपल लम्बा भाषणक अभिप्राय हमरा बुझ' मे आबि रहल छल। पटकथाक फोटो-कापी प्रत्येक कलाकार एवं फनकार कैँ देल जाइत छै। आइ कोन तरहक सीनक छायांकन हेतै तकर सूचना डाइरेक्टर सँ पाबि प्रत्येक व्यक्ति पटकथेक अनुसार इन्तिजाम मे लागि जाइए। प्रसादजी कैँ सेहो फिल्मक पटकथाक कॉपी भेटल रहनि। एक आदर्श केमरा मैनक चरित्र मे प्रसादजी पटकथा मे परिवर्तन देखि कष्ट मे आबि गेल रहथि।

किछु बात पहिने सँ बुझल रहए आ थोड़ेक बाद मे बुझलियै। भेल की रहै से कहैत छी। फिल्मक कथा मोताबिक ठाकुरक पत्नीक प्रसवकाल अकाल मृत्य भ' जाइत छनि। मुदा जन्मल नवजात शिशु जीवित बाँचि जाइए। ठाकुरक पत्नीक सेवा मे नियुक्त खबासिन ओहि बच्चाक पालन-पोषणक भार उठबैए। खबासिन ठाकुरक बेटाक सिनेह मे एतेक ने डुबि जाइए जे ओकरा अपन बेटाक सोह रहिए ने जाइत छैक। खबासिनक बेटा टुग्गर भेल गाम मे बौआइए आ एक दिन पोखरि मे डुबिक' मरि जाइए। एतेक पैघ विपत्तिक बादो खबासिनक आचरण मे फर्क नहि होइत छैक। ओ राति-दिन हबेली मे रहि ठाकुरक बेटा कैँ दूध पिअबैए, ओकर सेवा-सुसुरखा करैए। खबासिन सौन्दर्यक महारानी त' अछिए। ओकर जवानी मे उत्पन्न भेल तीख सौन्दर्य मे उत्तेजना भरल छैक। ठाकुर खबासिनक अद्भुत सुन्दरताक प्रति आकर्षित होइत छथि आ ओकरा प्राप्त कर' लेल विभिन्न तरहक रस्ता अपनबैत छथि। एकर भनक ठाकुरक विधवा बहिन कैँ लागि जाइत छनि। विधवा बहिन एकर घनघोर विरोध करैत छथि मुदा ठाकुरक खबासिनक प्रति प्रेमभाव मे कमी नहि अबैत छनि। दिन-प्रतिदिन ठाकुरक प्रेम बढ़ले जाइए आ एक दिन ई प्रेम-लीला चरम पर पहुँचि जाइए। ठाकुर आ खबासिनक शारीरिक मिलन होइत अछि। अहि कथाक उचित आ कि अनुचित चित्रणक बात कैँ एखन बिसरि जाउ। तैयार पटकथाक अनुसारे ठाकुर एवं खबासिनक प्रेम-प्रसंगक छायांकन ओहि सीमा तक कएल जेबाक आयोजन छलै जाहि सीमा तक सेंसरक कैंची अनुमति दितैक। फिल्म मे अहि प्रेम प्रसंगक खास महत्व देल गेल रहै। कारण उद्दीप्त वासनाक दृश्य मात्र दर्शके लेल नहि वितरक लेल सेहो जरूरी रहै।

खबासिनक पाट मे छलीह अजरा। फिल्म जगतक अप्सरा अजरा कइएक फिल्म मे हिरोइनक पाट क' चुकल रहथि। ओ माँजल कलाकार छलीह आ हुनका कैमरा मूभमेन्टक पूर्ण ज्ञान छलनि। ठाकुरक पाट मे बेसुरा भानु बाबू रहथि। भानु बाबूक

वयस पचास-पचवन बर्खक। ओ बुढ़ारीक कइएक गोट सीढी पार क' चुकल छलाह। हुनका फिल्म मे एक्टिंग करक ने लूरि रहनि आ ने वयस।

प्रत्येक सीनक फाइनल फिल्मांकनक पहिने रिहर्सल कराओल जाइत छलै। ओहि प्रेम प्रसंगक रिहर्सल कर' काल अजरा लोहछि गेलि छलीह। ओ कैमराक आगाँ सँ पड़ा क' अपन कोठली मे बन्द भ' गेलि छलीह। डाइरेक्टर अजराक कोठली मे अनुरोध करक लेल पहुँचल रहथि। अजरा चुपे रहलीह मुदा हुनकर मौसी डाइरेक्टर सँ कहलथिन–''तुम कैसा डाइरेक्टर हो? तुम लोग फिल्म बना रहे हो या फिल्म का मजाक बना रहे हो? अजरा फिल्म के स्क्रिप्ट के मोताबिक काम करने को तैयार है। स्टोरी की मांग के हिसाब से अजरा को सेक्सुअल एक्ट करने मे थोड़ा भी हिचक नहीं है। कम से कम वस्त्र में ओ ठाकुर के आलिंगन में जाने में हिचक नहीं रही है। फिल्म लाइन ही ऐसा है कि हिरोइन सभी तरह का एतराज से ऊपर पहुँचि चुकी रहती है। लेकिन तुम्हारा ठाकुर एक बूढ़ा आदमी है। बूढ़ा आदमी आ एक कमसीन छोंकड़ी का प्रेम प्रसंग का दृश्य कैसा बनेगा जैसे बूढ़ा आदमी प्रेम नहीं अजरा का बलात्कार कर रहा हो। यह दृश्य जब सिनेमा हॉल मे दिखाया जाएगा तो दर्शक तुम लोगों पर थूकने लगेंगे। तुम्हारे फिल्म मे इस तरह का पटकथा तैयार करने बाला तुम्हारा दुश्मन है। बात को सही-सही समझो। फिल्म तो बर्बाद होगा ही, इसके साथ-साथ अजरा का भी फिल्म केरियर चौपट हो जाएगा।''

जेना इन्जीनियर मकान बन' सँ पहिने बनल मकान केँ अपन मानस पटल पर देखि लैए तहिना डाइरेक्टर फिल्म बन' सँ पहिने बनल फिल्मक सही-सही कल्पना क' लैए। अजराक मौसी जे बात कहने छलथिन तकरा परमानंदजी जायज मानैत छलाह। भानु बाबू एवं अजराक प्रेम-दृश्य अजरे लेल नहि, फिल्मक लेल सेहो घातक होइतैक। ठाकुरक पाट लेल कम उमेरक युवकक दरकरार रहै जकर पर्सनेल्टी मे चुंबकीए पौरुषक आकर्षण होइतै। भानु बाबू मे एकर सर्वथा अभाव छलनि। अहि दृश्यक छायांकन सँ बहुत पहिने परमानंदजी भानु बाबू केँ बुझबैक प्रयास कयने छलथिन। मुदा भानु बाबू जिद्द पसारि देने छलथिन जे ठाकुरक पाट वएह करताह। भानु बाबू अपना केँ प्रोड्यूसरे नहि फिल्मक कर्त्ता-धर्त्ता मानैत छलाह। तेँ हुनकर वाक्य अकाट्य छल।

आब की होअय? परमानंदजी दुविधा मे पड़ि गेलाह। परमानंदजीक मैथिली प्रेमक निशा तेहने छलनि जेहन हमरा छल। मैथिली फिल्मक चलते हुनका बम्बइक फिल्म जगत सँ सम्पर्क टूटि गेल रहनि। फिल्म लाइन मे काज तखने भेटैत छैक जखन फिल्मी संसार सँ सम्पर्क-सूत्र जूटल रहैत छैक। परमानंदजी अपन फिल्मी

कैरियर कैँ दाव पर लगा बिना एक रुपैया पारिश्रमिक लेने ईमानदारी सँ मैथिली फिल्मक डाइरेक्टरक काज क' रहल छला। ओ कोनो तरहें फिल्मक सूटिंग मे अवरोधक नहि होउक ताहि प्रयास मे रहथि। तकर अवसर हुनका भेटि गेलनि।

भानु बाबू कोनो अपने काजे राजनगर सँ दू दिनक लेल बाहर गेला। परमानंदजी कैँ मौका भेटि गेलनि। ओ ठाकुरक दलान पर एकटा सीनक सूटिंग करबौलनि। दलान पर ठाकुरक दरबारीक जमघट रहए जाहिमे टंचजी प्रधान छला। सभटा दरबारी ठाकुरक असामयिक निधन सँ अन्यन्त दुखी छल। टंचजी त' ठाकुरक मृत्यु सँ एतेक ने मर्माहत रहथि जे ओ रोदन क' रहल छला। दोसर सीन सेहो टेक भेल। ओ सीन छल ठाकुरक सराधक भोज। सभहक आगाँ पात पर भात आ आँखि मे नोर।

प्रसादजी कैमरा संचालन करैत छलाह। ओ पटकथा सँ पूर्ण रूपेण परिचित रहथि। डाइरेक्टर अजराक सेक्सुअल सीन कैँ ओमिट क' देने छला तैँ ओ क्षुब्ध रहथि। परिस्थिति सँ पूर्णतः अनभिज्ञ प्रसादजी फिल्म सफलता लेल संशय मे फँसि गेल छलाह। अजराक मादक जवानीक छायांकन नहि भेल रहै तकर कचोट प्रसादजी कैँ रहनि आ एखन तकरे वर्णिका ओ हमरा सँ क' रहल छला।

प्रसादजीक उदासी अपना जगह पर वाजिब छलनि। आउटडोर सूटिंग मध्य पटकथा मे परिवर्त्तन नहि हेबाक चाहैत छलै। मुदा डाइरेक्टरक मजबूरी कैँ नजरिअन्दाज नहि कएल जा सकैत छल। परमानंद लाचार रहथि। सभ हुनका दूसि रहल छलनि। वापस अयला पर भानु बाबू कैँ फिल्म मे ठाकुरक मृत्युक समाचार भेटलनि। ओ बमकि उठलाह। सभहक सोझाँ मे परमानंदजी कैँ प्रताड़ित कर' लगलाह। मुदा परमानंदजी सभ तरहक उपेक्षा कैँ सहैत अपन काज करिते रहलाह। ठाकुरक पाट कैँ अल्प केलाक बाद ओ ठाकुरक बेटाक पाट कैँ विस्तार केलनि। पढ़ाइ समाप्त क' जखन ठाकुरक बेटा गाम अबैए त' ओ जवान भ' गेल रहैए। खबासनीक भतीजीक संग ओकर प्रेम प्रगाढ़ होइए। प्रेमक दृश्य पटल पर अंकित कर' मे मिलन, बिछुड़न, छीना-झपटी, नोक-झोंक, रूसब-मनायब इत्यादि सभ किछु होइए। फिल्मक लगभग चारि गोट गीत त्रिदीप कुमार एवं लता बोस पर फिल्माओल जाइए।

परमानंदजी कैँ पटकथा मे परिवर्तन कर' पड़लनि। ओ दिन मे डाइरेक्शनक काज करथि आ राति मे जागि-जागि क' पटकथा कैँ दुरुस्त करथि। हुनकर मदतिगार मे सिकन्दर नामक एकटा असिस्टेन्ट डाइरेक्टर छलनि। मुदा सिकन्दर डाइरेक्शनक काज सँ अधिक फिल्म मंडली मे फालतू आयलि महिला कलाकारक संग समय व्यतीत करैत छल। ठाकुरक बेटाक पाट मे त्रिदीप कुमार आ खबासिनक भतीजीक पाट मे लता बोस, दुनूक किरदारी कैँ परमानंदजी अहि तरहें सेटिंग केलनि

जे फिल्म मे जान आबि गेल रहै।

फिल्मक सूटिंग काल बहुत तरहक अड़चन अबैत रहलै। जहिना मधुमाँछीक जमा कएल मधुक खजाना मे चिल्होरि लोल मारैए तहिना लता बोसक रूपक खजाना मे दरभंगाक धनिक मारबाड़ीक बहकल छौंड़ा जाहि मे श्यामा नामक एकटा चंठ आ लफन्दर प्रधान छौंड़ा छल, लोल मारक लेल बहुत तरहक खेल खेलायब शुरू क' देने रहए। अजरा रिजर्भ छलीह आ सदिकाल पर्दा मे रहैत छलीह। मुदा लता बोस परोपकारी छलीह आ सभ तरहक युवक मंडलीक संग हँसी-ठठ्ठा लेल तत्पर रहैत छलीह। ताही कारणे सँ फिल्म सूटिंग मे बहुत हर्ज भेल रहैक। लता बोसक आचरण सँ परमानंदजी बेकल भेल रहैत छलाह। मुदा एक सीमाक बाद ओ लाचार भ' जाथि। हम देखि रहल छलहुँ परमानंदजीक दुर्दशा। हुनकर कन्हा पर फिल्म निर्माणक सभटा भार लादल रहनि। हुनका काज मे मदति केनिहार कियो नहि रहनि। परमानंदजी त' मनुक्खे छलाह। अपन अपमान केँ सहबा मे जखन हुनकर धैर्य जवाब द' देनि तखन ओ तनुकमिजाजी बनि जाथि, एकर बाद चुपचाप एकांत मे बैसि रहथि।

आकाशमे मेघ आबए लगलै। फिल्मांकन मे अवरोध होब' लगलै। साउन्ड टीमक शंकर कहलक–''आकाशे मेघ डेके गेच्छे। हय त' झड़ उठबे। सूटिंग काज आर होबे ना। पैक कोरते बोले दीन।''

फिल्मक सूटिंग काल अनेक तरहक बिर्रोक आक्रमण भेलै। अन्हड़ उठैत रहलै। कतेको केँ कपार फुटलै, कतेको केँ छाती मे दर्द पैसलै। दू महीना तेरह दिनक बाद सूटिंग केँ समाप्त घोषित कएल गेल।

आल्मुनियमक लगभग बीस पेटी मे सूटिंग भेल फिल्मक निगेटिभ ल' क' हम आ मदन भाइ बम्बइ लेल प्रस्थान केलहुँ। भानु बाबू, फिल्मक तेसर निर्माता, हुकूम देलनि–अहाँ दुनू आगाँ बिदा होउ। हम किछु निबटा क' दू तीन दिनक बाद आबि रहलहुँए।

12

बम्बइ लैबक एकटा कमरा। हम, मदनभाइ एवं भानु बाबू प्रतीक्षा मे बैसल रही। ओही कोठलीक एक कात मे हमर सभहक फिल्म एडिटर सेहो बैसल छलाह। एडिटरक सोझाँ मे टेबुल आ टेबुल पर राखल 'मूभेला' नामक मशीन। अही मशीन सँ फिल्म मे काट-छाँट अर्थात् एडिटिंग होइए। एडिटर महाराष्ट्रियन रहथि। एखन ओ कोनो आन फिल्मक एडिटिंग मे बाझल छलाह।

प्रतीक्षा समाप्त भेल। राम सिंह नामक व्यक्ति कोठली मे प्रवेश केलनि। राम सिंह लैबक डार्करूम मे काज करैत छलाह। हमर सभहक लैब संबंधी काज हुनके जिम्मा छलनि। करीब पाँच मिनट तक राम सिंह एडिटरक कान मे फुसफुसाइत रहला, फेर जेना आयल रहथि तहिना वापस चल गेला। राम सिंहक गेलाक बाद एडिटर हमरा सभ दिस घुमैत कहलनि—''स्क्रिप्ट के हिसाब से आपका फिल्म आधा से थोड़ा अधिक बन पाया है। अभी बहुत काम बाँकी है। पूरा फिल्म का सूटिंग हो जाने के बाद ही मैं एडिटिंग का काम कर पाऊँगा। एक बात और। आउटडोर सूटिंग के समय ही क्लोजअप का काम कर लेना है।''

समाचार विस्फोटक छल। हम आतंकित भ' गेलहुँ। दू महिना तेरह दिनक सूटिंग भेल रहए आ फिल्म बनल आधा सँ कनिकबे अधिक। मदन भाइक प्रतिक्रियाक जानकारी हमरा नहि भेल। मुदा भानु बाबूक धधकल स्वर सुनक अवसर भेटल छल। ओ कहने रहथि—अयोग्य डाइरेक्टर फिल्मक सत्यानाश क' देलक।

ऊँट रेगिस्तान मे अहि घमंड मे रहैए जे ओकारा सँ पैघ, ओकरा सँ ऊँच कियो भइये ने सकैए। मुदा पहाड़क नीचाँ अबिते ओकर घमंड थुर्री-थुर्री भ' जाइत छैक। मुदा अपन मैथिल बन्धु रेगिस्तान मे होथु अथवा नखलिस्थान मे, हुनकर घमंड सदिकाल कायमे रहैत छनि। भानु बाबू निश्चिते मैथिल बंधु रहथि।

हम किछु बजितहुँ तकर अधिकार हमरा छल। मुदा हम त' बौक बनि गेल रही। केवल मोन मे विचार गतिमान रहए। डायरेक्टरक चयन भानु बाबूए कयने रहथि।

फिल्म अदहे बनल छल तकर दोषारोपण ओ परमानंदक ऊपर क’ रहल छलाह जे हमरा स्वीकार नहि छल। सूटिंग काल हम परमानंदजीक कार्यकलाप देखि चुकल रही। सूटिंगक समय कोन-कोन तरहक अड़चन आयल रहै तकर हम प्रत्यक्षदर्शी छलहुँ। परमानंदजी कैँ दोख देब अनर्गले नहि, पाप छल।

‘ममता गाबए गीत’ भेल मैथिली भाषाक प्रथम फिल्म। हम एक तरहें एकर इतिहास लिखि रहलहुँ अछि। इतिहास भावविहीन होइए। इतिहास निर्मम होइए। इतिहास मे ओतबे बात लिखल जाइए जतबा बात भेल रहैए। कोनो व्यक्तिक, कोनो समुदायक गलत सोच, गलत निर्णयक साक्षी होइए। इतिहास गलत निर्णय कैँ क्षमा नहि करैए। परमानंदजीक संग भानु बाबूक अनबन किएक भेल रहनि आ तकर परिणामस्वरूप सूटिंगक कतेक नोकशान भेल रहैक तकर ज्ञान हमरो छल आ मदन भाइ, तिनको छलनि। हम आ मदन भाइ सूटिंगकाल काज मे व्यस्त रही। मुदा भानु बाबू कलाकारक झुंड मे मिलिक’ निफिकिर भ’ कलाकार बनल रहलाह। एखन ओ परमानंदजीक भर्त्सना क’ रहल छला से हमरा आ मदनभाइक लेल पीड़ादायक रहए।

फिल्म आधे बनलैए। आब आगाँ की हेतै? फिल्मक मुहूर्त तक भानु बाबू फिल्मक खर्चाबहीक नियमित मुआयना करैत रहला। हमर आ मदन भाइक देल रकमक सूक्ष्म अध्ययन क’ प्रत्येक पृष्ठ पर अपन हस्ताक्षर करैत रहलाह। मुदा राजनगर मे सूटिंग कालक खर्च देखिओक’ खर्चाबही दिश ताकब छोड़ि देने रहथि। पार्टनरशिप मे ओ छह आनाक मालिक रहथि। अपन हिस्साक पन्द्रह हजार टाका भानु बाबू द’ चुकल रहथि। फिल्मक आरम्भ मे बनल बजटक दोबर सँ बेसी खर्च भ’ चुकल रहैक। आब जँ फिल्मक बाँकी काज हेतैक त’ धन कत’ सँ औतैक? अहि प्रश्नक उत्तर अनिश्चित छल। मुदा एक बात निश्चित रहै। भानु बाबू आरो धनक उगाही नहि क’ सकैत छलाह। हुनकर आर्थिक स्थितिक आकलन हमसभ क’ चुकल रही।

हमर मैथिली प्रेमक निशा फुर्र भ’ चुकल रहए। आब ‘ममता गाबए गीत’ ममताक नोरे टा बहा रहल छल। अकाश कांकोर बनल मोन सोचि रहल छल—बौए, फँसि गेलएँ ने! आब कोंकिआइत रह’। बम्बइ लैबक चारूकात सँ वेदना टपकि रहल छलै। हारल, चूरल आ निस्तेज बनल तीनू निर्माणकर्त्ता सड़क पर आयल। भानु बाबू बान्द्राक बस पकड़लनि। हम आ मदन भाइ मानसरोवर नामक होटल मे ठहरल रही। टैक्सी सँ होटल पहुँचलहुँ।

फिल्म निर्माण एक व्यक्ति नहि, सामूहिक रूपैँ अनेक व्यक्तिक कार्य क्षमताक उपज थिक। एकर प्रत्येक विभाग जेना संगीत, छायांकन, एडिटिंग, मेकअप इत्यादि आला दर्जाक कला सँ सम्बन्धित अछि। मुदा कलाकारक विशिष्टता रहितहु फिल्म

जगत प्रपंच सँ भरल छल। कोनो टा कलाकार अथवा फनकार सत्य बजिते ने छलाह। बिना अग्रिम लेने कियो डेग उठबिते ने रहथि। तकर वाद नशाक वर्चस्व त' रहबे करै। बजट सम्बन्धित प्रश्न पुछला पर उत्तर भेटल रहए–''प्रोड्यूसर को हमेशा कपच कर बजट बताया जाता है।''

हे ईश्वर! आब हेतै की? फिल्म उद्योग कजरी लागल घाट। पाछाँ हटब त' एखन तकक कएल परिश्रम नष्ट भ' जाएत। आगाँ बढ़ब त' कोन ठेकान? उधारक पूजी सेहो नष्ट ने भ' जाए! निचोड़ल नेबोक-फाँक जकाँ मुँह बौने होटलक बिछौन पर पड़ि रहलहुँ।

दोसर दिन ट्रेन पकड़ि हम आ मदन भाइ अपन-अपन गाम आ धाम पहुँचि गेलहुँ। हमर गामक वातावरण पूर्ववते। ककरो अनकर चिंता जानक जिज्ञासा नहि। मुदा से नहि, हमर छोटका कका अर्थात् कौआली बाबू हमरा बजा क' अपन दलान पर ल' गेलाह आ खोदि-खोदि क' सवाल पूछैत रहलाह। फिल्म निर्माण संबंधी एवं अहि काज मे उपस्थित भेल भीषण समस्या। सभटा जानकारी प्राप्त कएलाक बाद विदुर नीतिक प्रकांड पंडित छोटका कका अपन निचोड़ल मंतव्य प्रगट केलनि– भारतक समस्याक निदान लेल विष्णु भगवान कँ कइएक टा अवतार लिअ पड़लनि। मुदा पंडितक पांडित्य सँ परिपूर्ण मिथिलाक समस्या जटिल अछि। मिथिला मे बहुतो तरहक गुण छैक जाहि मे प्रधान अछि आलस्यक साम्राज्य। एतुक्का समस्याक निदान लेल विष्णु कँ नहि, महादेव कँ अवतार लिअ पड़तनि, तांडव नृत्य कर' पड़तनि। महादेव अधिक काल भांग-धथूरक सेवन क' समाधिए मे रहैत छथि। ओ कहिया अवतार लेताह तकर निर्णय हुनके पर छोड़ि दहनु। एखन तौँ अपन समस्याक निदान लेल जोगार लगाब'। परिवार मे बँटबारा भ' रहल छह। तोरा कतेक खेत-पथार छह तकर तोरा कनिकबो ज्ञान नहि छह। तौँ अबिलम्ब अपन मौजे पुतइ लेल प्रस्थान कर'। हमर विचार नहि मानब' त' नोकशान मे पड़ि जेबह आ जीवन भरि पछताइते रहि जेब'।

फिल्म बनेबाक विचार, नोकरी कँ त्याग करब, बम्बइ जायब, फिल्म निर्माण अवधि मे अत्यधिक परिश्रम आ अन्त मे असफलता। गाम मे परिवारक काज मे रुचि नहि छल। अन्यमनस्क एमहर-ओमहर बौआइत समय बिता रहल छलहुँ। लगभग पाँच मासक बाद मदन भाइक पोस्टकार्ड भेटल। पोस्टकार्डक संदेश रहए– तुरंत राजनगर आबि क' हमरा सँ भेट करह। काज आवश्यक अछि। भेट भेले पर सविस्तर गप्प कहब।

राजनगरक सटल मिर्जापुर स्थान। महंथाना मे सभ किछु ओहने जेना पछिला

बेर देखने छलहुँ। मुदा मदन भाइक चेहरा पर चिंताक छाया। मात्र किछु महिनाक भीतरे मदन भाइ अपन वयसक जेना दस बर्ख बिता चुकल होथि। ओ हँसैत हमर स्वागत केलनि। मुदा हुनक चेहरा पर पसरल भाव किछु आने बातक संकेत क' रहल छल। हम सोझ प्रश्न केलियनि—मदन भाइ, अहाँ परेशान बुझाइत छी! की भेलए? हमरा कहू ने!

—सैह कहक लेल अहाँ कैँ बजेलहुँए। हम सही मे परेशान छी आ हमर परेशानी बड़ी टा अछि। महंथक जीवन परेशानीए मे व्यतीत होइत छै। कमे सौभाग्यशाली महंथ होइत छथि जनिकर मृत्यु स्वाभाविक होइए। मुदा एखन अहि गप्प कैँ विराम दिऔ। अहाँ हाथ-मुँह धोउ। किछु जलपान करू। स्थिर भेला पर आराम सँ हम सभ गप्प-सप्प करब।

दालि मे घीक बदला पिसल मिरचाइक बुकनी पड़ि गेल, वार्तालाप मे जीवन-मृत्युक जटिलता प्रवेश क' गेल। संध्याकाल एकांत मे हम चुपचाप बैसल रही तखने मदन भाइ अयलाह आ कहब शुरू केलनि—मात्र सतरह बर्ख पहिने भारत स्वतंत्र भेल; परिवर्तन हेतै से त' जग विदित छल। मुदा परिवर्तन एतेक तीव्र गति सँ हेतै तकर आकलन कर' मे हम पछुआ गेलहुं। धर्म मे आस्थाक दू गोट मार्ग आत्मबल आ अंधविश्वास। महंथानाक स्थापना अंधविश्वास पर भेल छलै। ताहि समय मे तकर प्रयोजन रहैक। मुसलमान एवं अँग्रेज शासकक शासन मे हिंदू धर्म एवं हिन्दू संस्कृतिक अस्तित्वे खतरा मे आबि गेल रहै। तँ आर्य धर्मक रक्षा लेल अंधविश्वास मे कायम मठ एवं महंथानाक बड़ पैघ भूमिका रहलै। मुदा स्वतंत्र भारत मे अंधविश्वास पर कायम धार्मिक व्यवस्था एवं कार्यकलापक न्यौँ कमजोर भ' गेलैए। धार्मिक विश्वास एवं परम्पराक हँसी मजाक उड़ाओल जा रहलैए। जनसंख्याक विशाल भाग जे पुस्त दरपुस्त सँ दबल, थकुचल रहलै तकरा भोटक अधिकार भेटि गेलैए। नव संविधानक अनुसारे कर्त्तव्य शून्य आ अधिकार पर्याप्त। एहन अधिकार आब राक्षस बनि महंथाना कैँ उजाड़ै लेल तत्पर भ' गेलैए। मिर्जापुर स्थानक जतेक मौजे छैक तकर सभठाम लड़ाइ-झगड़ा, भूमि हड़प, लूट-पाट आ सभ तरहक अतिक्रमण आरम्भ भ' चुकलैए। एकरा मुकाबला करै लेल मजबूत शासन एवं कानून चाही। शासनक आदि सँ अन्त तक मे भ्रष्टाचार पसरि गेलैए। कानून वैह छैक जे अँग्रेज बनौने छल। मुदा कानूनक धार भोथ भ' गेलैए। आब लोक कैँ सिपाहीक लाल टोपीक भय नहि होइत छैक। आब त' लोके महंथक जमीन पर ललका झंडा गाड़ि रहलैए। केदार भाइ, कल्पना भविष्यक होइत छैक। कल्पना भेल अनिश्चय आ निश्चयक बीच झुलैत एकटा धाग। एतय कल्पना करैक जरूरति नहि छै। भविष्य निश्चित छै। महंथानाक नाश हेबेटा करतै। हम महंथ, तँ

हमरा इच्छा सँ अथवा जबर्दस्ती महंथानाक समस्या मे संलग्न होबए पड़तै। इएह हमर पेरशानीक कारण अछि।

मदन भाइ परेशानो रहथि आ दुख मे सेहो छलाह। विशेषक' ओ हमरा लेल दुःखी रहथि। पहिल बेर हम जखन हुनका लग पहुँचल रही तखन हमरा लग मे एकटा योजना छल। बैद्यनाथ बाबू सँ प्राप्त पाठशाला खोलैक विचार छल। मिथिलाक्षर कैँ पुनः स्थापना करक हेतु मिथिलाक्षर मे धार्मिक पुस्तक तैयार क' पाठशाला खोलैक दृढ़ संकल्प छल। महंथजीक प्रत्येक मौजे मे मंदिर। मंदिरक परिसर मे पूजा-पाठक अलाबे संस्कृतक पाठशाला कार्यरत रहए। मधुबनी, दरंभगा, मुज्जफरपुर आ पटना मे महंथजीक जमीन। पाठशाला खोलक लेल जमीन संग सभ तरहक सुविधा छलै। आन-आन खर्च जेना मिथिलाक्षर मे पोथी तैयार करब कमे खर्च मे संभव भ' जइतै। कहबाक अर्थ जे जँ पाठशाला खोलक विचार पक्का भेल रहितै त' विभिन्न स्थान पर स्वतः पाठशाला खुजि गेल रहितै। मुदा मदन भाइ पाठशाला खोलक विचार कैँ त्यागि मैथिली भाषा मे फिल्म बनेबाक सुझाव देलनि। तकर कचोट एखन हुनका भ' रहल छलनि। फिल्मेक कारणे हमरा नोकरी सँ त्यागपत्र देब' पड़ल छल। फिल्म कैँ भेलै की? फिल्म आधा पर लटकि गेलै।

मदन भाइ अपन मोनक व्यथा कैँ काबू मे अनलनि। अपन कथन कैँ समाप्त करैत कहलनि—हमरा अफसोच अछि। हमर निर्णय सही नहि छल। मुदा अफसोचे क' की हम अपन कर्त्तव्य सँ विमुख भ' जाइ? नहि-नहि, जहाँ तक संभव होअय गलती कैँ सुधारक प्रयत्न करी। फिल्मक काज रूकल अछि। केदार भाइ, हमर विचार मे फिल्मक बाँकी सूटिंग कैँ पूरा कएल जाए।

हम किछु जवाब नहि द'क' टकटक मदन भाइ दिस ताकए लगलहुँ। मदन भाइ आगाँ कहलनि—फिल्म पूरा करक सभटा खर्चक हम अनुमान क' चुकल छी आ तकर इन्तिजामो क' चुकलहुँ अछि। फिल्मक अगिला सूटिंग लेल परमानंदजीक अर्थात् डायरेक्टरक सहमति चाही ने! परमानंदजी जहिना सरल, संवेदनशील एवं फिल्म कला लेल समर्पित व्यक्ति छलाह तहिना ओ सभ गुण सँ बिलग भ' गेलाह अछि। ओ अत्यधिक टेंशनक कारणे टूटि गेलाए। हुनकर व्यवहार बदलि गेलए। ओ बम्बइ शहरक फिल्म जगत सँ नाता तोड़ि दरभंगे मे पड़ल रहैत छथि। नशा हुनका पचैत नहि छनि। मुदा नशा मे बेमत्त भेल अड़बड़ बजैत समय बिता रहलाए। एक तरहें अपन सभहक फिल्म एक नीक मैथिल डायरेक्टरक बलिदान ल' चुकल अछि। खैर, हम हुनका सँ सम्पर्क केलहुँ अछि। हुनका पोलहबै लेल जे क' सकैत छलहुँ, केलहुँए। बहुत बुझेलाक बाद आ पार्टनरशिप मे शेयर देलाक बाद ओ फिल्म मे डाइरेक्शन देबा लेल

तैयार भ' गेलाह। हम मिर्जापुर स्थानक विकट समस्या मे आकंठ डुबि गेलासँ पहिने फिल्मक बँचल काज कैँ पूर्ण कर' चाहैत छी। अहाँ लग त' केदार भाइ, हम अपराधी छीहे। मुदा मैथिली भाषा मे फिल्म बना क' हम मिथिलाक माटिक ऋणसँ उऋण होब' चाहैत छी। हम अही विश्वासक संग अहाँ कैँ समाद पठौने रही। पछिला भूल-चूक कैँ बिसरैत फिल्मक अगिला काज मे अहाँ तत्पर भ' जाइ से हमर आग्रह अछि।

समय बलवान होइए। थोड़ेक धैर्य चाही। मदन भाइक विचार सँ हमर मूइल आकांक्षा मे आशाक किरण प्रस्फुटित भेल 'ममता गाबए गीत' फिल्म बनि क' रहत तकर विश्वास पनपि गेल रहए।

राजनगर गेस्ट हाउसमे फेरसँ सभटा कलाकार एवं फनकार जमा भेलाह। फिल्मक सूटिंग आरम्भ भेल। परमानंदजी जे अहि बीच अपन नाम बदलि सी. परमानंद भ' गेल रहथि, पूर्ण लगन एवं निष्ठासँ डाइरेक्टरक काज केलनि। पछिला राग-द्वेष कैँ बिसरि भानु बाबू सेहो राजनगर मे पदार्पण केलनि। एक मास तक सूटिंगक काज होइत रहल। तखन छायांकन समाप्त घोषित कएल गेल।

हम आ मदन भाइ बम्बइ जेबा लेल तैयार भइए रहल छलहुँ आ कि देश मे भूचाल आबि गेल रहै। पाकिस्तान भारत पर आक्रमण क' देलकै। 1962 ई. मे भारत चीन सँ नीक जकाँ पराजित भेल छल। चीन भारतक विशाल भू-भाग पर कब्जा क' लेने रहए जकरा छोड़ै लेल ओ तैयार नहि छल। राष्ट्रिय एवं अन्तरराष्ट्रिय स्तर पर भारतक मनोबल निम्न स्तर पर पहुँचि गेल रहै। पाकिस्तान कैँ उपयुक्त अवसर बुझेलइ। पाकिस्तान कैँ अमेरिका सँ प्रचुर मात्रा मे सैनिक साजो-समान भेटिए रहल छलै। पाकिस्तान भारतक दुश्मन चीन सँ नजदीकी कायम करैत ओकर दास बनि गेल छल। सभ तरहक तैयारी केलाक बाद पाकिस्तान युद्धक डंका बजौने रहए।

जवाहरलाल नेहरूक मृत्यु भ' गेल रहनि। जाबे तक नेहरू जीवित रहला भारतक प्रजातंत्र राजतंत्रक मुखौटा पहिरने छल। एक व्यक्तिक सोच, एक व्यक्तिक राज आ एक व्यक्तिक सरकार। नेहरूक विशाल व्यक्तित्वक सोझाँ मे बाँकी काँग्रेसी नेता पंगु बनि क' रहि गेल छला। नेहरूक बाद देशक प्रधानमंत्री के बनत से प्रश्न समूचा देशक चिंता बनि गेल रहै। मुदा भारत माताक कोखि मे अकाल नहि पड़ल छलैक। देशक भाग्य जागि गेल रहैक। प्रधानमंत्रीक पद पर लाल बहादुर शास्त्री शपथ लेने रहथि। ई बात स्वीकार करै मे संकोचक गुंजाइश नहि छलै जे ताहि समय मे भारतक आर्थिक स्थिति दयनीय अवस्था मे रहै। देश मे अन्नक भारी कमी छलै। पी.एल.फोर एट्टीक समझौता अनुसार अमेरिकाक तीन गोट गहूम लादल जहाज नित्य दिन भारतक बन्दरगाह पर पहुँचि रहल छलै। मुदा सभ तरहक तकलीफ

रहितहु सज्जन, सरल, गाँधीवादी लाल बहादुरक नेतृत्व मे समूचा देशक जनता मे पूर्ण आस्था जाग्रत भ' गेल रहै। 'जय जवान, जय किसान' क नारा सँ देश प्लावित भ' गेल छल।

पाकिस्तान कैँ मुँहतोड़ जवाब देल गेलै। सभटा मोर्चा पर पाकिस्तानक पराजय भेलै। युद्धक सामिग्री छोड़ि पाकिस्तानी सैनिक पड़ा क' दूर चल गेल। अमेरिका सँ प्राप्त अजेय पैटन टैंक कैँ भारतीय सैनिक थकुचि देलक। भारतक फौज जीत हासिल करैत लाहौर तक पहुँचि गेल।

''ताहि समय मे सम्पूर्ण विश्व दू खेमा मे विभाजित रहए। एक खेमाक नेतृत्व अमेरिका आ दोसर खेमाक कर्णधार सोवियत रूस। भारत कोनो खेमा मे नहि छल। मुदा पाकिस्तान अमेरिकाक पिट्ठू बनल अस्त्र-सस्त्र संगे आर्थिक मदति प्राप्त क' रहल छल। रसियन नेता कैँ पाकिस्तान पर नजरि रहनि। ओ पाकिस्तान कैँ अपन पक्ष मे आन' चाहैत छलाह। ई छल रसियन नेताक सोच मे खोट। कारण पाकिस्तान विश्वास योग्य देश छले नहि। पाकिस्तान भारतक संग दुश्मनीक सोंगर पर ठाढ़ एक चरित्रहीन, अविश्वासी देश छल। सोवियत रूसक कमान बुलगानीन एवं ख्रुश्चेव नामक नेताक साथ मे रहए। दुनू नेता बलंठ, मूर्ख आ बुद्धिहीन रहथि। पाकिस्तान कैँ अपन खेमा मे आनक उत्कंठा सँ ओ दुनू नेता बिन बजाओल भारत आ पाकिस्तानक युद्धक मध्यस्थता कर' लेल ताशकंद पहुँचि गेलाह। युद्ध विराम भेल। लाल बहादुर शास्त्री ताशकंद पहुँचलाह। रूसी नेताक झांसा मे आबि सरल प्रकृतिक शास्त्रीजी जीतल भूमि पाकिस्तान कैँ वापस करक शर्तनामा पर दस्तखत क' देलखिन। कश्मीरक समस्या ओहिना मुँह बौने रहि गेल। भारत मे एकर भयंकर प्रतिक्रिया भेलै। अपन देशक प्रतिकूल प्रतिक्रियाक समाचार पाबि शास्त्रीजी व्यथित भ' गेला। ओ दुख कैँ सहि नहि सकलाह। शास्त्रीजीक हृदयगति अवरुद्ध भ' गेलनि। ताशकंदे मे हुनकर मृत्यु भ' गेलनि।

लाल बहादुर शास्त्रीक आकस्मिक निधन सँ समूचा भारत कराहि उठल। शास्त्रीक मृत्यु सँ देश ओहिना कंगाल भ' गेल जहिना लौह पुरुष बल्लभभाइ पटेलक मृत्यु सँ भेल छल।

शास्त्रीजीक क्षति सँ जेना देश भरिक लोक मर्माहत छल तहिना हम आ मदन भाइ सेहो वेदना मे रही। हमरा दुनूक हृदय मे हाहाकार मचल रहए। थोड़े समय बितलै। समयक मरहम दुख सहैक क्षमता प्रदान केलक। आस्ते-आस्ते हम सभ अहि दुख सँ निवृत्त भेलहुँ। तकर बाद 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' बला उक्ति सामने आबि गेल! कर्म त' सभ कैँ करए पड़िते छैक ने! हम आ मदन भाइ बम्बइ पहुँचलहुँ।

बम्बइ लैबक पछबारी कात बरामदा पर राखल ब्रेंच पर तीनू निर्माणकर्त्ताक प्रतीक्षा मे बैसल रही। थोड़ेक समय बितलै। राम सिंह एवं हमर सभहक फिल्मक मराठी एडिटर डार्करूम सँ निकलि हमरा सभहक लग मे पहुँचलाह। एडिटर मुस्की दैत कहलनि–''स्क्रिप्ट के मोताबिक फिल्म पूरा बन चुका है। अब बचा है इनडोर मे सूटिंग होने वाला दो डान्स, बैकग्राउन्ड म्युजिक, फिल्म का तीन-चार कापी बनाने का खर्च और सेंसर फीस। थोड़ा-बहुत बम्बइ लैब का फाइनल पेमेन्ट भी करना होगा। मेरे अन्दाजा मे पैंतीस से चालिस हजार और खर्च करना होगा, तभी फिल्म थियेटर तक पहुँच पायेगा।''

आरम्भ मे फिल्मक बजट चालीस हजारक बनल रहए। फिल्म निर्माणक अन्तकाल बजट चालीस हजार पर ठाढ़े छल।

मदन भाइ इशारा केलनि। हम बैग सँ निकालि दू हजार टाका एडिटर कैँ आ एक हजार टाका राम सिंह कैँ हाथ मे देलयनि। दुनू कैँ इहो आदेश देल गेलनि जे दुनू अपन-अपन काज कर' मे लागि जाथि।

दोसर दिन प्रातः काल हम आ मदन भाइ भानु बाबूक चिंचपोकली आवास मे दाखिल भेलहुँ। चाय-नास्ताक काज सम्पन्न भेल। भानु बाबू बजला–ह' ह'। आब मोन कैँ शान्ति भेटलए। फिल्म निर्माणक काज भेल कठिन रस्ताक लम्बा सफर। मुदा हम सभ सकुशल आखरी पड़ाव पर पहुँचि गेलहुँ अछि।

मदन भाइ भानु बाबूक उक्तिक खण्डन करैत कहलनि–बाँकी जे खर्च हेतै से त' समक्ष अछिए। ओकरा एखन बिसरि जाउ। मानि लिअ फिल्म तैयार भ' गेल तखन समस्या ठाढ़ होयत एकर वितरणक। की हमसभ तैयार फिल्म कैँ ल'क' एक सिनेमा हॉल सँ दोसर सिनेमा हॉल तक बौआइत रहब? फिल्म वितरणक काजक ने लूरि अछि आ ने लूरि प्राप्त करक क्षमता। बिना वितरक अर्थात् डिस्ट्रीब्यूटरक फिल्म सिनेमा हॉल तक कोना पहुँचत? समस्या त' अछिए। हमसभ आखरी पड़ाव तक कहाँ पहुँचलहुँए?

मदन भाइक कथन सुनि भानु बाबू तिलमिला गेला। हुनक दर्प हुनका मुखमंडल पर स्पष्ट रूपें अंकित भ' गेलनि। ओ ठोर पर ठोर बैसोने कनेकाल तक स्थिर गंभीर रहलाह, तखन बजला–महंथजीक कथन जायज छनि। सही मे हमरा लोकनि अन्तिम पड़ाव सँ दूरे छी। मुदा अहाँ दुनू फिकिर नहि करू। महंथजी बहुत खर्च क' चुकलाए, आब ओ एको टका आओर खर्च नहि करथु। जे खर्च हेतै तकर बन्दोबस्त हम असगरे क' लेब। बम्बइ शहर मे प्रवासी मैथिलक बड़ी टा समाज छैक। सभटा मैथिल हमरे-अहाँ जकाँ मिथिलाक प्रतिए संवेदनशील छथि। एतय विद्यापति पर्वक अलावा

बहुत तरहक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होइए। हम सभ तरहक कार्यक्रम मे भाग लैत छी। हम सभटा प्रवासी मैथिल सँ व्यक्तिगत रूपेँ परिचित छी। कइएक गोट मैथिल सरकारी विभाग मे उच्च पद पर सेहो आसीन छथि। काज भेल हमरा सभहक फिल्म लेल डिस्ट्रीब्यूटर ताकब। हम सभ सँ सम्पर्क करब आ हुनका सभ केँ मैथिली भाषा मे बनल फिल्मक जानकारी देबनि। अहि तरहेँ हम वितरक केँ अबस्से ताकि लेब। अगिला खर्च वितरके करत तकरो इन्तिजाम क' लेब। अगिला काज हमरे जिम्मा छोड़ि अहाँ दुनू निश्चिन्त भ' जाउ।

मैथिली भाषा मे फिल्म बना क' लाभ होयत, यश भेटत आ की मैथिल समुदायक बीच प्रशंसाक पात्र बनब ताहि दिश हमर सभहक ध्यान गेले ने रहए। मात्र मैथिली भाषाक रक्षार्थ फिल्म बनेबाक आयोजन कयने रही। मिथिलांचल मे गरीबी, अशिक्षा एवं आलस्य छैक। मुदा प्रवासी मैथिल अहि तरहक रोग सँ मुक्त छलाह। जखन भानु बाबू प्रवासी मैथिल सँ स्वयं मदति लेबाक विचार प्रगट केलनि त' हम आ मदन भाइ अति प्रसन्न भेल छलहुँ।

भानु बाबू बम्बइ मे कत'-कत' गेलाह, किनका-किनका सँ भेट केलनि से त' वएह जनताह। तीन दिनक अथक परिश्रमक बाद हुनकर पत्रकारिता मे रेतल बुद्धि दू गोट विशिष्ट प्रवासी मैथिलक चयन केलक। एक व्यक्ति छला महाराष्ट्र सरकार मे नियुक्त चीफ ड्रग कन्ट्रोलर। दोसर महारथी भारत सरकारक इनकम टैक्स महकमाक कमीश्नर रहथि।

बम्बइ फिल्म नगरीक अलावा दवाइ निर्माताक मक्का। देशक तमाम छोट-पैघ दवाइ कम्पनीक हेडऑफिस बम्बइए मे छल। चीफ ड्रग कन्ट्रोलक हाथ मे सभहक टीक। भानु बाबू मीटिंगक इन्तिजाम केलनि। ड्रग कन्ट्रोलक ऑफिस अँग्रेज जमानाक बनल पुरान मुदा विशाल भवन मे अवस्थित रहए। बड़ी टा हॉल, अनगिनत टेबुल, टेबुल पर छिड़िआयल फाइलक ढेरी। सभकिछु केँ देखैत, सभटा कर्मचारीक नजरिक नोक सँ बँचैत हॉलक अन्त मे बनल चीफ ड्रग कन्ट्रोलरक ऑफिस मे पहुँचलहुँ। कन्ट्रोलर साहेब छह फीटक मनुक्ख आ तहिना हुनक भारी-भरकम काया। ओ थ्री पीस सूट पहिरने आ लाल रंगक टाइ बन्हने कुर्सी पर बैसल रहथि। हुनकर आज्ञाचक्र पर पैघ सेनुरक ठोप रहनि। शुद्ध मैथिली भाषा मे ड्रग कन्ट्रोलर साहेब भानु बाबू सँ हमर एवं मदन भाइक परिचय पूछलनि। हुनकर बाजब, ताकब आ भाव भंगिमा मे अपनत्व भरल छल। नीक लागल रहए।

भानु बाबू हमरा दुनूक संक्षिप्त परिचय देलनि। तखन अत्यन्त मर्म-स्पर्शी स्वर मे 'ममता गाबए गीत' फिल्मक इतिहास एवं वितरकक वर्तमान समस्याक उल्लेख

केलनि। भानु बाबूक व्यथा कैँ धैर्यपूर्वक सुनलाक बाद ड्रग-कन्ट्रोलर साहेब कहलनि– अहाँ सभहक उद्देश्य उत्तम अछि। मिथिला-मैथिली लेल अहाँ तीनू जे परिश्रम केलहुँ अछि तकर हम प्रशंसा करैत छी। मुदा अहाँ सभ गलत स्थान पर पहुँचि गेल छी। अहाँ सभ फलाँ बाबू सँ भेट करिऔन। ओ शत-प्रतिशत मैथिल छथि। सम्प्रति ओ इन्कम टैक्सक कमीश्नरे नहि बहुत पैघ कुर्सी पर आसीन छथि। समस्त फिल्म इन्डस्ट्रीज हुनकर जेबी मे छनि। फलाँ बाबू बिहार क्षेत्रक कोनो डिस्ट्रीब्यूटर कैँ फोन करथिन, डिस्ट्रीब्यूटर दौड़ल आओत आ लगभग पूरा बनल अहाँ सभहक फिल्म कैँ ओ कीनि लेत। मिथिला मे मैथिली भाषा मे बनल सिनेमाक पैघ बाजार हेबेटा करैतक। मिथिलाक सैकड़ो सिनेमा हॉलक मात्र एक सप्ताहक कलेक्शन सँ डिस्ट्रीब्यूटर अपन लागत ऊपर क' लेत। डिस्ट्रीब्यूटर कैँ एतेक ने नफा हेतै जे जखन अहाँ सभ कैँ मात्र चालिस हजार टाका चाही ने, ओतबा टाका फिल्म डिस्ट्रीब्यूटरक लेल एक पचटकहीक बरोबरि भेलै। समय दूरि नहि करू। तुरंत फलाँ बाबू लग पहुँचि अपन व्यथाक अन्त करू, सैह विचार हम देब।

अन्हरा कैँ की चाही? जवाब भेल आँखि। नङ्गरा कैँ की चाही? जवाब भेल टाँग। हम तीनू इन्कम टैक्स ऑफिस पहुँचलहुँ। नवनिर्मित भेल इन्कम टैक्स ऑफिसक भव्य आ विशाल भवन मे प्रविष्ट भेलहुँ। भवनक सीढ़ी पर्यन्त कारपेट सँ झाँपल रहए। फलाँ बाबूक ऑफिस हुनकर ओहदाक मोताबिक सुन्दर, सजल छल। हमरा तीनूक आगाँ बर्फ सँ सर्द भेल कोकोकोलाक बोतल आबि गेल। पसेना सुखा गेल। बोतलक शीतल पेय उदर मे पहुँचि मोन कैँ पुलकित क' देलक। सत्कार मे कोनो तरहक कमी नहि रहल। भानु बाबू एकमात्र वक्ता छला। ओ पुनः 'ममता गाबए गीत' फिल्मक कष्टक बखान कर' लगलाह।

थोड़बे बात सुनलाक बाद फलाँ बाबू भानु बाबू कैँ चुप रहबाक इशारा केलथिन। ओ बटन दबा क' चपरासी कैँ बजौलनि आ अपन सेक्रेटरी कैँ बजा क' लाबक आदेश देलनि। सेक्रेटरी आयल, फलाँ बाबू हुनका कहलथिन–"भटनागर, देश के नौर्थ-इस्टर्न जोन का सभी फिल्म डिस्ट्रिव्यूटर का लिस्ट लेकर आइए।" हॉल मे शान्तिए व्याप्त रहल। भटनागर एकटा फाइल फलाँ बाबूक आगाँ राखिक' वापस चल गेल। फलाँ बाबू फाइलक पन्ना उनटाब' लगलाह। एक नाम पर आंगुर राखि क' ओ टेलीफोनक चोंगा उठौलनि। ठीक ओही समय मे अनर्थ भ' गेलै। फलाँ बाबू भानु बाबू कैँ चुप रहैक इशारा क' चुकल रहथि। मुदा काज भ' गेल तेहन अन्दाज क'क' भानु बाबू आवेश मे आबि बाजि देलनि–हमसभ अनजाने मे पहिने चीफ ड्रग कन्ट्रोलर सँ भेट करए चल गेल रही। वएह अहाँ सँ भेट करक परामर्श देलनि।

अहाँक अधीन अनेको फिल्म डिस्ट्रिब्यूटर छथि तकर जानकारी वएह देलनि।

अबिलम्ब अप्रत्याशित घटना घटल। घटना एहन घटल जे 'ममता गाबए गीत' फिल्म नसीब कैँ चकनाचूर क' देलक। भानु बाबूक मुँहसँ निकलल चीफ ड्रग कन्ट्रोलरक नाम सुनि फलाँ बाबू भड़कि उठलाह। ओ टेलिफोनक चोंगा कैँ टेबुल पर पटकि देलनि। फलाँ बाबूक प्रतिक्रिया अजीबे तरहक भेलनि। हुनक मुखाकृति अस्ट्रेलियाक नक्शा सँ एशियाक नक्शामे बदलि गेलनि। ओ उठि क' ठाढ़ भेलाह आ फुफकारैत ऑफिससँ बाहर चल गेलाह।

हम तीनू आशंका सँ भयभीत भेल पाथर बनि गेलहुँ। एक क्षणक बाद फलाँ बाबूक चपरासी आयल आ तीनू दिश तकैत कठोर स्वरमे निर्देश देलक–''साहेब का हुक्म है, आप तीनो तुरंत आफिस से बाहर निकल जाइए।''

भेल काज नाश भ' गेल। एना भेलै किएक? एकर कारण बाद मे पता लागल छल। भानु बाबू द्वारा चुनल दू गोट महान मैथिल आत्मा एक दोसराक प्रतिद्वन्द्वी रहथि। विगत बर्ख दुनू महारथी बम्बइ मे स्थापित अखिल भारतीय मैथिल महासंघक अध्यक्ष पदक प्रत्याशी भेल रहथि। दुनूक हित-अपेक्षितक कमी नहि। प्रवासी मैथिल दू भाग मे बँटि गेल। एक समूह एमहर आ दोसर समूह ओमहर। अनेक दाव-पेंच चललै। चुनावक बैसार मे मारि-पीटि भ' गेलै। बम्बइक सभटा मैथिल समाज दू फाँक मे विभाजित भ' गेल। एकक जलशा जूहूक बीच मे त' दोसरक चौपाटीक बालु मे। एक फाँकक कर्ताधर्ता चीफ ड्रग कन्ट्रोलर छलाह। दोसर फाँकक शहंशाह इनकम टैक्स कमीश्नर रहथि। दुनू महान मैथिलक माथ पर सोनाक पाग। सोनाक पाग मे कलियुगक बास। कलियुगक सिपहसलार भेल अहंकार। अहंकारक पुत्रवधू भेलीह इर्खा। तोरा सँ हम कोन बात मे छोट। तोँ बड़ पैघ त' सड़ अपन घर मे। दू फाँक भेल मैथिल समुदायक एकहिटा कार्यक्रम छलै। अपन भाषा अर्थात् मैथिली भाषा मे एक दोसरा कैँ गारि पढ़ब।

जे होउक, हमर सभहक 'ममता गाबए गीत' प्रवासी मैथिल महासंघक दू फाँक भेल चक्की मे पिसा गेल। ककरहु दोख देब अनुचित, सभटा नसीबक दोख। भानु बाबू हतोत्साहित भ' गेलाह। ओ हरदा बाजि देलनि–हमरा बुते जे संभव रहए से हम केलहुँ। हमर पन्द्रह हजार टाका फिल्म मे डुबि गेल से बुझितहुँ हम लाचार छी, विवश छी। वयस मे अहाँ दुनू छोट छी, तथापि कल जोड़ि हम क्षमा मँगतै छी। हमरा बुते आब कोनो टा काज नहि हैत।

13

हम आ मदन भाइ बम्बइ क' खार नामक स्टेशनक समीप 'एभर ग्रीन' होटल मे टिकल रही। होटल पहुँचि बिना खेने-पीने ओछौन पर पड़ि रहलहुँ। आब सही मे मोनक संताप सँ उपजल क्लेश सँ बंचैक कोनो टा मार्ग नहि छल। कोनो व्यक्तिक ओझराहटि आ चिंता ओही मनुक्खक गलत निर्णयक परिणाम होइए। मैथिली भाषाक पहिल फिल्म धर्म-आधारित हेबाक चाहैत छलै। पूजी आ श्रम कम लगितैक आ डिस्ट्रीब्यूटरक जरूरति हेबे नहि करितैक। सामाजिक फिल्म बना क' हमसभ अजीब विषम परिस्थिति मे फँसि गेल रही।

फिल्मक बाँकी खर्च मदन भाइ क' सकैत छलाह। मुदा समूचा फिल्म बनलाक बादो समस्या तँ रहिए जइतैक। बिना डिस्ट्रीब्यूटरक मदतिए फिल्म सिनेमा हॉल तक पहुँचिए ने सकैत छलै। आब डिस्ट्रीब्यूटर तक पहुँचैक इल्म आ कि बुद्धि ने हमरा छल आ ने मदन भाइ कँ छलनि।

अगिला दू दिन तक माथक यंत्र मे लटकल ताला मे विभिन्न तरहक कुंजी पैसा-पैसा क' ओकरा अँइठैत रहलहुँ तखन जा क' एक बातक ध्यान सामने आयल। बम्बइओ सँ अधिक प्रवासी मैथिल कलकत्ता मे रहैत छथि। ओहि मे सँ कइएक टा रथी एवं महारथी हेबेटा करताह। हमरा सभ कँ डिस्ट्रीब्यूटर अर्थात् वितरक ताकि देथि आ नइ त' कोनो मैथिल संस्था हमर सभहक फिल्म कँ एडौप्ट क' कलकत्तेक कोनो सिनेमा हॉल मे प्रदर्शित करथि तकर इन्तिजाम क' देथि। एकटा बात आरो सोचक परिधि मे आयल। थोड़बो तैयार फिल्म संग मे नेने जाइ जकरा कोनो सिनेमा हॉल मे प्रदर्शित करबा क' मैथिल बंधु कँ विश्वास करबा दिअनि जे हमसभ फूसि नहि, सही मे फिल्म बनेलहुँए, एहि मे नफा हेतै आ कि नोकशान तकरा बिसरने छलहुँ। मैथिली भाषाक फिल्म कँ मैथिल दर्शक कहुना भेटि जाइक मात्र ततबेटा लेल उद्योग करैत रही।

हिन्दी मे कहबी छै 'मरता क्या नहीं करता'। सैह स्थिति मदन भाइक छलनि।

बम्बइक प्रवासी मैथिलक आचरण ओ देखि लेने रहथि। कलकत्ताक प्रवासी मैथिल स्वभावक आकलन कर' मे हुनका कोनो भांगठ नहि छलनि। तथापि ओ हमर कलकत्ता जेबाक सुझाव कैँ अनुमोदन केलनि। हम दुनू बम्बइ लैबमे एडिटर लग पहुँचलहुँ। ताबत तक लगभग पाँच हजार फीटक एडिटिंग भ' चुकल रहै। अहि पाँच रील मे सिनेमाक आनन्द मैथिल दर्शक उठा सकैत छलाह। एक तरहक बानगी तैयार भ' गेल रहए।

तैयार पाँच रीलक एक्सट्रा कॉपी बनबा हम आ मदन भाइ भाया नागपुर कलकत्ता लेल बिदा भेलहुँ। कलकत्ता पहुँचि सियालदह स्टेशन लग गीतांजली नामक होटल मे लंगर खसेलहुँ। भरि दिन सुस्ता क' सूर्यास्तक समय 42, चौरंगी रोड पहुँलहुँ। चारि मंजिला विशाल भवन दरभंगा महाराजक सम्पत्ति रहनि। ओही भवनक उपरका मंजिल पर यदुवीर नारायण चौधरी उर्फ जे.एन. चौधरीक आवास छल। भवनक पहिल मंजिल पर दरभंगा एभियेशनक मैनेजर जगदीश बाबूक ऑफिस एवं आरामगृह रहनि।

यदुवीर बाबू एवं हमर परपितामहक सहोदर भ्राता-शाखाक। तेँ यदुवीर बाबू हमर जेठ पितिऔत भ्राता। हमर कलकत्ता प्रवासमे ओ हमर गार्जियन छला। हमर महिनाक खर्च एवं चिट्ठी-पत्री हुनके केयर आफ मे अबैत रहए। सम्प्रति हमर भ्राता बिहार प्रांत मे प्रकाशित 'इन्डियन नेशन' एवं 'आर्यावर्त' नामक समाचार पत्रक कलकत्ता मे प्रतिनिधि छला। भानु बाबूक समकक्षे, मुदा हुनका सँ भिन्न हमर भ्राता ने कवि छलाह आ ने कलाकार। ओ मूर्त्तिहीन मुदा कर्त्तव्यनिष्ठ बनल समाचार पत्र लेल विज्ञापन संग्रहीत करैत रहथि। समाचार पत्रक रक्त संचालन मात्र विज्ञापने सँ होइए। हमर भ्राता अपन काज मे सफल रहथि आ हुनकर समाचार पत्रक जगतमे बहुत आदर होइत छलनि।

हमरा देखिते हमर पितिऔत पित्ते आन्हर भ' गेलाह। चिकरैत कहलनि—केदार भैया, तोरा सनक मूर्ख अपन खानदान मे ने भेल रहए आ ने हैत। अर्थशास्त्र मे एम.ए. केलह, नीक रिजल्टक कारणे तोरा नीक नोकरी भेटि गेल'। मुदा नोकरी कैँ त्यागि तोँ फिल्म बनब' बम्बइ चल गेलह। वाह रे वाह! हउ फिल्मी संसार कोन तरहक अछि से जनैत छह, सफल कलाकार, सफल संगीतकार आ कि सफल फिल्म गनल-चुनल होइए। बाँकी फिल्मी जगत भेल अबारा, गुंडा आ पिआकक जमघट।

यदुवीर बाबूक फझति मे हुनक हमरा प्रति स्नेह भरल छलनि। हम तेँ सुनैत रहलहुँ आ ओ फझति करैत रहलाह—मनुक्खक कोखि मे जन्म लेलए त' बुद्धिक खर्च क'र'। अपन उन्नति कर' आ अपन परिवारक उन्नति कर'। तकर बादो जँ

ऊर्जा बँचि जाह त' अपन गामक उन्नति कर'। तँ त' समूचा मिथिलेक उन्नति कर' लेल बीड़ा उठा लेलहए।

एखन तक हमरा फझति करैत आक्रोश मे हमर भ्राता मदन भाइ कैं देखने नहि रहथिन। एकाएक हुनक ध्यान मदन भाइ दिस गेलनि। ओ चुप भ' किछु क्षण तक मदन भाइ कैं निहारैत रहला तखन पुछलनि–

–ई के थिकाह?

–महंथ मदन मोहन दास।

–महंथ?

–हँ यौ! राजनगर लग मिर्जापुर स्थानक ई मंहथ छथि।

हमर पितिऔत एना मुँह बौने मदन भाइ दिस ताकय लगलाह जेना ओ चिड़ियाखाना मे शुतुरमुर्ग कैं देखि रहल होथि। हुनकर दृष्टि मे महंथ माने एहन मनुक्ख जकर तोंद निकलल होइक, साबेक जउड़ मे बाँटल जनउ पहिरने होइ, डाँड़ मे लंगोट आ तकरा ऊपर बिस्टी होइ आ शरीरक वजन कम सँ कम अढ़ाइ-तीन मनक होइ। मदन भाइ पेन्ट-शर्ट पहिरने एकटा स्मार्ट युवक रहथि। हमरा लेल पितिऔतक उलझन समाप्त करब जरूरी भ' गेल। हम कहलियनि–मिर्जापुर महंथाना कैं एखनहुँ हजार बीघा जमीन छैक। लगभग तीन मन चाउर, तकर दालि-तीमन नित्य रान्हल जाइत छैक जे संन्यासी, अभ्यागत, गरीब-दरिद्र आ भूखल जीव खाइए। मिर्जापुर महंथक छोट भ्राता भेलाह सीतामढ़ी आ चोरौतक महंथ।

पितिऔतक भाव-भंगिमा एकदमे सँ बदलि गेलनि। ओ आदर सँ हमरा आ मदन भाइ कैं सोफा पर बैसोलनि। अपन कनिआँ अर्थात् पोखरौनी बाली भौजी कैं चिकरैत आदेश देलथिन–अति विशिष्ट पाहुन अयला अछि। चाह-जलखैक प्रबंध करू।

आब हमर पितिऔत हमरा मे नहि, मदन भाइ मे अधिक दिलचस्पी ल' रहल छला। चाह-जलखै आदि भेलै। ताहि बीच मदन भाइ अत्यन्त संयत वाणी मे विस्तार सँ 'ममता गाबए गीत' नामक फिल्म बनेबाक उद्देश्य एवं आवश्यकता पर प्रकाश देलथिन। कलकत्ता अयबाक कारण सेहो बतेलखिन। हमर भ्राता मदन भाइक कथन सँ कतेक प्रभावित भेलाह तकर बोध तखने भ' गेल रहए। ओ कहलथिन–अहि तरहक ज्वर-बोखार सँ हम बाँचल छी। मुदा हम एक व्यक्ति कैं चिन्हैत छियनि जे मिथिला-मैथिली नामक रोग सँ ग्रसित छथि। ओ कहियो काल चारि पन्नाक मैथिली भाषाक पत्रिका छपबा क' बेचैत छथि आ मैथिल कैं जमा क' सभा सेहो करैत छथि। अहाँ दुनू अपन होटल जाउ आ राति भरि विश्राम करू। काल्हि सकाले ओ व्यक्ति

होटल मे अहाँ दुनूक सेवा मे हाजिर भ' जेताह आ आदेशानुसार सभ तरहक इन्तिजाम क' देताह।

दोसर दिन भिनसरे जे व्यक्ति हमरा सभहक सहायता कर' लेल होटल मे अयलाह हुनकर नाम छलनि तृप्ति नारायण उपाध्याय उर्फ तिरपित बाबू। धोती-कुर्ता, सेनुरक ठोप आ गरदनि मे करिया बैद्यनत्था बद्धी। अछिंजल सँ धोअल हुनकर मुखमंडल सँ सज्जनताक आभा प्रस्फुटित भ' रहल छल। लोहना स्टेशन लग कोनो गामक निवासी तिरपित बाबू जीविका उपार्जन लेल उषा फैन फैक्टरी मे कार्यरत रहथि। हुनकर जीवनक एकमात्र उद्देश्य रहनि मिथिला-मैथिलीक कोनो तरहक सेवाक काज होइ, अपन सर्वस्व न्यौछावर क' ओहि पुनीत काजमे योगदान करी।

मदन भाइ तिरपित बाबू कैँ 'ममता गाबए गीत' फिल्मक वर्तमान समस्या जे वितरणक छल ताहि द' किछु कह चाहलनि, मुदा तिरपित बाबू तकर अवसर नहि देलथिन आ कहलथिन—श्रीमान्, यदुवीर बाबू हमरा सभ बात कहि चुकला अछि। मैथिली भाषा मे फिल्म बनायब साधारण बात नहि भेलै। ई कालजयी कृति भेलै। हम एकर भूरि-भूरि प्रशंसा करैत छी। अपने दुनू व्यक्ति प्रणम्य थिकौं। सभ तरहक सहयोग क' फिल्मक सभटा समस्या कैँ जड़ि सँ समाप्त क' देब तकर हम वचन दैत छी।

तिरपित बाबू कलकत्ताक गिरीश पार्क मे प्रवासी मैथिलक विशाल सभाक आयोजन केलनि। यद्यपि ओतुक्का मैथिल समाज कइएक खंड मे खंडित रहथि। मुदा मैथिली भाषा मे बनल सिनेमाक आकर्षण एतेक ने जबर्दस्त रहै जे सभटा मैथिल अपन-अपन राग-द्वेष त्यागि सभा मे उपस्थित भ' गेलाह। सभामे कइएक हजार मैथिल जमा भ' सभा-स्थल कैँ ठसमठस भरि देलनि।

पार्कक एक भाग मे तीन-चारि गोट लम्बा-लम्बी चौकी कैँ जोड़ि आ तकरा उज्जर जाजिम सँ झाँपि मंच बनाओल गेल रहए। मंचक कतबहि मे वक्ताक बाजक लेल माइकक इन्तिजाम छलै। सभाक सभापतिक चयन पहिने सँ निश्चित रहए। मधुबनी जिलाक आदरणीय श्री जगदीश बाबू जे सम्प्रति दरभंगा एभियेशनक मैनेजर रहथि, मंच पर आबि अध्यक्षक स्थान ग्रहण केलनि। अनचिन्हारे एक दर्जन प्रबुद्ध मैथिल सेहो मंच पर विराजमान भेला। अध्यक्षक अगल-बगल मे हमरा आ मदन भाइ कैँ बैसाओल गेल। अध्यक्ष महोदय दपदप उज्जर धोती-कुर्ता पहिरने रहथि आ हुनक ठोर पर मुस्की पसरल रहनि। अध्यक्ष महोदयक वस्त्रसँ विसर्जित होम' बला इभनिंग इन पेरिस नामक इत्रक सुगन्धि मंच परहक प्रत्येक बुद्धिजीवीक मोन कैँ मोहि लेने छल।

सभाक कार्यक्रम आरम्भ भेल। पहिल वक्ता तिरपिते बाबू बनलाह। तिरपित बाबू भाषण देबामे पटु रहथि। ओ हमर आ मदन भाइक परिचय एतेक विस्तार सँ देलनि जे परिचयक बहुतो अंश हमरो दुनू कँ नहि बुझल रहए। आब तिरपति बाबू मैथिली भाषा मे फिल्म बनेबाक अनिवार्यता एवं उद्देश्य पर प्रकाश देब' लगलाह। मैथिली भाषा कँ अष्टम अनुसूची मे स्थान नहि भेटल रहै से अन्याय भेल छलै ने! ओही अन्यायक परिवादस्वरूप मैथिली भाषा मे फिल्म बनलए। आब देख रौ सरकरबा! आँखि खोलि क' देख जे मैथिली कतेक समृद्ध भाषा अछि। लाज कर आ मैथिली भाषा कँ अष्टम अनुसूची मे स्थान द' अपन पाप कँ धो ले।

केन्द्र सरकार कँ कुवाच्य कहैत-कहैत तिरपित बाबू अपन भाषणक विषय बदलि लेलनि। फिल्म निर्माण कर' मे हमरा दुनू निर्माता कतेक प्रताड़ना सहने रही आ खेत-खरिहान संगे आंगन-दलान तक बिका गेल छल तकर वर्णन करैत-करैत तिरपति बाबूक गला अवरुद्ध भ' गेलनि, आँखि मे नोर भरि गेलनि आ अन्त मे जखन ओ दुख कँ सहि नहि सकलाह त' सभाक समक्षे हिचुकि-हिचुकि क' कानय लगलाह। सभा मे उपस्थित हजारो मैथिल श्रोता व्यथित भ' गेलाह आ आँखिक नोर पोछैत एकाग्रचित भ' तिरपित बाबू कँ देख' लगलाह। तिरपित बाबू अपन वेदना कँ निग्रह केलनि आ भाषणक विषय कँ दक्षता संग बदलि अपन सम्बोधन चालुए रखलनि—एक अत्यन्त हर्षक बात आ जे लोकहित मे सेहो अछि तकरा सुनल जाओ। भगवतीक असीम अनुकम्पा सँ आगामी रवि दिन प्रातः आठ बजे विवेकानंद सड़क पर अवस्थित गणेश टाकिज मे मैथिली भाषाक पहिल सिनेमा 'ममता गाबए गीत' देखाओल जायत। हम एखन निर्माताक दिस सँ फिल्म देखै लेल उपस्थित समस्त मैथिल बंधु कँ निमंत्रण दैत छी।

तिरपित बाबूक विलक्षण भाषण समाप्त भेल। मंच परहक एक-एक बुद्धिजीवीक भाषण शुरू भेल छल। श्रोता लोकनि भाषण सुनब छोड़ि अपना मे गप्प-सप्प कर' लगलाह। भनभनाहटिक ध्वनि चारूकात पसरि गेल, अहि बीच लोकक आगमन होइत रहल। मंचक पाछाँ थोड़ेक हटि क' पार्कक सीमा लग करोटनक गाछ पतियानी मे रहैक। मंच आ करोटन गाछक बीचक स्थान सेहो लोक सँ ठसमठस भरि गेल रहैक।

तिरपित बाबू अपन करामात देखौलनि। माइक लग पहुँचि बुद्धिजीवी कँ कान मे जोर सँ कहलनि—बहुत बजलहुँ, आब बाजब बन्द करू।

फेर तिरपित बाबू मदन भाइ सँ दू शब्द बाजक लेल आग्रह केलनि। मदन भाइ मंचक पाछाँ अपन जूता पहिरलनि आ टपैत-टपैत माइक लग पहुँचलाह। श्रोता बृन्द

शान्त भ' गेलाह आ सभहक नजरि मदन भाइ दिस घुमि गेलनि। मदन भाइ बाजब शुरू केलनि–तिरपित बाबू जे किछु कहलनि से सत्य अछि। तइयो ओहि मे थोड़े सुधार करब आवश्यक भ' गेलए। 'ममता गाबए गीत' यद्यपि पूरा बनि चुकलए मुदा एखनहुँ ओहि मे थोड़ेक काज बाँकी छैक। बनल फिल्मक पाँच रील ल' क' हम एतय एलहुँ अछि जकरा गणेश टॉकिज मे देखाओल जायत। निःशुल्क फिल्म देखै लेल अहाँ सभ कैँ निमंत्रित करैत हमरा अपार हर्ष भ' रहलए।

थपड़ी बाजब शुरू भेल आ बड़ी काल धरि थपड़ी बजिते रहल। बड़ कठिन सँ तिरपित बाबू हर्षित सभा कैँ शान्त केलनि। तखन मदन भाइ फेर सँ बाजब शुरू केलनि–फिल्म बनेनाइ कष्टप्रद छैहे कारण अइ मे श्रम आ खर्च बहुत लगैत छैक। जतेक श्रम आ खर्च लगलै से लगा क' हम सभ फिल्म बहुत पूरा केलहुँ। आब समस्या अछि एकर वितरणक। वितरक ताक' लेल...।

बीचहि मे मंचक पाछाँ दिस सँ कियो गर्द केलक–पकड़लहुँ सार कैँ। ई सार आब जायत कत?

एक क्षण लेल भीड़ किंकर्तव्यविमूढ़ बनि गेल। मदन भाइ सेहो चुप भ' गेलाह। संचमंच भेल भीड़ मे सँ एक व्यक्ति चिचिआयल–की भेलैए? ककरा तौँ पकड़लएँ?

चारूकात सँ साकांक्ष भेल भीड़ मे एकाएक कोलाहल होब' लागल। ताही बीच मंचक पाछाँ सँ एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक नरेटी पकड़ने मंच पर चढ़ल। ओहि व्यक्तिक दोसर हाथ मे पालिस सँ चमचमाइत एक जोड़ कारी रंगक हाफ-शू रहैक। ओ व्यक्ति गरजैत बाजल–सभ कियो देख लियौ। ई छी जूता चोर। ई अध्यक्ष महोदयक जूता चोरबैक फिराक मे रहए। मुदा हम आँखि पथने रही। ई जखने जूता दिस हाथ बढ़ौलक, हम अहि सार कैँ गसिया क' पकड़ि लेलहुँ।

तकर बाद सभा मे हड़कम्प मचि गेल। 'मार सार कैँ, बचि कैँ ने जाउ' ध्वनि प्रसारित होब' लागल। थोड़ेक छौंड़ा लपकि क' मंच पर चढ़ि गेल। तखन शुरू भेल मुष्टिका प्रहार। धक्कम-धुक्का, पिच्चम-पिच्चा, ठेलमठेल्ला। कियो एमहर खसल कियो ओमहर ओंघरायल।

मंच पर जूता लेने ठाढ़ मनुक्खक हाथ सँ अध्यक्षजी जूता छिनलनि। जूता कैँ पयर मे पहिरैत ओ हमरा कहलनि–बाज एलहुँ एहन सभा सँ। हम जा रहल छी। हम शपथ खाइत छी जे फेर कहिओ कोनो सभाक अध्यक्ष नहि बनब।

मंच पर आ मंचक आगाँ ठेलमठेला होइते रहल। भीड़ जूता चोर कैँ तिरने-तिरने एक कात ल' गेल। भीड़ मे सँ लोक उचकि-उचकि क' जूता चोर पर प्रहार क' रहल छल। अवसरक लाभ उठबै मे बुद्धिजीबिओ पाछाँ नहि रहलाह। तखने एकटा प्रबुद्ध

मैथिल सभ कैँ चेतबैत हाक देलनि–एतेक नहि मारहक जे जूता चोर मरि जाइ। जँ मरि जतै त' दोसरे आफद मे फँसि जेबह।

अगिला पाँच मिनट तक नाटक होइत रहल। जूता चोरक संग सभटा पब्लिक पार्क मे जहिं-तहिं छिड़िया गेल। सभास्थल जन शून्य भ' गेल। मात्र हम आ मदन भाइ बैसल रहि गेलहुँ। हमरा दुनूक संग 'ममता गाबए गीत' फिल्मक आर्थिक एवं वितरण समस्या सेहो मुँह बौने ठाढ़े रहि गेल छल।

एक-दू मिनटक भीतरे हम तिरपति बाबू कैँ अबैत देखलियनि। हुनका संग मे जुल्फीबला एकटा छौंड़ा छल। दुनू मे वाक्‌युद्ध भ' रहल छलै। मंचक लग पहुँचि तिरपित बाबू अपन संग मे आयल छौंड़ा सँ कहलनि–''सभा अधहे पर सँ उसर गया। तब तौँही कहो तुम्हारा माइक का पूरा पेमेन्ट क्यों मिलेगा?''

छौंड़ा तमतमायल छल, बाजल–''तुम्हारा सभा का क्या हुआ हमरा जानने का जरूरत नहीं है। हम कम्पनी का चाकर है। पूरा पेमेन्ट लेकर जाएगा नहीं देगा तो तुम्हारा छातीका हड्डी तोड़ देगा।''

तिरपित बाबू मदन भाइ मे सटैत चिचिएलाह–देखिऔ अहि सारक खचरपाना। एकरा सँ की हम कमजोर छी। लड़ि क' देखि लिअ। ई हमर हाड़-पाँजर तोड़ैए आ कि हम एकर गरदनि मचोड़ै छियै, कहलकै किनइँ, हमरे संग बलढ़ूसि?

मदन भाइ कुस्ती लड़ै लेल आमादा तिरपित बाबू कैँ शान्त केलनि। फेर माईक मैन सँ पुछि ओकर पूरा पेमेन्ट बीस टका द' ओकरा बिदा केलनि। तिरपति बाबूक पूरा टेम्पर शान्त नहि भेल छलनि। ओ फाटल कुर्ता कैँ उठा अपन मुँह पोछलनि आ कलपैत कहलनि–जे खर्च केलहुँ से केलहुँ। आगाँ जँ अहाँ एकोटा पाइ खर्च करब त' हमर मूइल मुँह देखब।

हम तिरपित बाबू कैँ मंच दिस देखबैत पुछलियनि–मंचक लेल चौकी आ जाजिम कत' सँ आयल अछि?

–हमर संस्था भिखमंगाक संस्था नहि अछि। जाजिम हमरे संस्थाक सम्पत्ति अछि। सभाक आयोजन सदिकाल होइते रहैत छै ने! तैँ संस्था थोड़ेक सामग्री कीनि क' रखने अछि। आब बँचल चौकी? लगे मे अपन संस्थाक किछु कर्मठ सदस्यक बाड़ी छनि। चौकी हुनके सभहक थिकनि। चौकी सभा-स्थल मे आनै लेल आ आपस करै लेल ठेलाक भाड़ा दिअ पड़ैत छैक। ठेलाक भाड़ा दस टाका से हम द' देबै।

एतबा बजैत-बजैत तिरपति बाबू अपन कुर्ताक जेबी मे हाथ घुसिओलनि। हुनकर हाथ फाटल जेबी सँ निकलि हुनक ठेहुन पर पहुँचि गेलनि। तिरपित बाबू मुँह बाबि देलनि–देखियौ ने, कोनो सार हमरो पर हाथ साफ क' लेलकए।

मदन भाइ एकटा दसटकही निकालि तिरपित बाबू कैँ देलखिन आ ओतय सँ बिदा होबा लेल हमरा इशारा केलनि। मुदा तिरपित बाबूक आतिथ्य समाप्त नहि भेल रहनि, बजलाह—अहाँ दुनू कलकत्ताक मैथिल समाजक अतिथि थिकौं। अतिथि देवो भव। बिन चाह पिऔने कोना जाए देब? एतय सँ मात्र पाव भरि जमीन आगाँ कॅटन स्ट्रीट अछि। ओतय भांग आ चाह एकेठाम बिकाइए। चिंता नहि कएल जाउ, चाहबला हमर पुरान परिचित अछि। ओकरा लग हमर उधारी चलैए।

भोजनोपरान्त हम आ मदन भाइ होटलक रूम मे अपन-अपन बेड पर पड़ल विश्राम क' रहल छलहुँ। तखन दिनक दू बाजल रहै। भिनसरेसँ मदन भाइ गंभीर बनल छला, एकोटा आखर बाजल नहि रहथि। एकाएक ओ हमरा सँ पुछलनि—संसारक प्रत्येक जीव आ निर्जीवक अलग-अलग स्वभाव होइत छैक। जेना आगिक स्वभाव भेल जरायब, सर्पक विष उगलब, बिच्छूक डंक मारब। तिरपित बाबूक स्वभावक की नामकरण हेतनि?

हम सुच्चा मैथिलक परिवेश सँ अवतरित भेल रही। हमरा तिरपित बाबूक स्वभाव मे कोनो तरहक अनियमितता देख' मे नहि आबि रहल छल। मुदा मदन भाइ मुज्जफरपुरक भूमिहार आ तइ पर सँ महंथ। एक तरहें ओ ठेलुआ मैथिल रहथि। मदन भाइ कैँ की जवाब दियनि ताहि ओझराहटि मे रहबे करी, ठीक तखने तिरपित बाबूक पदार्पण भेल रहए। तिरपित बाबू हाथ जोड़ि प्रणाम केलनि आ कहलनि—आब' मे बिलम्ब भेल ताहि लेल क्षमाप्रार्थी छी।

आश्चर्य भेल रहए। तिरपित बाबूक एबाक कोनो टा सूचना नहि छल। तखन ओ क्षमा किएक मांगि रहलाए। क्षमा कर' मे जखन एको टाकाक खर्च नहि रहै तखन क्षमा करै मे हर्जे की?

तिरपित बाबू पोन रोपैत बाजब शुरू केलनि—श्रीमान्, दू गोट परम आवश्यक बात कह' लेल एखन हम एलहुँए। पहिल ई जे काल्हि सभा मे जे जूता चोर मारि खेलनि से सत्य मे जूता चोर नहि रहथि। सुसारी गामक सूरज बाबूक जेठ सारक जेठ बालक जीतू चाकरीक खोज मे कलकत्ता एला अछि। आब कलकत्ता मे नव एनिहार कैँ कलकतिया ज्वर पछारिए दैत छनि। ज्वर भेला पर डाक्टर कोनो टा दवाइ नहि देत, केवल डाभक पानि पिअ कहत। जीतू डाभ पिबैत रहलाह आ काली माताक कृपा सँ नीके भेलाह। एमहर मैथिली फिल्मक हल्ला सभठाम पसरि गेल रहै। जीतू कैँ कमजोरी छलनि तैयो फिल्मक लोभ मे सभा मे पहुँचि गेलाह। ओ मंचक पाछाँ जतय अध्यक्षक जूता रहनि ओतहि बैसल रहथि आ कखनहु काल औंघा क' आगू झुकि जाइत छला। अही धोखा मे ओ जूता चोर बनि गेल रहथि। ओना अपन

सभहक सभा मे जूता चोरि एकटा विकट समस्या त' अछिए, मुदा जीतू नाहक मारि खेलनि तकरा लेल हमरा अफसोच अछि। मुदा भवतबक आगाँ त' सभटा प्राणी नतमस्तक अछि।

तिरपित बाबू कनेक रुकला, अफसोचक कारणे जोर-जोर सँ स्वास घिचलनि आ छोड़लनि, तखन बाजब शुरू केलनि–आब दोसर आवश्यक बात सुनल जाए। गणेश टॉकिजक मालिक अछि मारवाड़ी। मारवाड़ी भेल टाकाक यार। ओकरा हम कतबो ने मैथिली भाषाक फिल्मक महत्त्वक जानकारी देल मुदा ओ टस सँ मस नहि भेल। खैर, बहुत घमर्थन केलाक बाद साठि रुपैया पर राजी भेलए। काल्हि माने रवि दिन सकाले आठ बजे मैथिली फिल्मक प्रदर्शन गणेश टॉकिज मे हैत तकरा श्रीमान्, आब फाइनले बुझल जाउ। प्रोजेक्टर चलबै बला हमर पुरान यार मे सँ अछि। ओकरा हम दू बंडिल बीड़ी पर पोलहा लेबे टा करबैक।

तिरपति बाबू साठि रुपैया आ दू बंडिल बीड़ीक मूल्य पाबि प्रसन्नचित भ' प्रस्थान केलनि। तिरपित बाबूक गेलाक बाद मदन भाइ भभा क' हँसि देलनि। बहुत दिनक बाद मदन भाइक मुँह सँ हँसीक फुलझड़ी बहरायल रहए। नीक लागल। मोन कँ सुकुन भेटलै। हँसिते मदन भाइ कहलनि–मैथिली भाषा मे जँ तिरपित बाबू कँ चरित्र-नायक बना क' सिनेमा बनाओल जाय त' केहन फिल्म बनतै? ओ फिल्म अबस्से बाक्स ऑफिस मे हिट फिल्म हैतैक।

टैक्सी सँ गणेश टॉकिज पहुँचलहुँ। टैक्सीक डिक्की खोलि आलम्युनियमक पेटी जाहि मे फिल्मक पाँच रील रहै, निकालक उपक्रम करैत रही तखने तिरपित बाबू झटकल अयलाह। हुनका संग मे सिनेमा हॉलक एकटा स्टाफ छलनि। दुनू व्यक्ति पेटी कँ दुनू कात सँ पकड़लनि आ भीतर दिस ल' गेलाह। गणेश टॉकिजक हॉलक बाहरी बरमदा मे दाखिल भेलहुँ। लोकक भीड़ देखि असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। सिनेमा हॉल मे दर्शकक बैसक जगह मात्र तीन सय लोकक रहै। मुदा ओतय त' हजार सँ उपरे दर्शक पहुँचि चुकल रहथि। दर्शक मे पुरुष सँ अधिक महिला अपन-अपन कन्टिरबा, कन्टरबीक डेन पकड़ने एमहर-ओमहर घुमि-फिरि रहल छलीह। कोनो-कोनो महिलाक कोरा मे केथड़ी मे लेपटाओल जन्मौटी चिलका सेहो छलनि। कनाफूसी, गप्प-सप्प, एक दोसरा कँ सोर पाड़ब, अपन लोक कँ ताकै मे अहुछिया काटब, सभ मिला क' गणेश टॉकिज मे कनफोड़ा हल्ला भ' रहल छलै।

धड़फड़ाइत तिरपित बाबू सीढ़ी सँ नीचाँ उतरला आ हमर सभहक लगीच आबि कहलनि–श्रीमान् अपने दुनू अति विशिष्ट पाहुन थिकौं। ऑफिस मे आराम सँ बैसियौ। हम चाह जलपानक इन्तिजाम कयने छी।

ऑफिसक मुहथरि लग सिनेमा हॉलक मैनेजर ठाढ़ छल, बेकल भेल कहलक– ''उरी बाबा, इस जगह इतना माफिक भीड़ कभी पहले नहीं देखा। इसको कन्ट्रोल करने वास्ते पुलिस को बुलाना पड़ेगा।''

मैनेजरक दृष्टि तिरपित बाबू दिस गेलै। ओ खोंखिआइत बाजल–''अरे साला, तुम किधर चला गया था? पब्लिक को कतार मे खड़ा करो, नहीं तो हॉल मे ताला मार देगा।''

तिरपित बाबू हमरा सभ कैँ बिसरि पब्लिक कैँ परतारै' मे बाझि गेलाह– हँ, इहो अपने लोक छथि। हमरा पर परतीत नइ होइए। अगिला रवि दिन फेर फिल्म देखाओल जायत। एखन पतिआनी बना क' ठाढ़ होइ जाउ। हॉलक गेट खुजै बला अछि।

सभटा दर्शक सिनेमा हॉल मे प्रविष्ट क' गेल। सीट पर, सीटक नीचाँ, सीटक ऊपर जहँपटार सभठाम लोक पसरि गेल। प्रोजेक्टर चलबैबला बंगाली मानुस। ओकरा मैथिली भाषाक ज्ञान नहि। ओ पहिल रीलक बाद पाँचम, तखन तेसर, चारिम आ अन्त मे दोसर रीलक सिनेमा देखा क' प्रोजेक्टर बन्द क' देलक। के की देखलनि, के की बुझलनि तकर विवेचना करब सही नहि होयत। फिल्मक एकटा गीत 'भरि नगरी मे सोर, बौआ मामी तोहर गोर' सभ कैँ भाव-विभोर क' देलक। भाषाक लेल ममत्व, अनुराग आ आकर्षण अहि बात कैँ इंगित करैत छल जे जँ सही ढंग सँ मिथिलांचलक सिनेमा हॉल मे फिल्म कैँ देखाओल जेतै त' दर्शकक कमी नहि रहैत। भनभनी आवाज मे गीतक पाँती गबैत आनन्दे मग्न सभटा लोक गमन केलनि।

हम आ मदन भाइ सिनेमा हॉलक बाहर बरामदाक एक कात बनल टी-स्टाल लग कुर्सी पर बैसल-बैसल सभटा दृश्य देखि रहल छलहुँ। तखने तिरपित बाबू कैँ सेहो देखलियनि। केथरी मे लेपटाओल चिलका कैँ कोरा मे उठौने तिरपित बाबू आगाँ-आगाँ आ हुनकर कनिआँ बंगालीन जकाँ उनटा आँचर ओढ़ने पाछाँ-पाछाँ बाहर चल गेलीह। तिरपित बाबू 'घुमिओ क' हमरा सभहक दिस नहि तकलनि। भेल मुश्किल। कलकत्ता मे हमर सभहक गाइड तिरपित बाबू अन्तर्धान भ' गेलाह। आब अगिला कार्यक्रमक सूत्रधार के बनताह?

कनिकबे कालक बाद बंगाली मैनेजरक पदार्पण भेल। ओ एकटा पुर्जी मदन भाइक हाथ मे पकड़ा देलक। फिल्म प्रोजेक्शन साठ रुपैया, हॉलक सफाइ दस रुपैया। कुल जोड़ सत्तर रुपैया।

अरे, ई टाका त' तिरपित बाबू ल' गेल रहथि। हम बाजक लेल लुसफुसेलहुँ।

मुदा मदन भाइ हमरा रोकि देलनि। ओ जेबी सँ सत्तरि रुपैया निकालि मैनेजरक हाथ मे राखि देलनि। तखने फिल्मक रील भरल पेटी लेने प्रोजेक्टरक चालक आयल। पेटी राखि दाँत खिसोरि क' बाजल—''आप मालिक, हम चाकर। बीड़ी वास्ते जो देगा हम खुशी-खुशी ले लेगा।''

मदन भाइ ओकरो एक पंचटकही द' ओकर खुशी मे भागीदार बनलाह। तकरा बाद हमरा आ मदन भाइ कँ किछु फुरेबे ने करए जे हम सभ आगाँ की करी। थोड़े काल प्रतीक्षा कयल फेर आपस होटल चल अयलहुँ।

14

—आब तिरपित घुमि क’ अहाँ सभहक लग मे नहि आओत।

हम आ मदन भाइ आँखि मुनने चुपचाप अपन-अपन बेड पर पड़ल रही। होटल मे हमर सभहक रूमक दरवज्जा लग पचवन-साठि बर्खक एकटा मैथिल सज्जन ठाढ़ रहथि। धोती-कुर्ता पहिरने ओहि व्यक्तिक हाथ मे छाता रहनि मुदा पयर मे जूता नहि छलनि। ओ रूमक भीतर अयलाह आ कुर्सी पर बैसैत कहलनि—संयोगवश चौरंगी रोड स्थित यदुवीर बाबूक ऑफिस मे कोनो काजे गेल रही। ओतहि अहाँ दुनूक आ ममता गाबए गीत फिल्मक चर्चा सुनल। अहाँ लोकनि किएक कलकत्ता एलहुँए तकर यदुवीर बाबू नीक जकाँ जानकारी देलनि। युदवीरे बाबू कहलनि जे अहाँ सभहक मदति लेल ओ तिरपित केँ पठौलखिन अछि। तिरपितक नाम सुनिते माथा ठनकल। साकांक्ष भेलहुँ। अता-पता लगबैत गणेश टॉकिज मे जखन पहुँचल रही ताबत तक ओतुक्का तमाशा उसरि गेल रहै। गणेश टॉकिज सँ बहराइते तिरपित केँ देखल। ओ झटकल पयरे प्रायः अहीं सभ सँ भेट करए लेल आबि रहल छल। हमरा देखिते ओ कन्नी काटि लेलक आ लगक गली मे अन्तर्धान भ’ गेल।

हम आ मदन भाइ बेड पर बैसि गेल रही। आगुन्तक सँ हम प्रश्न कएल—तिरपित बाबूक प्रतिएँ अहाँक बचन अत्यधिक कटु किएक अछि? ओ कहलनि—तकर कारण जे हम तिरपित केँ नीक जकाँ चिन्हैत छियै। तिरपित हमरे शिष्य छल। हमर संस्थाक ओ कर्मठ सदस्य रहए। हमहीं ओकरा उषा फैन फैक्टरी मे रखबा देने रहियैक। मुदा दुष्ट प्रवृत्ति एवं निम्न आचरण रखनिहार तिरपित हमरा सँ अलग भ’ अपन मैथिलीक अलग संस्था बना लेलकए। उषा फैन फैक्टरीक मालिक थोड़बे दिनक बाद ओकरा नोकरी सँ निकालि देलकै। आब सदिकाल ओ जेबी मे चंदाबही रखैत अछि। ठक कहूँ उपास पड़लए! कलकत्ता मे मैथिल समुदायक बड़ पैघ जनसंख्या छैक। कखनहुँ सभा आयोजित क’ कँ, कखनहुँ अपन चारि पन्नाक पत्रिका मे कोनो मैथिलक फोटो आ जीवन-चरित छापि क’ तिरपित अपन जीविका

चलबैक जोगार कइए लैत अछि। अहाँ सभहक मैथिली भाषा मे बनल सिनेमाक प्रलोभन द' ओ बहुतो सँ बहुत किछु ठकि अबस्से नेने हैत। तकर अलावे हमरा चिंता भेल छल जे अहाँसभ एतुक्का लेल नव छी, पता नहि एखन तक तिरपित कतेक नोन-तेल अहाँसभ पर छिटि चुकल हैत। आब हमरा ओ देखि लेलकए। आब ओ अहाँ सभहक लग मे नहि आओत। हमर विचार जे तिरपित पर अधिक चर्चा क' हमसभ समय दूरि नहि करी। एखन अहाँ सभहक जे मुख्य काज अछि ताहि पर ध्यान केन्द्रित करी।

हम आ मदन भाइ चुपचाप नवागन्तुकक बात सुनैत रहलहुँ। ओ आगाँ कहलनि–जहाँ तक हमरा जानकारी भेटलए अहाँ सभहक मैथिली फिल्म पूरा बनि गेलए। जे थोड़ेक काज बाँकी छैक तकरा पूरा करैक सामर्थ अहाँ सभ केँ अछिए। मुख्य समस्या छैक एकर वितरणक। मैथिली भाषा मे बनल फिल्म केँ की त' डिस्ट्रीब्यूटर भेटौ अथवा लब्ध-प्रतिष्ठित कोनो मैथिली संस्था एकरा अंगीभूत क' एतुक्का कोनो सिनेमा हॉल मे एकर प्रदर्शन करैक व्यवस्था करौ। हमर जानकारी मे कलकत्ता मे फिल्म डिस्ट्रीब्यूशन व्यवसाय मे कोनो मैथिल नहि छथि। सुनलहुँए जे दरभंगा मे मझिला राजकुमार फिल्म डिस्ट्रीब्यूशनक धंधा शुरू केलनिहँ। तंत्रनाथ नामक कोनो व्यक्ति ओकर मैनेजर बन'लए। मुदा दरभंगा महाराजक परिवार सँ कोनो सार्थक कार्य करायब तकर संभावना दूर-दूर तक नहि छैक। आब कलकत्ताक कोनो मैथिल संस्था अहि फिल्म केँ अंगीभूत करए तकर विचार हमसभ एखन करी। कलकत्ता मे मैथिलक बहुतो संस्था छैक जाहि मे हमर संस्था सभ सँ पुरान आ सभसँ बेशी कार्यरत संस्था अछि। मैथिल मे धन-कुवेर, शिक्षाविद्, लेखक, कवि आ अन्य-अन्य क्षेत्रक विभूति हमर संस्थाक सदस्य छथि। पत्रिका निकालब, नाटक मंचन करब, विद्यापति पर्व मनायब तकरा संग विभिन्न तरहक गोष्ठीक आयोजन करब, सभटा काज हमर संस्था करैए। फिल्म वितरण एवं सम्पूर्ण मिथिलांचल मे एकर प्रदर्शन एकदमे सँ नवीन तरहक काज भेलै। मैथिली भाषा मे बनल फिल्मक महत्त्व की हेतै से हम बुझि रहलियैए। मैथिली भाषाक मान्यता एवं मिथिला नामक अलग प्रांतक गठन, ई दुनू हमर सभहक अन्तिम लक्ष्य अछि। मैथिली सिनेमा अहि लक्ष्य केँ जगजिआर कर' मे वृहत् योगदान अबस्से करतैक। तेँ हम अहाँ दुनू केँ किछु खास प्रबुद्ध मैथिल सँ भेट करब' चाहैत छी जे हमर संस्थाक कर्मठ सदस्य आ पृष्ठ-पोषक छथि। ओ सभटा व्यक्ति आर्थिक रूपे सम्पन्न एवं मिथिला एवं मैथिली लेल संवेदनशील सेहो छथि। जँ सभहक स्वीकृति भेटि जाय त हम संस्थाक आपातकाल बैसार करबा अहाँक फिल्मक अंगीभूत करबाक प्रयास करब। एकटा

खास बातक अहाँ दुनू ध्यान राखब। ईर्खा आ हमहीं सभसँ काबिल, अहि तरहक स्वभाव मैथिल कँ भगवाने देने छथिन। तँ थोड़े काल लेल मान-अपमान कँ अधिक तरजीह देब ठीक नहि रहत। एखन हमसभ डिस्ट्रीब्यूशनक समस्याक निदान करक जोगार प्राप्त क' ली सैह होयत विशिष्ट मैथिली सेवा।

बजनिहार मैथिल महानुभावक कहब मे वजन छलनि। मैथिली फिल्मक समस्या कँ ओ सही-सही बुझि गेल रहथि। हम आ मदन भाइ हुनकर आगाँ नतमस्तक भेलहुँ। हुनकर परिचय भेटल। एतेक दिनक बादो हुनकर नाम हमरा स्मरण अछि। हुनकर नाम रहनि बाबू साहेब चौधरी। दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक निवासी बाबू साहेब चौधरी निर्लोभ, निस्स्वार्थ, निर्भीक एवं सही सोच रखनिहार मिथिला-मैथिली लेल तन-मन-धन सँ समर्पित व्यक्ति रहथि। एहने व्यक्तिक कारणे, सभ तरहक विपरीत परिस्थिति रहितहुँ मिथिलाक भाषा, मिथिलाक संस्कृति, मिथिलाक परम्परा एवं मिथिलाक माटि सँ बहरायल सनातन धर्म बाँचल छल, सुरक्षित छल आ एखनो अछि।

हम आ मदन भाइ उत्साहित भेल बाबू साहेब चौधरीक नेतृत्व मे कलकत्ताक गण्यमान्य मैथिल सँ भेट करए लेल बिदा भेलहुँ। पहिल व्यक्ति जनिक डेरा पर पयर राखल ओ महानुभाव छलाह मैथिल रत्न। मैथिल रत्नक असलीका नाम बिसरि एखन हम हुनका रतन बाबू कहबनि। बड़ा बाजारक दोगाठी मे रतन बाबूक डेरा। डेरा मे साढ़े तीन गोट कोठली। मुँह झाँपल डेढ़ कोठली मे एक पत्नी, एक पुत्रीक परिवारक संग रतन बाबूक निवास। बाँकी दू कोठली कँ ओ छात्रावास बनौने रहथि। मिथिलांचल सँ आयल हेरायल, भुतिआयल गरीब छात्र कँ ओ अपन छात्रावास मे निःशुल्क आश्रय दैत छलथिन। छात्रावास बना क' लोकहित मे काज करब हुनकर आमोद-प्रमोद रहए। जे कियो रतन बाबू सँ भेट कर' जाय तकरा गर्व सँ ओ अपन महान सेवाश्रमक अवलोकन अवश्ये करबैत छलथिन। रतन बाबू ततेक पढ़ल-लिखल रहथि जे कोनो धाकड़ मारबाड़ीक मुनीम बनि ओ चिक्कन मुद्रा उपार्जन करैत छलाह से कहल गेल छल। रतन बाबू मे जे सभसँ पैघ गुण रहनि से छलनि हुनकर धारा प्रवाह भाषण देबाक क्षमता। ओ घंटो बजिते रहि सकैत छला। बाजै मे हुनका मुँह नहि दुखाइत छलनि।

बाबू साहेब चौधरीक संग दू गोट नवव्यक्ति कँ देखितहि रतन बाबू प्रसन्नचित भ' गेलाह। नव व्यक्ति किएक ऐलाह अछि से जानकारी नहि रहनि। मैथिल समाजक ओ कतेकटा उपकार करैत छथि, चौधरीजी कँ संस्था मे ओ कतेक चन्दा दैत छथिन आ राजनीति मे हुनकर कतेक दूर तक पैठ छनि तकर बखान करैत-करैत

ओ हमरा सभ कैँ छात्रावास मे ल' गेलाह। ओतए पहिने सँ कंठस्थ कएल हितोपदेशक लगभग सय संस्कृत श्लोक कैँ रतन बाबू पाठ केलनि। तकर बाद हिटलरक स्पीचक अँग्रेजी अनुवाद सुनबय लगलाह। हमसभ जमीन पर ओछौल छात्रक बिछौने पर बैसि गेल रही। मुदा रतन बाबू ठाढ़े भेल सावधान मुद्रा मे अपन पांडित्यक प्रदर्शन क' रहल छलाह। आब ओ कालिदास रचित मेघदूतक मैथिली मे अपन कएल अनुवादक पाठ करैत-करैत भावभूमि मे विचरण कर' लगलाह। भाव-भूमि सँ आपस आबि बिना विरामक जखन रतनबाबू शेक्सपीयरक सोनेटक पाठ आरम्भ केलनि तखन चौधरीजीक धैर्यक बान्ह टूटि गेलनि। ओ कहलथिन—अहाँ धरतीक सर्वश्रेष्ठ बज्जकर थिकौं। एखन तक देश मे तीन गोट आम चुनाव भेल अछि। अहाँ तीनू चुनाव मे लोकसभाक प्रत्याशी बनलहुँए। मुदा अही बज्जकरक अवगुण दुआरे प्रत्येक चुनाव मे अहाँक जमानत जप्त भ' गेलए। तकर बादो अहाँ के ज्ञान-चहु नहिए जन्मलए। पछिला दू घंटा सँ अनवरत अहाँ अन्ट-सन्ट बाजिए रहलहुँए। राम-राम! एतेक कहूँ मनुक्ख बाजलए!

दू गोट नव व्यक्तिक लग चौधरीजी द्वारा कएल गेल अपमान कैँ रतन बाबू घोंटि नहि सकलाह। क्रोध एवं क्षोभक मिश्रित आक्रमण सँ मूर्छित भ' ओ नीचाँ फर्श पर बैसि गेलाह। मुदा ओहू अवस्था मे ओ बड़बड़ाइत रहलाह। चौधरीजी हाथक इशारा केलनि। हम तीनू मिथिला रत्न अर्थात् रतन बाबू कैँ ओही दयनीय अवस्था मे छोड़ि हुनक डेरा सँ बाहर निकलि गेलहुँ।

दोसर व्यक्ति जनिक कोठी पर हमसभ पहुँचल रही तनिक नाम जे किछु रहल होनि, मुदा हम हुनका मैथिल बंधु कहि आदर करबनि। बंधुजी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट रहथि। हुनकर आडिटिंग कम्पनी पैघ आ प्रसिद्ध छल। अनेको मैथिल छात्र हुनके कम्पनी मे काज क' सी.ए. परीक्षाक तैयारी करैत रहथि। चौधरीजी कैँ देखिते बंधुजीक भव्य मुखमंडल पर निराशाक भाव भरि गेलनि। ओ हकमैत बजला—तोरा केतना दफा हमे बोलने छियौं जे आबे कैँ होन त' टेलीफोन पर समय ल'क' आबे कैँ होन। तोहँ बेमतलब चल आबैत छैं। एखनी हम प्लेन पकड़ि हैदराबाद जेबौं। हैदराबाद के सभसँ बड़ौ आडिटर कम्पनी साथे पार्टनरशिप डीड साइन करबौं। तबे हमरा टाइम कहाँ छौं?''

चौधरीजी हड़बड़ाइ पुछलखिन—कहिआ तक आपस एबौं?

—किछु बोलै ने पाड़ैत छियौं। दू-तीन महिना त' अबस्से लागि जेतौं।

बंधुजी कार मे बैसलाह आ एयरपोर्ट लेल बिदा भ' गेलाह। विभिन्न नस्लक जंजीर मे गछाड़ल कुकूर सम्मलित स्वरे हमरा तीनू मैथिली प्रेमी पर भूक' लागल

छल। बंधुजी यद्यपि हमरा सभ कैँ ने किछु अनर्गल कहने रहथि आ ने अनर्गल केयने रहथि तथापि हमर सभहक उत्साह पर एक घैल जल अबस्से ढारि देने रहथि।

चौधरीजीक संस्थाक तेसर आ सभ सँ अधिक आदरणीय एवं कर्मठ सदस्यक डेरा पर पहुँचै सँ पहिने हुनक परिचय भेटि चुकल रहए। हुनकर असली नामक उच्चारण मे मैथिल विभूति मानि लेब सर्वथा उचित एवं समुचित हैत। विभूतिजी कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिन्दी भाषाक प्रख्यात प्रध्यापक रहथि। अपन विषयक दायित्व समाप्त केलाक बाद बाँकी बचल सभटा समय ओ मैथिली साहित्य एवं दर्शन कैँ दैत छलथिन। हुनकर पत्नी सेहो प्राध्यापिका रहथिन। विद्वान पति एवं विदुषी पत्नी दुनू मैथिली भाषा मे कइएक गोट पोथी लिखि कैँ प्रकाशित करबा चुकल छलथिन्ह। दुनूक रचित मैथिली भाषाक पोथी मैथिली जगत मे चर्चित एवं सर्वमान्य रचना छल। तकर अलावे विभूतिजी मैथिली भाषा मे पत्रिका सेहो सम्पादित एवं प्रकाशित करैत रहथि। पत्रिकाक प्रकाशनक सभटा खर्च विभूतिजी असगरे बहन करैत छलाह।

विभूतिजीक ड्राइंगरूम छल कुर्सी-सोफा सँ सजल। चारूकात देबाल परहक सेल्फ किताब सँ भरल। ड्राइंग रूमक टेबुल पर, कुर्सी पर, नीचाँ फर्श पर जहिं-तहिं किताब, पत्रिका एवं दैनिक समाचार पत्र पसरल रहए। हमसभ जखन ओतय पहुँचल रही विभूतिजी एकटा कुर्सी पर बैसल सामने टेबुल पर लेखन काज मे व्यस्त छला। विभूतिजी एवं हुनक पत्नी हमरा सभ कैँ स्वागत केलनि आ आदर सँ बैसौलनि। विभूतिजीक ओतुक्का वातावरण साहित्यक सुगंधि एवं गरिमा सँ सुशोभित छल।

बाबू साहेब चौधरी हमर आ मदन भाइक परिचय दुनू पति-पत्नी कैँ देलथिन। दुनू बिना किछु बजने ठोर पर मुस्की आनि आ मूड़ी झुका हमर आ मदन भाइक परिचयक स्वागत केलनि। तकर बाद मैथिली भाषा मे बनल 'ममता गाबए गीत' फिल्मक चर्चा आरम्भ भेल। फिल्मक पूर्ण जानकारी चौधरीजी एवं मदन भाइ सम्मलित रूपे प्रस्तुत केलनि। विभूतिजी एवं हुनक पत्नी आदर्श पुरुष एवं आदर्श महिला स्वरूप बिना कोनो टोक-टाकक धैर्यपूर्वक सभटा कथन कैँ श्रवन केलनि।

ताहि बीच विभूतिजीक एकटा भृत्य चाह-बिस्कुट राखि देने रहए। सभ तरहक औपचारिकता समाप्त भेलाक बाद विभूतिजी कहलनि–मैथिली भाषा मे फिल्म बनलए से सुनि हमरा प्रसन्नता भ' रहलए। भाषा विकास मे फिल्मक योगदान अतुलनीय होइत छैक। हम अहि दुनू अल्प वयसक निर्माता कैँ हृदय सँ धन्यवाद दैत छियनि। हिनकर सभहक साहसिक कृति कैँ अद्‌भुते कहल जेतनि। आब

हमसभ मूल विषय पर ध्यान केन्द्रित करी। अहाँ सभ जाहि कारणे एतय एलहुँए से अछि फिल्मक वितरण एवं विपणनक समस्या। फिल्म वितरण एवं विपणन निश्चिते एक अलग तरहक व्यावसायिक कला थिक। अहि कला सँ हम पूर्णतः अनभिज्ञ छी। फिल्म निर्माण एवं फिल्म व्यवसायक हमरा कनिकबो तजुरबा नहि अछि। एकर तजुरबा कँ हासिल करब ततेक हमरा लग समयक अभाव अछि। हम जाहि तरहक काज मे छी ओ हमर सभटा समय खपत क' लैए। फिल्म व्यवसायक ज्ञानक अभाव मे, हमरा बजैत दुख भ' रहलए, हम अहाँ सभहक अभियान मे कोनो तरहक सहायता नहि क' सकैत छी। ओना बाबू साहेब संस्थाक बैसार करताह त' अध्यक्षता हमहीं करब ने! आन-आन सदस्य की बजैत छथि तकरा हम सुनब। जँ संस्थाक कोनो सदस्य फिल्म वितरण संबंधी काज मे रुचि देखबैत छथि त' हम प्रशंसे करबनि। मुदा हम आ हमर पत्नी फिल्मक काज मे सम्मलित नहि भ' सकब। हम अपन स्पष्टवादिता लेल स्वयं विवश छी। फिल्म वितरण मे धन एवं समय लगायब हमरा दुनू लेल संभव नहि अछि।

विभूतिजीक विनम्रता एवं सज्जनता पराकष्ठा पर रहए। मुदा हुनक विवशता हमरा उम्मीदक पहाड़ सँ नीचाँ खसा देलक। कहबाक अर्थ जे विभूतिजीक ओहि ठाम सँ निराश भेल हमसभ आपस भेलहुँ।

दोसर दिन भिनसरे चौधरीजी अयलाह आ कहलनि–किछु आरो व्यक्ति सँ अहाँ दुनू कँ हम भेट करबय चाहैत छी। उम्मीद राखब आ प्रयास करब हमर अहाँक एखुनका कर्त्तव्य भेल ने!

सरल हृदय बाबू साहेब चौधरी हमरा दुनूक मदति लेल अधीर छला। ताहि क्रम मे ओ मैथिली भाषाक अनेक नव-पुरान, छोट-पैघ, मोट-पातर कवि, कथाकार, नाटककार आ लेखक, समालोचक सँ भेट करौलनि। मुदा सभटा साहित्यकार अपन-अपन व्यथा मे व्यथित छलाह। हुनकर सभहक निजक वेदना ततेक ने गहींर छलनि जे 'ममता गाबए गीत' फिल्मक समस्या कँ एक कात टारि हम सभ हुनके दुख मे सहानुभूतिक बरखा करैत-करैत सभ सँ पिण्ड छोड़ौलहुँ।

तखन पहुँचलहुँ मैथिली सखा लग। सखाजी जूट मिल मे कार्यरत कर्मचारी यूनियनक महामंत्री छलाह। सखाजीक डेराक मुख्य दरबज्जा लग पहुँचि थकमका क' हमसभ ठाढ़ भ' गेलहुँ। भितरका कोठली सँ चिकरैक आवाज आबि रहल छलै। चौधरीजी थकमका गेला तखन कहलनि–जेना गीदर कँ भूकैकाल अपन नांगड़िक होश नहि रहैत छै तहिना यूनयिनक मीटिंग काल यूनियनक मेम्बर कँ सुधि-बुधि हेरायल रहैत छैक। हमरा सभ कँ सतर्क रहि प्रतीक्षा कर' पड़त।

ठाढ़े-ठाढ़ प्रतीक्षा करैत रहलहुँ। सामनेक कोठली सँ एकहि संग तीन-चारि मनुक्खक वाक्-युद्धक कर्कश आवाज प्रसारित भ' रहल छल। चिकरै-भोकरैक बीच एकहि टा बात कँ बारम्बार सुनैत रहलहुँ—पहिने हमर बात सुनि लिअ तखन अहाँ अपन बात कहब। मुदा सुननिहार कियो नहि, सभटा मनुक्ख केवल बजनिहार। लगभग एक घंटा तक सभहक तर्क-वितर्कक घामासान होइत रहल। तखन कोठलीक दरबज्जा धड़ाम सँ खुजल। तमतमायल सखाजी अपन तीन सहयोगीक संग बाहर अयलाह। हम सभ ओतहि ठाढ़ रही से सखाजीक आँखि देखि नहि सकल। सखाजी अपन सहयोगीक संग मोटरकार मे बैसलाह आ उड़न-छू भ' गेलाह।

बाबू साहेब चौधरीजीक मुँह मे ताला लागि गेलनि, पेट मे मरोड़ पड़ि गेलनि। बड़ा कठिने ओ अपना कँ संयत केलनि। तखन कुपित भेल कहलनि—चलू बिड़लाक ओहिठाम। बिड़ले अपन सभहक अन्तिम आशा छथि।

बिड़ला? घनश्याम दास बिड़ला? नहि यौ, बिड़ला नामक शब्द अपन कोनो मैथिल-श्रेष्ठक लेल व्यवहार कयल गेलए। असमंजसक स्थिति, मुदा स्पष्टीकरण चौधरीजी देलनि। एक्सपोर्ट-इमपोर्टक धंधा लाइसेन्सधारी किलयरिंग एजेन्ट करैए। कलकत्ताक बन्दरगाह पर देशी-विदेशी माल लादल समुद्री जहाज पतियानी मे अबैए। डेक पर जहाज सँ माल उतारल जाइए आ दोसर देश जाय बला माल लादल जाइए। मालक खलासी एवं लदानक काज किलयरिंग एजेन्ट करैए जाहि मे एजेन्ट कँ कमीशन भेटैत छैक। कमीशनक अलावा आरो अनेक जायज-नाजायज छिद्र सँ एजेन्ट प्रचुर धन उपार्जन करैए। ओहने किलयरिंग एजेन्टक झुंड मे अपन एक गोट मैथिल भाइ छला। अपन मैथिल भाइ अहि धंधा सँ एतेक ने धन जमा क' लेने रहथि जे गाम सँ कलकत्ता तक हुनक कोठी सोना-चानी सँ भरि गेल रहनि। एहन सौभाग्यशाली बिरले होइए ने? तँ अपन मैथिल भाइक नाम बिड़ला पड़ि गेल छलनि।

बिड़लाजीक भवन आमदनीक अनुसारे ओतेक भव्य नहि, साधरणे रहनि। चौधरीजी कॉलबेलक बटन दबौलनि। एकटा स्टॉफ बाहर आयल। स्टॉफ चौधरीजी कँ चिन्हैत छलनि। ओ हमरा तीनू कँ सजल बैठकखाना मे बैसौलनि। चौधरीजी बिड़लाजीक असली नामक आदरपूर्वक उच्चारण करैत स्टॉफ सँ कहलनि—हमसभ हुनके सँ भेट करए लेल अएलहुँ अछि।

—बड़का मालिक! बड़का मालिक अपन गाम मे हाइ स्कूल स्थापित क' रहल छथिन ने! एखन स्कूलेक काजे गाम गेल छथिन। मुदा तँ की, छोटका मालिक त' छथिए। ठहरू, हम छोटका मालिक कँ अहाँक समाद कहने अबैत छी।

चौधरीजी अकचकाइत स्टॉफ कँ रोकै लेल हाथ उठौलनि। मुदा स्टॉफ

फुर्तिगर रहए, ओ भीतरक कक्ष मे जा चुकल छल। चौधरीजी दुनू हाथेँ कपार पकड़ि लेलनि आ आक्रोश करैत बजला—जुलूम भ' गेल सैह बुझि लिअ। जहिना जेठका बिड़ला ज्ञानी, दानी, मृदुभाषी आ मिथिला-मैथिलीक सेवा मे बढ़ि-चढ़ि क' भाग लेब'बला मानव छथि तहिना हुनकर छोट भाइ मूर्ख, उद्दंड, अहंकारी आ दुष्ट प्रवृत्तिक दानव अछि।

चौधरीजी छोटका बिड़लाक परिचय मे आरो विशेषणक प्रयोग नहि क' सकलाह। कारण छोटका बिड़ला आबि चुकल रहए। चौधरीजी कैँ देखितहि ओहि शैतानक दुनू भहूँ वक्र भ'क' सटि गेलै आ दुष्टताक भाव ओकर चेहरा सँ ठोपे-ठोप चुब' लगलै। ओ अपन मुँह सँ जहर मे लेपटायल शब्द बाहर केलक—आबि गेलहिन रौ भिखमंगा! चंदाक नाम पर तोँ हमर भाइ साहेब सँ भीखे ने मंगैत छहुन रे भीखमंगा। तोरा सन भिखमंगा कैँ भीख मांगै मे कहूँ लाज भेलैए!

बाबू साहेब चौधरीक प्रतिए अभद्र व्यवहार होइत देखि मदन भाइ रंजे तिलमिला उठलाह। ओ उठि क' ठाढ़ भेलाह आ छोटका बिड़लाक सामने छाती तानि ठाढ़ होइत ओकरा कहलनि—एखन हमसभ चंदा मांग' नहि एलहुँ जे तोँ वृषोत्सर्ग सराधक दागल सांढ़ जकाँ ढेकरि रहलएँ हम आ हमर मित्र बम्बइ सँ एलहुँए। हम दुनू मिलि क' मैथिली भाषा मे फिल्म बनेलहुँए। ओही फिल्मक वितरण संबंधी बात कर' लेल तोरा जेठका भाइ लग आयल रही। ओ नहि छथि त' आपस जा रहल छी।

छोटका बिड़ला जन्मजात दुष्ट छल। ओकर दिमागक खिड़की बन्द रहै। ककरहु अनकर बात ओकरा माथ मे पैसिते नहि छलै। ओ अपन मुँहक फान कैँ चिआरलक तखन बाजल—फिल्म, मैथिली फिल्म? हमरा ठक' चललाहए। दरभंगा, मधुबनीक बहुतो छौंड़ा घरक रुपैया, गहना चोरा क' हीरो बन' लेल बम्बइ पड़ा क' जाइए। तोंहू दुनू सैह छिएँ रौ। हीरो त' नहि बनलएँ। आब बहुरुपिया बनि लोक कैँ ठक' चललाहएँ। हमरा लग तोहर ठकपनी नहि चलतौ। अबारा नहितन!

मदन भाइ देहक मजबूत लोक रहथि। एखन ओ जाहि तरहक आवेश मे रहथि से देखि हमरा संशय होम' लागल जे कहूँ मदन भाइ छोटका बिड़लाक ठोंठी ने दाबि देथि। हम हुनकर हाथ पकड़लहुँ आ अपना दिस घीचतै चिचिएलहुँ—अहि बेहूदा सँ गप्प-सप्प नहि करू मदन भाइ! चलू, एहिठाम सँ चलू।

हम मदन भाइ कैँ घीचैत-घीचैत बाहर अनलहुँ। पाछाँ-पाछाँ चौधरीजी सेहो अयलाह। भीतर मे छोटका बिड़ला मिर्गीक रोगी जकाँ बड़बड़ाइते रहल—अबारा नहितन! अबारा नहितन!!

मदन भाइ हमर घनिष्ठ मित्र आ ताहि संगे हमर आदरणीय। एखन जाहि रंज

आ ग्लानिक आगि मे ओ धधकि रहल छलाह एहन विकट दशा मे हम हुनका कहियो ने देखने छलियनि। हम स्वयं विचित्र मनोदशा मे पहुँचि गेल रही।

बाबू साहेब चौधरीजी दिशि घुमि मदन भाइ कहलखिन–मिथिलाक बहुतो रत्न, बंधु, सखा, विभूति आ बिड़ला सँ अहाँ हमरा दुनू कँ साक्षात्कार करबौलहुँ। अहाँ कँ धन्यवाद! प्रवासी मैथिल समाजक हम दुनू ऋणी छी आ ऋणी रहब। हमरा सभ कँ कर्मक अनुसार बड़की टा उपाधि भेटि गेलए। उपाधि अछि–'अबारा नहितन'। अहि सँ पैघ उपाधि भैए ने सकैए। अपने कँ पुनः धन्यवाद! हम निवेदन करैत छी जे अपने अपन सेवाक काज मे गेल जाउ। हमरा सभ सँ भेट करैक जे प्रयोजन छल से पूर्ण भ' चुकलए। हमहूँ दुनू जतेक शीघ्र भ' सकत कलकता सँ प्रस्थान क' जायब।

मैथिल समाजक सर्वश्रेष्ठ उपाधि 'अबारा नहितन' ग्रहण क' आ अपन मान-सम्मान एवं अभिमान कँ थुर्री-थुर्री करैत दिनक लगभग दू बजे आपस होटल पहुँचल रही। हम आ मदन भाइ भोजन कएल आ चुपचाप अपन बेड पर पड़ि रहलहुँ। होटलक कोठलीक छत मे बनल कमलक फूल कँ देखैत मदन भाइ कहलनि–जाहि कर्म कँ कयला सँ मोन कँ दुख, अशांति एवं शोक भेटैत छै से पाप भेल। जाहि कर्म कँ कयला सँ मोन कँ सुख, शांति एवं तृप्ति भेटैत छैक से पुण्य भेल। अएँ यौ केदार भाइ, हमरा दुनूक फिल्म निर्माणक काज पाप भेलै आ कि पुण्य?

मदन भाइक प्रश्न सटीक छल। मुदा हमरा लग एकर जवाब पहिने सँ ताकल रहए। युवा अवस्था जीवनक वसंतकाल थिक। वसंतकाल मे असावधान होयब, गलती करब आ फेर सँ गलती करब एक तरहँ प्राकृतिक नियम अछि। असावधानी मे कयल काजक प्रतिफल कँ भोग' पड़िते छैक। फिल्म निर्माणक काज कँ पाप एवं पुण्य सँ जोड़ब अनुचित हैत। हमसभ त' मैथिली भाषाक प्रथम फिल्म धार्मिक कथा पर आधारित बनब' लेल बम्बइ गेल रही। भसिया गेलहुँ। तकर प्रतिफल भोगि रहल छी। पछताबा छोड़ि सम्प्रति कोनो काज हमरा सभ लेल नहि रहि गेल रहए। नहि यौ, काज छल ने! कलकत्ता सँ आपस दरभंगा जयबा लेल टिकटक व्यवस्था।

तखने होटलक मैनेजर कोठली मे आयल आ कहलक–केदार बाबू, ''अपनार टेलीफोन आछे। तरातरी आसुन।''

टेलीफोन पर हमर पितिऔत यदुवीर छला, कहलनि–केदार भैया, तोँ अमेरिकन विश्वविद्यालय मे एडमिशन लेल अप्लाइ केने छलहक? कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय गोल्डेन गेट कॉलेज, सनफ्रान्सिसको सँ तोहर एडमिशनक एप्रूभल आबि गेलए। सभ काज छोड़ि तुरंत एतय आबि जाह आ अमेरिका सँ आयल पत्र कँ हस्तगत कर'।

खबरि पाबि हम त' प्रसन्न भेबे केलहुँ मुदा हमरो सँ अधिक मदन भाइक चेहरा

खुशी मे दमकि उठलनि। होटलक कोठली मे उमंग नर्तकी बनि नाच' लागल। बड़ी काल तक मदन भाइ आनन्दक तरंग मे तरंगित होइत रहलाह। कहुना क' ओ अपन मोन कैँ बश मे केलनि, तखन कहलनि—ईश्वर कैँ लाख-लाख प्रणाम। हम अहाँ लेल अपराध-बोध सँ ग्रस्त छलहुँ। हमहीं अहाँ कैँ नोकरी छोड़बा फिल्म निर्माणक काज मे घसिटने रही। तकर पश्चात्ताप मे सदिकाल बेकल रही। अहाँ कैँ जीवनक सही मार्ग अपने-आप भेटि गेलए। अहि अवसर कैँ उपयोग करै लेल अडिग भ' जाउ। फिल्मक की हेतै तकरा भविष्यक जिम्मा छोड़ि दिऔ। अहाँ अमेरिका जयबाक ओरियान मे लागि जाउ।

एडमिशन लेटरक आधार पर अमेरिकन कन्सूलेट सँ एफ-1 भीसा सहजहि भेटि गेल। मेडिकलक सभटा टेस्ट सेहो सही निकलल। रिजर्भ बैंकक 'पी' फार्म किलयरेन्श मे समस्या भेल छल। मुदा सेहो सलटि गेल। भैयारी बँटबारा मे औझरायल हमर सहोदर भ्राता कैँ हमर अमेरिका यात्रा जे ओहि समय मे अत्यन्त कठिन एवं खर्चीला रहैक, मे कोनो रुचि नहि छलनि। मात्र हमर हितचिंतक, हमर मित्र मदन भाइ हमरा संग कलकत्ताक एयरपोर्ट पर पहुँचल रहथि। 16 मइ, 1966 ई. कैँ आठ डालर जेबी मे राखि हम बैंकाक, हाँगकाँग, टोकियो, होनोलूलू होइत सनफ्रान्सिसको लेल हवाइ जहाज मे बैसि गेल रही।

15

सम्प्रति हम मैथिली भाषा मे बनल पहिल फिल्म 'ममता गाबए गीत'क चर्चा क' रहलहुँए। मैथिली जगत मे हम पूर्णतः अपरिचित छलहुँ आ अपरिचिते रह' मे विश्वास रखैत रही। मुदा तेहन किछु बात भेलै जे हमरा अपन युवावस्था मे कएल कर्म कँ सिलसिलेबार लिख' पड़ि रहलए। फिल्मक भेलै की? की फिल्म सिनेमा हॉल तक पहुँचलै? तकर बिनु चर्चा कयने 'ममता गाबए गीत'क इतिहास पूर्ण नहि हेतै।

1977 ई. सितम्बर महिना मे हम अमेरिका सँ आपस आबि अपन देशक धरती पर पयर रखलहुँ। अमेरिकाक बहुचर्चित 'ग्रीन कार्ड' भेटि गेल रहए मुदा हमर पासपोर्ट एखनहुँ हमरा भारतक नागरिक कायमे रखने छल। देश मे वसातक सिहरन, माटिक स्वाद आ पानिक मिठास पूर्ववते रहैक। मुदा राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था मे परिवर्तन आबि गेल छलै। काँग्रेसक पटकनियाँ, विरोधी दल द्वारा निर्मित केन्द्रीय सरकार मे पमरियाक नाच आ ननुआ धोबीक पुतोहुक ग्राममुखिया बनब, सभटा बात अजगुते रहै। अमेरिकन भौतिकवादी रीति-रिवाज मे घुलि-मिलि जयबाक कारणें हमर अपन सोच मे सेहो बदलाब आबि गेल रहए। पुरना बात सपना बनि कखनहुँ काल मोन मे अबैत छल, मुदा ओहि बात सभहक अस्तित्व नहिएक बरोबरि छलै। नोकरी से भेटल रहए जाहि मे बम्बइ, तेहरान आ लक्जमवर्गक बीच दौड़धूप कर' पड़ि रहल छल। बीच-बीच मे दरभंगा अबैक सेहो अवसर भेटैत रहए। नोकरी मे तनखाह नीक भेटैत छल। मुदा खर्चा करैक आदति ताहू सँ बेशी नीक रहए। सभटा बात कँ एकट्ठा क' जँ निष्कर्ष निकालल जाए त' जीवन सुखमय छल, कोनो वस्तुक अभाव नहि रहए।

वयस जखन साठि मे पहुँचैत छैक तखन मनुक्खक सभ सँ मूल्यवान सम्पत्ति ओकर शरीर मे बुढ़ारी नामक काल प्रवेश क' जाइत छैक। जखन वयस सत्तरिक लगीच पहुँचैत अछि तखन अलगनी सँ कुर्ता उतार' काल ठेहुनक किल्ली मे दर्द पैसि जाइत छैक। पत्नी जिद्द केलनि आ प्रायः अपनहुँ जन्मस्थानक ममता जागल, अपन

बाँकी बचलाहा अरुदा कैँ हम अपन गाम मे बिताबी तेहन निआर केलहुँ। मुदा गाम मे खूट्टा गाड़ब असंभव भ' गेल रहए। भैयारी बँटबाराक प्रकोप एहन जबर्दस्त भेल रहए जे भैयारी मे बाजाभूकी बन्द, पुतइ मौजेक अधिक जमीन पर देश मे कायम प्रजातंत्र मे जनमल प्रजाक कब्जा भ' गेल रहैक आ गामक बासहीड क्षत-विक्षत भेल कोनो काजक रहिए ने गेल छलै। 2001 ई. मे लहरियासरायक बंगाली टोला मे कनिएटा जमीन कीनि क' कनिएटा घर बनेलहुँ आ घरक नाम राखि देलियै–'हिडेन कॉटेज', किएक त' घर कतहुँ सँ देख' मे नहि अबैत छलै।

मदन भाइक महंथानाक सत्यानाश भ' चुकल रहनि। अग्रिम जातिक अभिशाप, सरकारी अमलाक कोनो टा मदति नहि भेटलनि। ओहुना कालचक्रक पहिया पुरना व्यवस्था कैँ मटियामेट कर' लेल गतिमान भैए चुकल छल। महंथाना पर अनगिनत मोकदमा। आब समयक फेर देखियौ। मदन भाइ मामिला कैँ देखै लेल एकटा ओकील कैँ अपन लहेरियासरायक आवास मे बनल खपड़ाक मकान मे रखलनि। ओकील साहेब स्वर्गवासी भ' गेलाह। ओकील साहेबक संतान मदन भाइक डेराक जमीन आ घर हथिया लेलथिन। तैयो मदन भाइ अपन नियुक्त कएल ओकीलक पुत्र संग मोकदमा लड़ि रहल छलाह, तारीख पर हाजरीक पेशी जमा क' रहल छलाह।

किछु हौउक, मदन भाइक डेरा हमर 'हिडेन कॉटेज' सँ लगीचे छल। नित्य दिन संध्याकाल दुनू बुढ़बा मित्र एकहि ठाम बैसिक' गप्प-सप्प करैत समय कैँ खिहारि रहल छलहुँ। मदन भाइक गप्प-सप्प मे बहुतो विषयक चर्चा शामिल होइत रहल। मुदा 'ममता गाबए गीत' फिल्मक कहियो ओ चर्चा नहि केलनि। हमरो अहि फिल्मक बात बिसरा जकाँ गेल छल तैँ कोनो तरहक जिज्ञासा नहि रहए। मैथिली प्रेम-रोग कैँ पछाड़ै लेल कोनो औषधिक निर्माण नहि भेलैए। मुदा समय बलवान होइए आ ओ अपन काज करैए। मनुक्ख कैँ जीबै लेल एकहिटा जिनगी भेटै छैक। जिनगी मे दुःखक प्रवेश नहि होउक तकरा लेल बुद्धि सदिकाल सचेष्ट रहैत छैक।

2003 ई. जून अथवा जुलाइक महिना। बज्र दुपहरियाक समय। एकटा मैथिल युवक हमरा सँ भेट करए लेल अयलाह। अबिते ओ कहलनि–हमर नाम विजय कुमार मिश्र अछि। हम पत्रकार छी। हमरा मैथिली सिनेमाक कब्र खोधै मे रुचि अछि। हम कइएक टा मैथिली भाषा मे बनल, बिन बनल सिनेमाक कब्र खोधि चुकलहुँ अछि। कनिए काल पहिने उमा बाबू सँ भेट भेल रहए। ओ 'ममता गाबए गीत' फिल्मक कब्रक पता देलनि। हमर प्रश्नक अपने उत्तर दिअ। की अहाँ मैथिली भाषा मे बनल 'ममता गाबए गीत' फिल्मक कर्ताधर्ता छी? अगर हँ त' अहाँ मैथिल समाज मे अपरिचित किएक छी?

उमा बाबू हमर चिन्हार लोक मे सँ रहथि। चिन्हार कोना भेलाह, से सुनि लिअ। बिहार सरकार मे सरकारी नोकरी कर'बला अट्ठावन बर्खक आयु मे रिटायर क' जाइत छथि। हुनकर आगामी बीस-तीस बर्खक अरुदा रहिए जाइत छनि। हे ईश्वर! आब ओ सभ बिनु किछु काजक जीवित कोना रहता! अहीठाम बुड़बक आ काबिल लोक मे भेद प्रगट होइए। काबिल लोक रिटायर केलाक बादो जीबैक मार्ग ताकिए लैत छथि। मेडिकल कॉलेजक सर्जरी विभागाध्यक्ष हमर ज्येष्ठ भ्राता डा. शम्भु नाथ चौधरी रिटायर केलनि। तत्काल ओ 'मिथिलांचल विकास परिषद' नामक संस्था कायम केलनि। हमर भाइ साहब अपन समयक नामी सर्जन रहथि। हुनकर अर्जित प्रतिष्ठा काज देलकनि। रिटायर केलाक बादो इनकम टैक्स पे केनिहार तमाम डाक्टर, इन्जीनियर एवं अलग-अलग फैकल्टीक उच्च श्रेणीक लोक मिथिलांचल विकास परिषदक सदस्य बनि गेलाह। मिथिलांचलक विकास लेल सभटा रिटायर महानुभाव अपसियांत होअ लगलाह। ओ सभ मीटिंग करथि, एक दोसराक ओहिठाम जा क' बैसक करथि आ अवसर भेटला पर लम्बा-चौड़ा भाषण सेहो करथि। भाइसाहेबक उकसेलाक बाद हम सेहो एक-दू बेर परिषदक मीटिंग मे गेल रही। ओही मीटिंग मे उमा बाबू सँ भेट भेल रहए। उमा बाबू रिटायर नहि भेल रहथि। ओ कॉलेज मे मैथिली विभागक शिक्षक छला। हुनकर कइएक गोट मैथिली भाषा मे पुस्तक प्रकाशित भ' चुकल छलनि। डा. उमाकांत झा जी पी-एच.डी.क सम्मानित डिग्री प्राप्त एकटा सज्जन, सरल एवं अल्पभाषी लोक रहथि। परिषदक सभटा लिखा-पढ़ीक काज ओ चुपचाप रहि असगरे करैत छलाह। परिषदेक बैसार मे उमा बाबू सँ निकटता भेल रहए।

हम विजय कुमार मिश्र कँ मदन भाइक आवास पर ल' गेलियनि। हुनका आग्रह केलियनि जे अपने जे प्रश्न हमरा पुछने रही तकरा मदन भाइक समक्ष दोहराबी। मदन भाइ विजय बाबूक प्रश्नक जवाब नहि देलथिन। ओ हमरा दिस तकैत कहलनि—केदार भाइ, पछिला तीन-चारि बर्ख सँ हम-अहाँ नित्य एक ठाम बैसैत छी, गप्प-सप्प करैत छी। तथापि हम अहाँक लग 'ममता गाबए गीत' फिल्मक चर्चा नहि केलहुँ। अहाँक चोखायल घावक पपड़ी मे टकुआ भोंकैक इच्छा हमरा नहि भेल। आब जखन अहि फिल्मक चर्चा शुरू भैए गेलैए त' एकर सविस्तर समाचार अहाँ सुनिए लिअ। मोन होयत जे अपना सभहक फिल्म मे गीतकार रहथि रवीन्द्रनाथ ठाकुर। रवीन्द्रेजी वीर बहादुर बनलाह। कत' सँ ओ पूजी जुटौलनि से वएह जनताह। मुदा हमरा सँ लिखित अधिकार प्राप्त क' ओ 'ममता गाबए गीत' फिल्मक निर्माण पूरा केलनि। मिथिलांचलक सभठाम आ प्रवासी

मैथिलक निवासस्थान जेना कलकत्ता, जमशेदपुर, पटना इत्यादि स्थानक सिनेमा हॉल मे अहि फिल्मक सफलतापूर्वक प्रदर्शन करौलनि। बुझल नहि अछि मुदा सुनल अछि जे रवीन्द्रजी अहि फिल्मक माध्यमे चिक्कन नफा कमेलनि। अहि फिल्म मे हुनकर रचल गीत-संगीत कैँ मैथिल समुदाय पसिन्न केलक। रवीन्द्रजी उत्साहित भ' कइएक ठाम रवीन्द्र-महेन्द्र नाइट मनौलनि।

आब मदन भाइ विजय कुमार मिश्र दिस घुमैत हुनकर प्रश्नक जवाब मे कहलथिन–जतेक ठूसि-ठूसि अँटतैक तकर दोबड़, तेबड़ विद्वान मिथिला मे छथि। अहाँ पत्रकार छी, अहाँ कैँ त' सभ किछु बुझले होयत? मुदा तइयो सुनि लिअ। मैथिल विद्वान कैँ पुरस्कार देब' बला जतेक संस्था छैक तकरा सही-सही विद्वानक चुनाव मे प्राणान्तक पीड़ा होइत छैक। तैँ संस्थाक कर्णधार सभटा पुरस्कार अपने मे बाँटि लैत छथि। हम आ केदार भाइ जँ मैथिल समाज मे अपरिचित छी ताहि मे हर्जे की? हमरा सभ कैँ पुरस्कारक लोभ नहिए, तखन परिचित किएक होइ। पुरस्कारक लेल गोल मे के जैत? मैथिली प्रेम-रोग मे जे भोगलहुँ से भोगिलेलहुँ, आब की?

विजय कुमार मिश्र कनेकाल तक हतप्रभ भेल रहलाह। मुदा पत्रकार कैँ दया, ममता कमे होइत छैक। ओ खोधि-खोधि क' सभटा बात पुछैत रहलाह। फेर सभटा सामग्री कैँ लेख बना दरभंगा सँ प्रकाशित 'रचना' नामक त्रैमासिक पत्रिका 2004 ई.क अक्टूबर-दिसम्बर अंक मे हमर आ मदन भाइक फोटोक संग प्रकाशित करबौलनि।

फिल्म पूरा बनि गेलै तकर सूचना पाबि हमरा दुख नहि प्रसन्नता भेल छल। मुदा एकटा जिज्ञासा मोन मे रहिए गेल रहए। की हम आ मदन भाइ मैथिल समाज मे अपरिचित सँ परिचित भेलहुँ? जवाबक प्रतीक्षा मे मदन भाइ संसार त्यागि बिदा भ' गेला। मुदा हम एखन तक प्रतीक्षा मे जिविते घुमि-फिरि रहलहुँ अछि।

–समाप्त–

'ममता गाबए गीत' फिल्मक गीत

1.

अर्र बकरी घास खो, छोड़ गठुल्ला बाहर जो
लरू खुरू बिन केने बहिना, पेट भरल कि ककरो
उर चिड़ैया खोंता छोड़, चोंच खोलिके दाना खो
आँखि-पाँखि जकरा छै जगमे, भूख मरल कि कहियो
अर्र बकरी, गे बकरी घास खो...
करनी-धरनी किछु नहिं जिनकर, हुनकर जीवन भारी
घामे भीजल चाम जकर छै, आयल तकरे बारी
चल कुकुरबा टहल लगो, अंगना-घरक ममता छोड़
मनुख शिकार बनल अछि अपने, आब के कहतौ हियो-हियो
अर्र बकरी, गे बकरी घास खो...
पेट भरल पर दुनिया लागय, सूरदास के हरियर
प्रेमक हाथी बने फतिंगा भूखक जादू जड़गर
भूख-भूख कहि उठता क्यो, अपने पर खौंझेता क्यो
रे मुर्गा तो चढ़ गुलौरा, आलस के लतियौने जो
अर्र बकरी, गे बकरी घास खो...
शीतक गोटा चकमक शोभय, हरियर धरतीक साड़ी
प्रेमक फूल जगत भरि गमकै, गाबय भँवरा कारी
रे परबा तोँ अंडा फोर, ज्ञानक गेल्हक भरिदे कोर
कहै रे कौवा टाहि लगाकय, आन्हर भुन्नो पड़ो-पड़ो
अर्र बकरी, गे बकरी घास खो...

गीत : *रवीन्द्र नाथ ठाकुर*; **गायिका** : *गीता दत्त*

2.

भरि नगरी में सोर, बौआ मामी तोहर गोर
मामा चान सन...
नानी-नाना दूनू तोहर, खाली गाल बजाबय
बाबी तोहर गंगा सन छौ, बाब बनल हिमालय
मौसा तोहर चोर, मौसी मूँहक बड़जोर
मैया पान सन...
थैया-थैया चलू कन्हैया, जहिना भोर बसात
धरती मैया सब दुखहरनी, खसब ने कोनो बाट
बौआ मोती सन ई नोर, बीछत खाली आँचर मोर
अपने प्राण सन...
अपना कुल के लाल कमल तोँ, काकीक सुगा-मैना
एहि दुनिया के हँसी-खुशी आ बापक नेह-खिलौना
तो आशक चकमक भोर, हँसिदे खोलिके दूनू ठोर
फूटल धान सन...

गीत : *रवीन्द्र नाथ ठाकुर*; **गायिका** : *सुमन कल्याणपुर*

3.

चलल कहरिया से कोने नगरिया
जाइछ ककर दुलार...
धीरे-धीरे लय चल डोलिया कहरिया
ने डोलय पड़ल ओहार...
युग-युग जरत सिनेहक बाती
तैयो तहत अन्हार...
चलल कहरिया...
चल बरू जाह ने बिसरब तोहरा
फुजले रहत केबार
घर-घर घुमि-घुमि तोहर कथा ई
बहि-बहि कहत बयार...
चलल कहरिया...

गीत : *रवीन्द्र नाथ ठाकुर*; **गायक** : *श्याम शर्मा*

4.

तोहें जनु आह विदेश, हे माधव, तोहें जनु जाह विदेश
हमरो रंग-रभस लय जैबह, लैबह कोन संदेश
तोहें जनु जाह विदेश...
बनहिं गमन करू, होएत दोसर मति, बिसरि जाएब पहु मोरा
हीरा मणि माणिक एको नहिं मांगब, फेरि मांगब पहु तोरा
तोहें जनु जाह विदेश...
जखन गमन करु, नयन नीर भरु, देखहु ने भेल पहु तोरा
एकहिं नगर बसि, पहु भेल परबस, कैसे पुरत मन मारा
तोहें जनु जाह विदेश...
पहु संग कामिनि, बहुत सोहागिनि, चंद्र निकट जैसे तारा
भनइ विद्यापति, सूनू वर-यौवति, अपन हृदय धरु धीरा
तोहें जनु जाह विदेश...

गीत : *विद्यापति*; **गायिका** : *सुमन कल्याणपुर*

5.

मिथिला केर ई माँटि उड़ल अछि, छूबय गगनक छाती
भरि दुनिया केर मंगल हो, आ जन-जन गाबय प्राती
हाँ रे कह भैया रामे-राम हो भाइ, माता जे बिराजै मिथिले देश मे
नन्दन बन सन सुन्दर मिथिला, इन्द्रक धनुष समान
कालिदास आ मंडन के घर, बुद्ध बनल भगवान
चल भैया चलू ने, माता जे बिराजै मिथिले देश मे...
हम अयाची हम नहिं माँगी, मंगनी केर वरदान
जनकक आँगन लछमी नीपलि, हम तकरे संतान
चलू भैया चलू ने, माता जे बिराजै मिथिले देश मे...
अपना प्रेमे स्वर्गो जीतल, उगना बनल महेश
एखनौ कोकिल पंचम गाबय, विद्यापति के देश
चलू भैया चलू ने, माता जे बिराजै मिथिले देश मे...

गीत : *रवीन्द्र नाथ ठाकुर;* **गायक** : *महेन्द्र कपूर*